भाषास. नं. २४

श्रीकृष्णाय नमः ॥ श्रीगोपीजनवल्लभाय नमः ॥ श्रीमद्गुरुचर
णकमलेभ्यो नमः ॥ श्रीविठ्ठलेश्वराय नमः ॥ अथ श्रीगोकुल
नाथजीकृत रहस्यभावना लिख्यते ॥ अब श्रीस्वामिनीजीके चर
णारविंदमें पंद्रह चिन्ह हैं तिनको भाव लिख्यते ॥ प्रथम मंगलाच
रणके दोय श्लोक लिख्यते ॥ चिंतासंतानहंतारो यत्पादांबुजरेणवः
स्वीयानां तान्निजाचार्यान् प्रणमामि मुहुर्मुहुः ॥१॥ यदनुग्रहतो जं
तुः सर्वदुःखातिगो भवेत् तमहं सर्वदा वंदे श्रीमद्वल्लभनंदनं ॥२
अब चरणचिन्हको भाव कहत हे ॥ सो पुष्टिमारगमे जितनी क्रिया
हे ॥ सो सब श्रीस्वामिनीजीके भावते हे ॥ सो ताते मंगलाचरण गावे
अब प्रथम श्रीस्वामिनीजीके चरणकमलको नमस्कार करत
हे ॥ सो तिनकी उपमा देवेको समुद्र सो विमा देख्यो ॥ परंतु कछु पा
यो नाही ॥ पाछे श्रीस्वामिनीजीके चरणकमलको आश्रय प्रथम
कीयो हें ॥ सो तब उपमा देवेको हृदयमे स्फुर्ति भई ॥ जो जेसे श्री
ठाकुरजीके अधर बिंबप्रवार कहे ॥ सो जेसेई श्रीस्वामिनीजी
के चरणकमल हें ॥ सो ताते श्रीस्वामिनीजीके चरणकमलको
नमस्कार करत हे ॥ सो वे केसे चरणारविंद हें ॥ सो तिनमे अपन
वट बीछिया नूपुरपादि आभूषण हे ॥ सो चरणके संबंधते
आभूषणकी सोभा होत भई ॥ सो जेसेई परम सुंदर चरण हें
सो तिनमे दस अंगुरी हे ॥ सो तिनमे दस प्रकारके भक्त आइके आ
श्रय कियो हे ॥ सो ताते श्रीस्वामिनीजीके चरणकमल परमफल
रूप हें ॥ जो कोई चरणकमलको आश्रय कीयो हे ॥ सो तिनके पाछे
दस प्रकारकी भक्ति लागी डोलत हे ॥ सो ताते भावनामे श्रीस्वा
मिनीजीके चरणकमल प्रथम आश्रय कीयो चाहीए ॥ अब
आपके चरणकमलमे पंद्रह चिन्ह हे ॥ सो तिनको अपनी बुद्धि
के अनुसार भावसहित बरनन करत हे ॥ सो अब प्रथम रस

णचरणचिन्हवेतनकरतहे। सोताकोभावयहहे। जोजेसेश्रीठाकुर
जीकेवामअंगपुष्टिअष्टिहें। सोकाहेतेजोश्रीप्रभुजीकेवामभाग
श्रीस्वामिनीजीविराजतहे। सोतातेवामअंगपुष्टिहे। जोजेसेश्री
स्वामिनीजीकेदक्षिणभागश्रीप्रभुजीविराजतहे। तातेश्रीस्वामि
नीजीकेदक्षिणभागपुष्टिअष्टिहे। सोतातेश्रीस्वामिनीजीकेद
क्षिणचरणकेचिन्हनकोपहलेवरननकरतहे। अबदक्षिण
चरणमेपहलेछत्रकोचिन्हहे॥ सोताकोअभिप्रायहहेजो
श्रीगोवर्द्धननाथजीआपसगरेब्रजवतारादिसवनकेमाथेपरसव
नकेसिरोमणिसवनकेअवतारीभूतसवनकीरक्षाकर्ता। सो
ऐसेश्रीपूर्णपुरुषोत्तमहें। सोतिनकेऊपरछत्ररूपछाया
करी। सोश्रीस्वामिनीजीपुरुषोत्तमकीरक्षाकरतहे। सोताते
छत्रकोचिन्हचरणकमलमेधारियहजनायो। सोतातेश्रीपुरु
षोत्तमकोयाछत्रकेनीचेआयेतेसगरेसुखमिलतहें। जोसग
रेमनोरथपूर्णहोइगे। जोमांनहूपाविरहतापमेंयाहीछत्रकी
छायातेरक्षाहोतहें। सोतातेजोकोईयाछत्रचिन्हकोआश्रयक
रे। तिनकोविनायतनश्रीप्रभुजीकीप्राप्तिहोइगी। औरत्रिवि
धतापकीनिवर्तिहोइगी। जोश्रीप्रभुजीकेछत्रकेनीचेआप
तेआयरहेगे। सोतातेयाछत्राचिन्हकोआश्रयसदाकर्तव्यहे
अबदूसरोचिन्हकहेतहे॥ जोदूसरोचिन्हचक्रकोहे। जोचक्र
अत्यंततेजसीपुरुषहोई। सोतिनकेपासरहे। सोतातेश्री
गोवर्द्धननाथजीकेऊपरचक्रहे। सोध्वजाकेपासऔरश्री
प्रभुजीचक्रकोश्रीहस्तमेराषतहें। सोताकरिसगरेदेवताई
न्द्रादिकब्रह्मादिकशिवादिकआदिअसुरनागलोकके जोचं
द्रसूर्यअग्निवयारितथासमुद्रसवभयकरिकेआज्ञानुसा
रणअदिनचलेजातहे। सोतेसेईश्रीस्वामिनीजीअपनेचर

णकमलमेचक्रराखिकेश्रीठाकुरजीकोअपनेवसकरिलीनेहे। सोसगरी
स्वामिनीनकोवसकीये। तातेश्रीस्वामिनीजीकेसंबंधबिनाकहूंविहरन
होहें। औरअवतारीराजाअंबरीषपरदुर्वासाऋषीनेकोपकीयो। सो
तवराजाअंबरीसकीरक्षाश्रीप्रभुजीकीरोचक्रते। सोतेसेईमानादि
कहरिनेप्रभुमानमनायवेकेसमेश्रीस्वामिनीजीकेचरणकमलमेजे
चक्रहे। सोतिनकोनमनकरतहें। सोतवचक्रश्रीस्वामिनीजीकेमन
कोपेरतहें। सोलीलाकेसमयाविरहदुःखतेश्रीस्वामिनीजीअपनेच
क्रचिन्हकरिकरतहें। सोताहीतेविरहवतमांनछोडिकेंप्रभुतसोप
रस्परमिलिप्रीतिहोतहें। सोताहीतेजोभक्तश्रीस्वामिनीजीकेचरण
संबंधीचक्रचिन्हकोआश्रयकरेते। सोचक्रचिन्हकोचितवनकरे
तेभावतेजवढे। औरभावदभावउत्पन्नहोय।२॥ अबतीसरोचिन्ह
ध्वजाकोहे सोताकोभावयहहे॥ जोश्रीगोवर्द्धनधरत्रलोकीजीतिके
ध्वजाबांधीहे। सोतातेमनमेवडोअहंकारभयो। सोतवश्रीस्वामि
नीजीआपअपनेमासवलतेश्रीगोवर्द्धनधरकोजीतिकेंअपने
चरणारविंदमेध्वजाकोचिन्हधारणकीयो। सोताकरिकेश्रीठाकुर
जीकोयहजनायो। जोध्वजातुम्हारेमस्तकऊपरहें। सोहमारेचरण
मेहे। सोतातेश्रीगोवर्द्धनधरकीध्वजाकोजेसेआश्रयरहे। तेकाल
कर्ममायाकेगुणतथायमदंड। तथाभक्तिरसकीअंतरायमेंकछु
नलगे। तेसेईश्रीस्वामिनीजीकेचरणकमलकेध्वजाकेचिन्हके
चितवनतेश्रीठाकुरजीकेनिकुंजलीलाकीप्राप्तिमेकोईकीसा
मर्थनहीहें। जोप्रतिबंधकरिसके। औरकीकहा। जोश्रीस्वामिनी
जीकेआश्रयतेश्रीगोवर्द्धनधरहूप्रतिबंधनाहीकरिसकें। औरउ
हभक्तकेमनकेमनोरथमेंसहायअनुकूलहोयकेंजीवनकेमनोर्थ
पूरणहोतहे। सोकाहेतेजोश्रीस्वामिनीजीकीचरणकीध्वजाके
नीचेसगरीस्वामिनीजीहें। सोअपनेमनमेभावकरिकेरहीहेंसो

ताहीतेसगरीश्रीस्वांमिनीजीकोश्रीठाकुरजीमिलिकेविरहतापदूरिक
रतहें॥ तहांश्रीस्वांमिनीजीकेचरणकीध्वजातेतहांआश्रयतेसवी
परउष्टिमारगकोफलसोताकीप्राप्तिनिश्चैहोय॥ सोयामेसंदेहनांहीहे
अवचतुर्थचिंन्हकमलकोहे॥ सोताकोभावयहहे॥ जोसृष्टिकेआदि
समयमेक्षीरसागरमेंश्रीप्रभुजीशेषशैयापरपोढेहें॥ सोतहांप्रभु
नकीनाभितेकमलप्रगटभयोहे॥ सोवाकमलतेब्रह्माप्रगटहोतभयो
सोतवश्रीप्रभुजीआपअपनीइछातेब्रह्माजीद्वाराश्रष्टिप्रगटकी
ये॥ तातेअनेकनदीतथापर्वतवोसहभुवनकीरचनादिखाई सो
तेसेहीयहांश्रीस्वांमिनीजीआपअपनेचरणकमलमेंकमलकोचि
न्हराषिकेंअपनीश्रष्टिरसरूपप्रगटकीये॥ जोसमस्तव्रजवृंदावन
तथांउपवननिकुंजश्रीयमुनाजीतथागिरराजतथांअनेकपशु
पक्षीतथांश्रीस्वांमिनीजीकेजूथतथांसषी॥ जोअनेकभावात्मक
रसात्मकअंजोकिकश्रष्टिप्रगटकीयेहें॥ सोयहकहियहजताये
जोएकश्रीस्वांमिनीजीकेचरणकमलकेचिंन्हकोचितवनकरे तोसम
स्तव्रजवृंदावनश्रीयमुनाजीश्रीगिरराजतथांव्रजकीलीलानिकुं
जादिककोश्रीठाकुरजीसहितहृदयमेंआवें॥ जोश्रीप्रभुजीअ
पनेरसकोदानअसंनहोयकृपाकरिकरे॥ सोताहीतेयहव्रजकमला
कारहें॥ जोश्रीठाकुरजीकोअत्यंतप्राणहूतेप्रीयहे॥ सोयामेंरासर
लीलाप्रभुननेकरी॥ सोतवश्रीयसोदाजीसोप्रभुबंधाये॥ सोऊ
खलसोंसकेकाष्टसोबांधे॥ सोताकरियहभावजताये जोयेव्रजमें
सकेकाष्टसोबंधयोहे॥ सोहरेकहांसिकतथांव्रजभक्तनकेवसहो
ऊयाकेकहाकहेनो॥ तामेव्रजमेमोरसुवागायपशुपक्षीजितावन
व्रजसंबंधीसवश्रीठाकुरजीकेप्राणनतेअधिकप्रीयहें॥ तातेश्री
स्वांमिनीजीकेचरणकमलमेंकमलकेचिंन्हतेरसरूपमयोहि
प्रगटभयो॥ याप्रकारश्रीस्वांमिनीजीअपनेचरणारविंदमेक

मलराषिकेंश्रीठाकुरजीकोयहजतावतहे॥ जोतुमव्रजचोरासीकोसमेंअ
नुभवकहालोकरोगे॥ तातेअवमेंअपनेचरणकमलमेंसगरीव्रज
कीलीलाराषीहें॥ सोजोपदार्थकीइछाहोई॥ सोयाकमलमेसगरे
हे॥ तवश्रीठाकुरजीश्रीस्वांमिनीजीकेचरणकमलमेंजोचिंन्हहें
तातेसगरीव्रजकीलीलाकोअनुभवकरीये॥ तातेश्रीस्वांमिनीजीके
चरणकमलमेंजोचिन्हहे॥ तातेसगरीव्रजकीलीलाकोअनुभव
कीये॥ तातेश्रीस्वांमिनीजीकेचरणकमलमेंमांडोंधायस्योहे॥ जो
अनेकभावसगरोसोमांनमनावतहे॥ तातेश्रीस्वांमिनीजीकेच
रणमेंकमलहे॥ सोताकोचिन्ह॥ सोताकोआश्रयकरिकेरहें सोता
कोसगरीव्रजचोरासीकोससंबंधीसगरीलीलाकोअनुभवनिश्चें
करिकेहोई॥ सोकहेतहें॥ यामेसंदेहनांहीहें॥ अवपांचमोचिन्हजवको
है॥ सोकहेतहे॥ जोनवरात्रमेनवप्रकारकेसाधनमलकहे॥ सोनवरात्रि
तांईदेवीपूजनकेमिसकरिकेंअपनेअपनेभावकोअंगीकारवागा
सांमिग्रीअंगीकारकराई॥ सोदसेराकेदिनदसजवाराश्रीठाकु
रजीकेमस्तकपरधरियहजताये॥ जोश्रीस्वांमिनीजीकेचरणक
मलमेजवहें॥ सोताहीभावतेजवाराधरावतहें॥ तातेयहभावप्र
गटभयो॥ जोइसप्रकारकीभक्तिचरणमेजवकेतेप्रगटभईहे॥ जोश्री
स्वांमिनीजीकेचरणकमलमेंजवहें॥ सोताहीभावतेजवाराधरा
वतहें॥ इसअंगलीहें॥ सोताकेभावतेजवारादसोअंगलीलापश्री
मस्तकपरधरिकेंश्रीठाकुरजीकेभवधामक्ति॥ औरपैमलदसराग
भक्तिअपनीनिकुंजसंबंधीउष्टिरसरूपदईहै॥ तातेश्रीठाकुरजीप्र
सन्नहोयकेंजवाराअपनेमस्तकपरधरतहें॥ सोजवकोचिन्हयाते
हें॥ जोयहजवसगरेअन्नकोअग्धदेविकयहहें॥ तातेजवते
होमकरतहें॥ सोताकरियहजानतो॥ जोजवकेभीतरचामरदार
गहसवपदार्थहें॥ तातेश्रीस्वांमिनीजीअपनेचरणकमलमेंज

भव. ३

वकोचिन्हधरियहजतारे।।जोसगरीसांमिनीजवतोसिद्धिहे तातें
श्रीगोवर्द्धनधरसवरसकेभोक्ताहें।। तातेजवकेचिन्हकोचिंतवन
जोहृदयमेकरतहें ।।सोतिनकोयहलोकसंवंधीखानपांनआदि
करिकेअत्यंतसुषपावतहें।।औरपरलोकमेश्रीठाकुरजीकेनि
कटसंवंधीप्रेमलक्षणाभक्तिताकीप्राप्तिहोई।।श्रीठाकुरजीकोउ
हमतेअत्यंतप्रीयहें।। काहेतेजोजवतेश्रीठाकुरजीकोभोगसिद्धि
भयो।।सोतातेश्रीस्वांमिनीजीकेचरणारविंदकोवारंवारपलोटतहे
रागगोरी।। चांपतचरणमोहनलाल।।पलिगपोढीकुमरिराधेनागरी
नववाल।।१।।कवहूकरगहिनेनमिलावतकवहूलावतभाल।।नंद
दाससप्रभुछविनिहारतप्रीतिकेप्रतिपाल।।२।।सोयाप्रकारश्रीठा
कुरजीकोमनउन्मायरह्योहें।।तातेजवकोचिंन्हपरमरसरूप
जोनिमगवछेअपनेहृदयमेधारणाकरे।।अववछरोचिंन्हअंकुश
कोहेसोताकोभावकहेतहे।। जोश्रीगोवर्द्धननांथजीनिरंकुशहस्ती
हें।।सोआपदोनवंतहोईसमस्तव्रजमेविहारकरतहें।।जोश्री
नंदरायजीश्रीयसोदाजीसषाग्वालगायपसुपक्षीव्रजनदी
श्रीयमुनाजीश्रीगिरराजचैतन्यअचैतन्यआदिसवनकोमन
अपनीसुंदरतातेहरेहें।।पाछेव्रजकीसगरीगोपीनकोधीरज
लज्जागृहकार्यसवछुटिगयो।।सोताकरिकेश्रीठाकुरजीउन्मत
हस्तीकीनांईअत्यंतगर्ववांनहोतभयो।।सोतवश्रीस्वांमिनी
जीनेजांनी।।जोश्रीठाकुरजीसमस्तव्रजभक्तनकोजीतिकेंअत्यं
तगर्ववंतहोतभयो।।सोतवश्रीस्वांमिनीजीअंकुशकोचिन्हधरि
केंअतिनिरंकुशश्रीठाकुरजीउनमतगजराजकोवसकरतभ
ए काहेते।।जोहस्तीअंकुशतेवसहोतहे।।सोयाभावतेअंकुश
कोचिन्हचरणमेधारणाकरियहजताए।।जोसगरेव्रजकोवस
करिउनमत्तभयोहो।। परंतुउहांतोचरणारविंदमेअंकुसहे।।सोता

केनीचेसदांरहोगे।।सोयाप्रकारअंकुशधरिश्रीस्वांमिनीजीअपनेसौ
भाग्यतेप्रभुजीकोअपनेवसकरतभई।।तातेअंकुसकोचिंतवनया
पुष्टिमारगमेंभगवदीयनकोचिंतनकरे।।सोतिनकेहृदयमेवित्तसा
धनतेआयरहें।।जोश्रीस्वांमिनीजीकेचरणचिंन्हअंकुशविनऔ
रकोईउपायनहींहे।।श्रीठाकुरजीकेवसकरिवेको।।तातेअंकुसक
कोचितवनकरिजीवकोमनजोअत्यंतदुष्टअभिमानगर्वहेसो
गलितहोयजाय।।जोसुंदरभगवदीयहोय।।औरश्रीप्रभुनकीलौ
लामेमनलगे।।सोतातेश्रीस्वांमिनीजीकेचरणसंवंधीअंकुश
कोचिंन्हहे।।सोताअंकुसकोचिंतनसमरणनिश्चयकर्तव्यहें।।अव
साततोचिन्हउर्द्धरेखाकोहे सोताकोभावधरतनकरतहें।। जोलें
वीव्रजकेआकारहें।।सोयातेश्रीगोवर्द्धनजोहें।।सोसगरेव्रजके
सुषदेनअर्थप्रगटेहें।।सोताहिदिननांईइंद्रकेकोपतेजलवृष्टि
तेरक्षाकरी।।औरसयनकीसांमिग्रीआरोगे।।औरश्रीयमुना
जीहूसगरेव्रजभक्तनकोसुखदेनअर्थप्रगटभई।।सोश्रीगिरिरा
जऊंचेवेहें।।सोतेसेउर्द्धरेखाऊंचीहें।।सोयापुष्टिमारगमेंजनसे
नीवतहें।।सोश्रीस्वांमिनीजीकेचरणमेचिंन्हहें।।तातेजोकोईपु
ष्टिमारगकेरसकोअनुभवकीयोचाहे।।तोश्रीस्वांमिनीजीके
चरणचिन्हउर्द्धरेखाकोस्मरणकरेतोकवहूमारगतेगिरेनांहीसो
सदांउर्द्धगतिहोय।।नपांउर्द्धरेखाकीसोभादेषिकेश्रीठाकुरजी
सिरकेतिलककोयाहीभावसोधारणाकरतहें।।तातेपुष्टिमारग
मेतिलकवैस्नवकेसारमेकरिकुंमकुमकोतिलकश्रीस्वांमिनीजी
केचरणवतकरतोउर्द्धरेखाकोस्मरणतिलककरतरहेनो।।तो
कवहूवैस्नवपुष्टिमारगतेगिरेनाही।।औरदिनदिनवाकीउर्द्धगति
होई।।प्रभुसदांप्रसंनरहे।।सोयाप्रकारश्रीस्वांमिनीजीकेदक्षण
चरणमेसातचिन्हकहेहे।।सोताकोभावकहेतहें।।जोदक्षणचर

तापुष्टि हें। सो सानचिंन्ह धारिय हजनतारे। पाछे अधर्मसंयुक्त श्रीठाकुरजी
धर्मी हें। ऐश्वर्य। वीर्य। यश। श्री। ज्ञान। वैराग्य। यह षट् धर्म सानमे धर्मी
सो ऐसे पुरुषोत्तम सहांई हरास्वरणके आश्रित रहत हें। ताते इस रा
चरणको सानचिन्ह युक्त चिंतन करें। सो तिनके भाग्य को पार नांही
जो निश्चे वाको मारग के रस की प्राप्ति होइगी। सो या भाव ते इस राध
रणमे सानचिन्ह हे। अब वाम चरणके चिंन्ह वर्नन करत हें। अब
प्रथम चिन्ह गदाको हे। सो ताको भाव कहेत हे। जो गदाको तेके
श्रीठाकुरजी सगरी व्रजलोकोंको जीतिके अपने वस करत भये। ता
ते श्री स्वांमिनीजी श्रीठाकुरजी को गदाको जीतिके अपने वसर
णमे धारण कीये। सो तहां श्रीस्वांमिनीजी को विरह श्रीठाकुरजी
को सह्यो नांही जात हें। सो ताते श्रीस्वांमिनीजी की चरणचिंन्ह की गदा
श्रीठाकुरजी अपने श्रीहस्त मे लेंके वारं वार अवलोकन करत हें
और मन मे कहत हे। जो धन्य यह गदा हें। या को चिन्ह हे जो मेरा
रवे अजितन को या गदाने जीत्यो हें। ताते परस भये नथा श्रीस्वां
मिनीजी के कुंजके अनुसार गदा हें। ताते श्रीठाकुरजी अष्टप्रहर
अपने श्रीहस्तमे गदा लेके वारंवार भावसहित स्पर्श करत हे
जो अपने हृदय सो लगावत हें। तथां गदा युद्ध श्रीठाकुरजी सो
श्रीस्वांमिनीजीने कीयो। तब श्रीठाकुरजी ने श्रीस्वांमिनीजी सो
प्रार्थना करी। जो तुम अपनी गदा के बल सों मो को जीत्यो सो म
लो भई। परंतु अब या ही प्रकार सगरी गोपीनको जीतिके वस
करोगी। तब तुम केसी करोगी। तब श्रीस्वांमिनीजीने अपने चर
णचिंन्ह की गदा श्रीठाकुरजी को दीनी काहेते। और कहे जो तुम
या करिके सगरे व्रजभक्तन को जीत्यो। तब श्रीठाकुरजी चरणकी
गदा ले सगरे व्रजभक्तन को जीति राखे। ताते गदा के चिंन्ह को जो
जो भाव करिके चिंतन करें। सो तिनको स्वरूपानंद को दान होय। अब

वांम चरणमे इसरो चिन्ह कमलको हे। ताको भाव कहेत हे। जो श्रीठाकु
रजीके श्री अंगमे नव कमल हें। जो दोय चरणकमल। २। दोय हस्तक
मल। २। दोय नेत्रकमल। २। एक नाभिकमल। १। एक हृदयकमल १
एक मुखकमल। १। सो ऐसे नव कमल हें। सो तिन कमलके सरको
अनुभव अनेक गोपीजन करत भई। सो पंचाध्याई मे कहेत हें
सो तब श्रीठाकुरजी अंतरध्यान होइ गये। सो तब कोई गोपी चरण
कमल को आश्रय करि चरणसो लपटी। जो कोईने हस्तकमल
को आश्रय कीयो। कोईने नाभिकमल को आश्रय कीयो कोई
ने मुखकमल को आश्रय कीयो। कोईने नेत्रकमल को आश्रय कीयो
परंतु काहू को प्राप्ति न भई। सो तब सगरी गोपीनने श्रीस्वांमि
नीजी सो प्रार्थना करी। जो हम अनेक उपाय कीये। परंतु रंचक
हू रस की प्राप्ति न भई। ताते हम तुम्हारी सरण हें। जो हम को कृ
पा करिके स्वरूपानंद को अनुभव करावो। सो तब श्रीस्वांमि
नीजीने अपने चरणकमल को चिन्ह हे। सो ताको आश्रय बता
ये। सो तब सगरी गोपीनको श्रीठाकुरजी श्रीस्वांमिनीजी के संबं
धते रसदान करत भये। ताते सगरे व्रजमे श्रीस्वांमिनीजी के
भावसंबंधते रसदान करत भयें। की प्राप्ति हें। और श्रीस्वांमि
नीजी के चरणचिंन्ह हें। सो अत्यंत सीतल हें। सो श्रीगोवर्द्धनधर
को विरहताप के हरता हें। अब कमल जल मे होत हें। सो श्रीस्वांमि
नीजी के चरणकमल में सगरो प्रेमजल सिमिटि के भरि रह्यो हें
ताते जो कोई श्रीस्वांमिनीजी के चरणकमल को आश्रय करे। सो
तिनके हृदय मे प्रेमजल की प्राप्ति होइ। ताते पुष्टिमारग मे श्रीस्वा
मिनीजी की कृपा ते प्रेमजल मिले। सो तहां श्रीस्वांमिनीजी कम
लया ते धरें। जो श्रीस्वांमिनीजी श्रीठाकुरजी को चरणसेवा करे
तब चरणकमल के परसते सर्व रस को अनुभव श्रीठाकुरजी

कोहोई॥ सोताहीभावसो श्रीठाकुरजीअपने हस्तमेंकमलकोराखेहे
नलीरहेरहें॥ सोताकमलके भाव ने श्रीठाकुरजी स्वांमिनीजीकेपरस
कोअनुभवकरतहे॥ जोकमलहे॥ तामेश्रीलक्ष्मीजीकोवासहे॥ जो
कमलजालक्ष्मीजीकोनामहे॥ सो नातेपुष्टिमारगमेअगदेदे
विकलक्ष्मीरूपश्रीस्वांमिनीजीहें॥ सोश्रीउधोधनीजीकेमंग
लाचरनमें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुआपुकहेहें॥ नमामि हृदये
शेषेलीलाक्षीराब्धिसायनं॥ लक्ष्मीसहस्रलीलाभिः सेव्यमान
कलानिधि॥ सोयाप्रकार श्रीनारायणपासलक्ष्मीहें सोतिनस
वनमेमुख्यश्रीस्वांमिनीजीहें॥ तातेश्रीलक्ष्मीजी श्रीस्वांमिनीजीके
चरणकमलकोआश्रयकरिव्रजमेरहेतभई॥ औरकमलके
ऊपरभ्रमरअपारप्रेमसोवंधेजातहें॥ सो नेसेयहांश्रीस्वांमिनी
जीकेचरणारविंदकोरसकोलोभीमनअवलुब्धकेपरवस
होयरहेहें॥ सोइत्यादिभावकमलकोहृदयमेविचारतो॥ अवध्व
जचरणमेजोसरोजचिह्नरथ कोहे॥ ताकोभावकहेतहें॥ जोवड़ोप्र
तापीहोई सोमहारथीकहावे॥ जोजेसेभीषमपितामहअरप्रथ
मअपनीप्रतिज्ञाछोड़िरामरूलेकेदये॥ सोयह प्रतापकरराम
सारकेअर्जुनकोरथ तापरमभगवानोकीकोध्यारलेकेवेठे
औरऊपरध्वजामेश्रीहनुमानजीकोस्थापनकरे॥ सोतार
थकोकर्णनेवांणनकरिपाछेहटायो॥ सोतव श्रीठाकुरजी
नेकर्णकीसराहनाकरी॥ सोतवअर्जुननेरिसकरिपांचवीके
वांणमारयों सोकर्णकेरथकोपेयाधरतीमेंगडिगयो॥ तव
कर्णराकवांणसोधरतीसाहितरथऊपरनिकासिलीयो॥ अ
सेभीष्मकर्णादिकर्णकोप्रभुअर्जुनद्वाराआपजीते॥ सोता
करिश्रीठाकुरजीमहारथीकहावतभये॥ तेसेईयहांपुष्टिमार
गमेसाक्षात्पूरणपुरुषोत्तमव्रजभक्तनकोसुरतिरणमेंको

टानकोटिस्वांमिनीनकोजीतेहें॥ सोआपमहारथीकहावतभये॥ सोतव
श्रीस्वांमिनीजीकेसंगरासविलासकरतभये॥ सोतवश्रीस्वांमिनी
जीसमांनयहानिनेभयो॥ औरविहारमेहारतभये॥ तवश्रीस्वांमि
नीजीमहारथीश्रीठाकुरजीतिनकोजीतकेंअपनेचरननमेरथको
चिन्हधरतभई॥ जोमतिकहूं श्रीठाकुरजीकोफेरऐश्वर्यदैन्यता
नहोई॥ सोतवरथकोचिन्हदेखे॥ सोताहीसमयदैन्यताहोई॥ ताते
श्रीस्वांमिनीजीसमांनमहारथीकोईनांहीहें॥ सोयाभावतेरथको
चिन्हहे॥ अवश्रीस्वांमिनीजीकेवामचरणमेचोथाचिन्हसक्तिकोहे॥ ता
कोवरननकरतहे॥ सोताकोवरछीकहेतहें जोवड़ेवड़ेजोधाकाहू
केवसनहोय॥ सोसक्तिकेवसहोई॥ जसमराजोसेसरूपसाऊसकी
सोवसमरेमूर्छितभये॥ तेसेयहांश्रीगोवर्द्धनधरमहायोधानके
योधाहें॥ तातेश्रीस्वांमिनीजीकेलीलासंवंधमेद्वादसपकहेंश्रीस्वां
मिनीजीकीआज्ञामेनतपरहें॥ उछेदका॥ १॥ विछेपकाररू॥ २॥ योगमाया
३॥ कात्यायनीदेवी॥ ४॥ वृंदादेवी॥ ५॥ श्रीचंद्रावलीदेवी॥ ६॥ संकेतदे
वी॥ ७॥ ललितादेवी॥ ८॥ मिमतादेवी॥ ९॥ नोवारीदेवी॥ १०॥ वोवारीदेवी
११॥ आनंदीदेवी॥ १२॥ रस्याम्रदेवी॥ लीलासंमिग्नीदेवीमेंसहायत
पयेद्वादससक्ति सोचररणारविंदमेसक्तिचिन्हतेप्रगटभईहें॥ उछे
दकासोरसकोआछादनकरिरहें॥ रहस्यलीलाकोजांनप्रेमको
नहोई॥ विछेपकाऔरकोरहस्यलीलामेंविसेपावितानजोस्तानाअ
नरायकरें॥ जोगमायारासादिकलीलासंमिग्नीसिद्धिकरें॥ का
त्यायनीदेवीसाधनभक्तिकेभावकोसिद्धिकरें॥ वृंदादेवीवृंदावनमें
सकलरिनकीसंमिग्नीसिद्धिकरें॥ श्रीचंद्रावलीजीप्रभुपास
सोरमसकरावें॥ संकेतदेवीव्रजभक्तन कोश्रीठाकुरजीकोपध
रायकेसंकेतकरावें॥ ललिताहेवीमानादिकमनायवेजेमधपहें
होयतनकेवीचमेविमलादेवीश्रृंगारसगरेभक्तनकोकरे॥ नेवारी

रीतौ भवन रस वार्ता सुनावे ॥ चौकरी चाख्यो और के जूथपति के आज्ञा उस
रसेवा करे ॥ आनंद दी देवी सबन को बेरहना पसो कुञ्ज आनंद देइ ॥ औ
र इत्यादि सक्ति श्रीस्वांमिनीजी प्रगट करिके श्रीठाकुरजी को अपने व
स करन भई ॥ सो एक एक सषी के सब श्रीठाकुरजी हो न भये ॥ श्रीस्वा
मिनीजी के प्रसंन करिवे को यह जताये ॥ जो मे तुम्हारी सषी के वस
है सो तुम्हारे वस हो ॥ उपाय मे कहा करूं ॥ न थांस षीन के ऊपर श्रीठा
कुरजी प्रसंन देखे ॥ और आपनी सेवा मे तत्पर देखे ॥ सो तब श्रीस्वा
मिनीजी सषीन को आधिदैविक रूप सक्ति रूप अपने चरणमें
चिन्ह करि धारण कीये ॥ ताते श्रीठाकुरजी श्रीस्वांमिनीजी के च
रण कमल चांपत हैं ॥ सो तब सगरी सषीन को सक्तिन को परवस
करिकें सुष देत हैं ॥ सो ताते सक्ति को स्पर्श चिन्ह की प्रीति विशेष करिके क
रीये ॥ तो सगरी सषी प्रसंन होई ॥ सगरी लीला के रस को अनुभव
होई ॥ श्रीगोवर्द्धनधर प्रसंन होई ॥ अपने स्वरूपानंद को अनुभ
व करावे ॥ इत्यादिक भावसक्ति को विचारनो ॥ अब श्रीस्वांमिनीजी
के वांम चरणमे पांचमो चिन्ह मीन को है सो ताको वरनन करत हैं ॥
जो मच्छ अत्यंत चंचल हैं ॥ जल ही मे रहत है सो तेसेई श्रीगोव
र्द्धनधर अत्यंत चंचल हैं ॥ सो तिन की चंचलता जीतिकें ॥ न
श्रीगोवर्द्धनधर के नेत्र चंचल हैं ॥ सकल व्रज के नेत्र कटाक्ष क
रि सबन को मोह लीयो ॥ सो ता करिके सगरे व्रज को रसभवन के
रूप मे तेरे खेंचि के श्रीठाकुरजी अपने नेन मीन मे राषत भये
तब श्रीस्वांमिनीजी गोवर्द्धनधर के नेन मीन को जीतिकें अपने
चरणकमल में सगरो प्रेमरस और मीन को चिन्ह धारण की
ये ॥ सो ता करिके यह जनाये ॥ जो श्रीगोवर्द्धनधर को रसआनंद है
सो श्रीस्वांमिनीजी के चरणमे मीन है ताके आश्रय मिले स्वरूपानं
द को अनुभव होई ॥ ताते भगवदीयन को है ॥ भाव मन राधिका के

चरण ॥ सुभग सीतल परम कोमल कनक के से वरन ॥ १ ॥ नष चंद्र को
अनूप राजत विविध सोभा वरन ॥ कुंतितन उरु कुंजा विहरत पर
म को जुकरन ॥ २ ॥ रसिक वर मन मोद कारी विरह सागर तर
न ॥ विविस परमानंद छिनु छिनु स्यांम जाकी सरण ॥ ३ ॥ या भावते
राक सरण श्रीस्वांमिनीजी के चरणारविंद को श्रीठाकुरजी छोड़
त नांही ॥ रसिक सो रस बिना के से रहे ॥ रस सगरो मीन के चिन्ह के
पास हैं ॥ अपवा जल के स्वाद को मच्छ ही जानत हैं ॥ तेसेई श्रीस्वां
मिनीजी के चरण चिन्ह के स्वाद ही को एक श्रीगोवर्द्धनधर ही
जानत हैं ॥ ताते श्रीस्वांमिनीजी के चरण चिन्ह अवरण मे मकराकृ
त कुंडल धारण करत ही मसे ॥ अपने कपोलन के निकट ता
ते मच्छ को चिन्ह है ५ ॥ अब श्रीस्वांमिनीजी के वांम चरण में वेदी
को चिन्ह है सो ताको भाव वरनन करत है ॥ प्रथम जल मे ते भग
वान को प्रागट्य है ते वेद मे जग्य प्रसिद्ध हैं ॥ काहे ते मथुरा जाने की पा
डवन को श्रीठाकुरजी ने कराये ॥ न इस राजसूय के बड़े बड़े ने से
म यज्ञ कीये ॥ सो ताते सो मयज्ञ को कहा है ॥ यह मर्यादा यज्ञ और पु
ष्टिमारग में श्रीठाकुरजी ने श्रीगोवर्द्धन के मिस जज्ञ कराय के
सगरे व्रजभक्तन की सामग्री आरोगे ॥ सो ताते यह पुष्टिमारग
मे अन्नकूट करत हैं ॥ ताते मर्यादा मे जज्ञ करि भगवान को प्रा
प्ति होत है ॥ यज्ञ के भीतर भगवान विराजत हैं ॥ तैसे यह श्रीस्वांम
नीजी आधिदैविक जज्ञ की वेदी रूप है ॥ अपने चरणारविंद मे
धरिकें श्रीगोवर्द्धनजी को राषे ॥ सो ताहीते वेदी चिन्ह को अ
नुसार होत हैं ॥ सो तहां अनेक प्रकार की रहस्य लीला होत हैं
ताते जैसे मर्यादा पुरुषोत्तम यज्ञ बिना कबहू न रहें ॥ तेसे श्री
गोवर्द्धनधर की स्वांमिनीजी विना कबहू न रहे ॥ ताते श्रीस्वांमि
नीजी वेदी चरण कमल मे धरि यह जताये ॥ जो यह अलौकिक

रसरूपस्निग्धारूपहे॥ यहांवेठेसगरेमनोरथनिकुंजलीलारहस्यकोअ
नुभवकीयोकरो॥ तातेपुष्टिमारगीयवैस्नवकोदेहीकोस्पर्शकरे॥ सोके
दानकोटिजज्ञकरिशुद्धभयोसिन्धारूपवेदीदेषिकेंश्रीगोवर्द्धनधरआ
पनेवाकेहृदयमेंआवे॥ तातेवेदीअलौकिकसिन्धासिंहासनापलना
सामामांचीचोकीइत्यादिकसववेदीमेंप्रगटभयेहे॥ तातेपहभाव
नाभगवदीयकेहृदयमेंभावनीयहे॥ सोनातेवाहिरप्रकासनांही
कीये॥ अबश्रीस्वांमिनीजीकेवांमचरणमेंससमोकुंडलकोचिन्हहे
सोनाकोभाववरननकरनहे॥ जोप्रथमश्रीठाकुरजीकीयहरीति
हती॥ मर्यादामार्गकोसाधनकरायअपनेकुंडलतेसायुज्यजोगदे
ते॥ सोनाकरिकेजीवनकीमुक्तिहोती॥ तवश्रीस्वांकुंरजोयहजोने पिनी
जोश्रीठाकुरजीकोमुक्तिमारगहतो॥ सोतवश्रीस्वांमिनीजीविचा
रेजोश्रीठाकुरजीकोस्वभावमुक्तिदेनकोपरयोहे॥ सोआछेनांहीहे
मुक्तिमेंश्रीवृंदावनरसलीलाकोअनुभवनांहीहे॥ तातेपरमफ
लरूपव्रजकीरसलीलाहे॥ सोतवश्रीस्वांमिनीजीनेअपनेप्रेम
संयुक्तकटाक्षकरिकेंश्रीगोवर्द्धनधरकोवसकरिलीने॥ पाछेकुं
डललेकेअपनेचरणकमलमेंधारणकीये॥ सोताहीआकार
कुंडलकरिदीने॥ औरपाछेचरणारविंदकीप्रसादीश्रीठाकुर
जीकोदीये॥ औरकहेजोअवयेकुंडलपहरो॥ अवयेकुंडलर
सरूपभये॥ अवइनकुंडलकोआश्रयस्पर्शकरेतोभक्तिरस
रूपसरूपानंदकोदांनहोई॥ सोएकश्रीगोवर्द्धनधरसाक्षा
तिनकेकुंडलस्वरूपहवोनमकेजोपुष्टिमार्गकेयेसेव्यरूप
हें॥ औरअंसकलाअवतारकेकुंडलसायुज्यजोगहे॥ औरनर्क
सुरइंद्रलोककोजीतिकेइंद्रकीमाताकेकुंडलनरकासुरलेगयो
सोतवइंद्रनेश्रीठाकुरजीसोप्रार्थनाकरी॥ तवश्रीठाकुरजी
सुरसैन्यऔरनरकासुरकोमारिकेंजीतिकेकुंडललाये सोस

वराज्यमेंसोदरीकोलेपहराये॥ सोतवश्रीरामचंद्रजीसेतवांधिलं
कामेंपारजाइउतरे॥ सोतवरावनराजकोअपनीसभामेंनिर्भयप
पसरानकोन्त्यकराये॥ सोतवश्रीरामचंद्रजीवंणमारिरावनरा
नथामेंसोदरीकेमुकटकुंडलगिरायदीये॥ जोहमारेआगेकुंडलप
हरोगे॥ तेसेईयहांश्रीगोवर्द्धनधरसवअवतारकेअवतारीअ
नंतमेंप्रगटभये॥ सोअपनेरूपसौंदर्यकरिवलकरिकेंसवरे
व्रजभक्तनकोवसकरिकुंडलधारणकीये॥ सोतेसेईयहांश्री
स्वांमिनीजीश्रीगोवर्द्धनधरकोवसकरिकेंअपनेनेत्रकटाक्ष
सोजीतिकेकुंडलगिरायो॥ पाछेअपनेचरणनमेंधारणकरि
प्रसादीकुंडलपहराये॥ जेसेछपनकोटयादवहे॥ सोतिनमेंकुंड
लकाहूकोदीयेनांही॥ एकउद्धवजीकोश्रीठाकुरजीनेअपनोअ
नन्यभक्तजांनिकें॥ अपनेप्रसादीवस्त्रआभूषणकुंडलप्रसादी
दीये॥ सोतेसेईश्रीस्वांमिनीजीनेअपनेचरणकमलकोप्रसादी
कुंडलश्रीठाकुरजीकोदीये॥ सोयावनमेंधरायेतातेकुंडलको
चिन्हहे॥ जोकोईपुष्टिमारगीभगवदीअपनेहृदयमेंभावसो
धारणकरे॥ सोतिनकेहृदयमेंभगवदभावआरूढहोई॥ अ
वश्रीस्वांमिनीजीकेवांमचरणमेंअष्टमाचिन्हनगकोहेता॥
कोभावकहेतहे॥ नगजोपर्वतकोचिन्हहे॥ सोकाहेतेजोव्रज
मेंपांचपर्वतलीलासंवंधीहे॥ श्रीगोवर्द्धनपर्वत॥ नंदगांममें
वरसानेमें॥ कांमवनमेंचरणपहाडी॥ वठेनकोचहेरणपहाडी
इनपांचपर्वतनमेंनित्यलीलास्परसश्रीगोवर्द्धनधरश्रीस्वांमिनी
जीसहितनित्यरंगकरतहे॥ सोश्रीस्वांमिनीजीकोपांचपर्वतको
मूल अपनेचरणकमलमेंचिन्हकरिधारणकीये॥ सोनाकरि
केश्रीठाकुरजीकोयहजतायो॥ जोसगरोगिरराजकीलीलाआ
पिहेयहाहें॥ तातेश्रीगोवर्द्धनधरक्षराक्षरामेंश्रीस्वांमिनीजी

जीकेचरणकमलको आश्रय करत है ॥ और पर्वतधरेको अभिप्राय
यह है जो पर्वतलीलासंबंधी जीवको अनुभव करावें ॥ अन्य जीवके
ऊपर तो रहस्य लीलाको ज्ञान काहूको न होय ॥ ताते जो कोई भगव
दी श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी सरण आये हैं सो श्रीस्वामिनीजी
के चरणकमलको आश्रय कीयो हैं ॥ तिनको पर्वत अद्भुत
होयनि कुंज द्वारा साधन करिवे में जीवको मन पर्वत है ॥ सोनाक
रिके लीलारस के अनुभव तें वाहेर रहत हैं ॥ या प्रकार श्रीस्वा
मिनीजी के वामचरणमें आठ चिन्ह हैं सो तिनको अभिप्राय य
ह वेदमें तथा श्रीभागवतमें अनेक प्रकारकी सेवा कहे ॥ तेसेई
श्रीस्वामिनीजी के वामचरणको चिन्हताको चिंतन करें तथा
अष्ट प्रकारकी सेवा होनी कठिन है ॥ एक ही सेवा कठिन है दु
र्लभ है ॥ सो ताते श्रीस्वामिनीजी अपने वामचरणमें अष्ट चिन्ह
धरिकें प्रगट जनाये ॥ जो कोई भाव साहित पुष्टिमार्गीय वैस्नव चिं
तन करत हैं ॥ सो तिनको सर्व फलकी सिद्धि होइगी ॥ या प्रकार
दोऊ चरणको चिन्ह भाव साहित वर्नन कीये ॥ दोऊ चरणमें पं
द्रह चिन्ह है ॥ सो ताको अभिप्राय यह है ॥ जो तिथि जो पंद्रह है
सो तामें महीना वर्ष सगरे आय गये ॥ ताते जो वैस्नव पंद्रह
चिन्हको चिंतवन करे ॥ सो तिनको कबहू कोई कालके अनुभ
व रसके प्रतिबंधनमें परे ॥ सदा रंग करस स्वरूपानंदको अनु
भव करें ॥ सो या प्रकार चरणचिन्हके भाव हैं ॥ सो आप कछूक अ
पनी बुद्धि अनुसार वर्नन कीये हैं ॥ इति श्रीगोकुलनाथजी
कृत चरणचिन्हको भावना संपूर्णम् ॥ समाप्तम् ॥ शुभं ॥



श्रीकृष्णाय नमः ॥ श्रीगोपीजनवल्लभाय नमः ॥ अथ नित्य
सेवाकी भावना लिख्यते ॥ वैस्नवको प्रातःकाल होत ही भगव
द सेवाको चिंतन करनो ॥ रात्रको बियोग विचारनो ॥ दर्शनकी
आस राखनी ॥ उठत ही अपने कंठकी मालाको दर्शन करनो
माला भगवदीय है ॥ इनके दर्शन ते भगवद भावकी उत्पंन
होय ॥ प्रथम ही श्रीआचार्यजीको स्मरण करि नमस्कार करि
श्रीस्वामिनीजी के रूपकी भावना करनी ॥ पाछे श्रीगुसांई
जी के स्वरूपकी भावना करीये ॥ पाछे अपने गुरुनको निवे
दन होय ॥ तथा पहले नाम और बालकत्तेमन्यों ॥ पाछे वे
ब्रह्मसंबंध और स्वरूप सो भयो तो कछू चिंता नाहीं ॥ नाम दा
ता गुरुनको नमस्कार करि ॥ निवेदन मंत्र दाता गुरु
नको स्मरण करि नमस्कार करि श्रीगुसांईजी के स्वरूप विचा
रनो ॥ बल्लभकुलमें भेदबुद्धि न करनी ॥ सगरे श्रीआचा
र्यजी को वंस अलौकिक है ॥ पाछे देहकृत्य करि दंतधावन क
रनों ॥ पाछे बीड़ा नित्य मुख शुद्धार्थ खानों ॥ सो सेवामें प्रभु पा
स वास आवे नांही ॥ पाछे तेल लगाय स्नान करनों ॥ रनहेरई
तो बीड़ा न खाईये ॥ द्वादसीको तेल लगायके न न्हाय ॥ देरूपो
छि अपरस वस्त्र पहरिकें आसन पर बेठि तिलक धारण क
रनो ॥ सेवाकी समयमें ढील होय तो मुद्रा धारण करनो ॥ सम
य होय तो नित्य तिलक लगाय चरणामृत लेके मंदिर के द्वार जा
य दंडोत करनी ॥ अथ मंदिर के द्वारकी भावना ॥ महात्मक
रि जय विजय नंद सुनंद पोरीयाको चिंतन करनो ॥ भाव पू
र्वक वात्सल्य रसमें जसोदाजी रोहिणीजी सब ग्वाल द
र्शनार्थ आरे है ॥ तिनको स्मरण करनो ॥ कुंजसंबंधी रहस्य
लीलामें ललिता विसाखा आदि सखीनको स्मरण करनो भा

नित्य.
८

वपूर्वकमनमेनमस्कारकरि सषीनकोवीनतीकरनी॥ जोउसा
रीदासीहे॥ श्रीआचार्यजीश्रीगुसांईजीकीओरदेषिकेंउनकी
कांनितेंअपनेंआज्ञाकारीदासीजांनिसंगलीजे॥ युगलस्वरू
पकीसेवायोग्यतुमहीहो॥ तुम्हारी कृपातेंप्रभुमोकोदरसनदे
इगे॥ अथमंदिरकेकिमाड़नकीभावना॥ याप्रकारप्रार्थनाक
रिमंदिरकेदोऊकिमाड़हे॥ सोश्रीस्वांमिनीजीकेनेत्रनकेपलक
हे॥ पलकनकेभीतरनेत्रनमेश्रीठाकुरजीदमकतहे॥ तहां
भीतरजायय हूभावनांविचारनी॥ अथमंदिरकीभावनां
जोमंदिरहे॥ सोअष्टदलकंमलकोस्वरूपहे॥ तातेपुरुषोत्तमभी
तरविराजतहे॥ तथांमंदिरश्रीवृंदावनकेभीतरकुंजरूप
हें॥ तहांयुगलस्वरूपपोढेहे वोहोतऊंचेबोलनोनहीं कहूं
जागिउठेंगे॥ तथांमंदिरश्रीनंदरायजीकोघरहे॥ तहांवे
ठकश्रीठाकुरजीकेचोवारेकेऊपररहें॥ तहांप्रभुपोढेहे॥ इ
त्यादिकभावविचारिखासाजलतेंखरीमृतिकालगाइकेपा
छेहाथधोईये॥ अथघंटानादकोभावनांलिष्यते॥ पाछेतो
नवारघंटावजाईये॥ ताकोभावयहहे॥ जोव्रजमेतीनप्रकार
कीगायहें॥ राजसीतांमसीसात्वकी तिनकेकंठमेंछोटेछो
टेघंटेहें॥ सोगायसमयजांनिघंटावजायजगावतहें॥ व
छराएत्रकेमृषेहें॥ तथांगोदोहनअर्थमस्तकहलायघं
टावजायप्रभुकोजगावतहें॥ तथांनंदरायजीकेघरकुं
मारिकासोल्हेहजारहें॥ तिनमेहूराजसीतांमसीसात्वि
कीतिनकोहूकंचुकीहे॥ तिनकीन्हांनीमधुरसुरहे॥ सो
गायनकरिश्रीठाकुरजीकोजगावतहें॥ तथांनिकुंजमें
श्रीस्वांमिनीजीकेलीलासंबंधीसुकसारो श्रीस्वांमिनी
जीकेपालेहें॥ तिनकोसमयसमयकोजगायवेकीटहल

दीनीहे॥ परंतुसुकसारोयातेंडरपतहें॥ जोतमचरलीलाकोप
सीहतो॥ परंतुएकसमयश्रीस्वांमिनीजीश्रीठाकुरजीसोंगली
लामेरसपरवसहते॥ तासमयघड़ीदोयपाछलीरात्रकेस
मयभयो॥ सोविनाविचारेबोल्यो॥ सोश्रीठाकुरजीचोंकिउ
ठे॥ भोरभयोतमचरबोलेअवजातहें॥ यहवचनश्रीस्वांमि
नीजीकेहृदयमेतीव्रविरहवांनहोयकेलाग्यो॥ सोताकरिमूं
र्छाखायकेगिरी॥ पाछेश्रीठाकुरजीअपनेअधरामृतसो
चेतन्यकीये॥ सोतापाछेंश्रीठाकुरजीअनेकप्रकारकीवा
तेंकहिकेंप्रसंनकीये॥ श्रीठाकुरजीकेऊपरश्रीस्वांमिनी
जीप्रसंनभई॥ सोतवश्रीस्वांमिनीजीतमचरकेऊपरक्रो
धकरिश्रापदीयो॥ जोजाअसुरकेघरसदारहो॥ सोताहीस
मयनिकुंजतेंगिस्यो॥ ताकीभयतेंसुकसारोजगावतोश्री
स्वांमिनीजीअप्रसंनहोय॥ तातेंसुकसारोआदिदेविक
स्वरूपहें॥ सोमधुरसुरसोंललितनविसाखाकेकंठकीनां
ईनेंगलिकेजगायदेतहें॥ तवललितादिसषीननेसंयुक्त
वीनवजाई॥ अथसंखनादकोभावनां॥ पाछेसंखकीना
ईकंठहूरनकेहे॥ सोसषीसहचरीतीनप्रकारकीहे॥ राज
सीतांमसीसात्वकी॥ तातेतीनप्रकारकीहे॥ तातेंतीनवा
रसंखनादहोतहें॥ सोयाभावकीजोगपत्ताबैस्नवकोनां
ही॥ बैस्नवकेयहांसषीनाईभावनामेंविचारिकेकरेंगो
प्यताकीचिंतानांही॥ औरअष्टप्रकारसषीनकोहूस
रोपुरुषभावको अष्टसषीरूनहोकेरूपहे॥ तातेंद्वारपो
रियानंदरायजीकेतहांसंषवजाइश्रीस्वांमिनीजीकेर
कंठकेनादकीसुरतिकरावतहें॥ इत्यादिकघंटासंखनां
दकीभावनाकरनी॥ अथसिज्याकीभावनालिष्यते॥ पाछे

पछे फेरि हाथ धोय मंदिर मे जाय सिज्या भोग की घंटी मालाकी
झारी सब बाहिर लाय प्रसादी पात्र में सब ठलाय देनो मं
दिर वस्त्र करि सिंघासन नित्य रहत के बिछावनो सोय
हां तम मे प्रसरररूप शेषरूप हैं। और नंदालय की लीला
मे जसोदाजी की गोद रूप है। प्रभुन कों गोद मे लीये रहे। प्रा
तःक्रियान को भाव। सो होऊ तकीया श्रीयशोदाजी की
भुजा है। पाछे कोतकीया श्रीयसोदाजी को हृदय है
तथा नंदालय मे रहस्य वार्ता में श्रीस्वामिनीजी को दूस
रो स्वरूप कुमारिका को हैं। तिनके भाव सो। तिनके हृदय
मे होय श्रीस्वामिनीजी करत हैं। ताते कुमारिका मे मु
ख्य राधा सहचरी हैं। तिन की गोद सिंघासन हैं। पाछे को
तकीया हृदय दोऊ तकीया भुजा हैं। और निकुंज मे दो
ऊ तकीया भुजा है। और निकुंज मे दोय प्रकार को भाव
हैं। युगल स्वरूप की सेवा ललिता विसाखा आदिकर
त हैं। सो श्री चंद्रावलीजी श्रुतिरूपा को दूसरो स्वरूप
ललिताजी को हैं। सो श्रीचंद्रावलीजी ते प्रगट ललिता
विसाखा हैं। ताते कुंज मे ललिताजी की गोद तथा श्री
चंद्रावलीजी की गोद दोऊ तकीया भुजा पाछे कोत
कीया हृदय यह भाव विचारनो। तथा श्रीस्वामिनी
जी ते प्रगट श्री चंद्रावलीजी की हैं। ताते श्रीस्वामि
नीजी सों प्रगट दूसरो स्वरूप है जाननो। सो ताकरि
श्रीस्वामिनीजी की गोद सिंघासन वस्त्र हैं। तहां आदि
पाछे कोतकीया हृदय दोऊ तकीया भुजा रूप सिंघा
सन में कलसा कुच रूप हैं। पाछे तकीया प्रभुन के द
सरा भाग है। सो तापर अणवस्त्र चुनि धरनो। सोय

स्वरूप की भावना। सो सुखवस्त्र वात्सल्य रसमें जसोदाजी को
लहंगा को घेर। निकुंज मे श्रीस्वामिनीजी के लहंगा को भूमि लो
है। यह भाव विचारे मंदिर वस्त्र लाल मोटी जलकरि सानुकी
जाई सो राजस जाई तापनिवनेक होय। सो तल होय। ताकरि ता
मस जाय। यह महात्म्य मे रहस्य हैं। जल है सो प्रथ रास न सी वन
रस है। सो बरसा कमल कों मुकुमना करि ललितादिक सखी
को कुंजमे नापना प। हृदय मे सोन लता होय। झारी को
भाव। झारी वस्त्र खोलि के मांजिये। सो फेरि के सिंघासन के बांम
भाग धरनो। झारी वात्सल्य में जसोदाजी रूप टोटी कुच रूप
पयपान बालक छोक रावन तहैं। झारीवस्त्र लाल सो श्रीयसोदा
जी साड़ी पहरे हैं। नित्य मांजि के धोवनो। सो श्रीयशोदाजी नि
त्य देह कलप करि स्नान करत हैं। यह नंदालय को भाव तामे कु
मारिका को यह भाव विचारनो। और निकुंज मे एक भाव श्री
यमुनाजी को है। तथा मुख्य भाव श्रीस्वामिनीजी को सखा गरि
राजी है। रसरूप वस्त्र झारी पर रंगीन याते। जो सो मासब
नी रंगीन पहरे। जमुनाजी तो सब ठौर मिली हैं। नंदालय मे
गोपीजन मे हैं। निकुंज मे तो श्रीस्वामिनीजी रूप मुख्य है ता
ते इनको प्यारो वरनन वो होन नांही है। अथ मंगल भोग
की भावना। मंगल भोग जो बनि आवे। और टोकी एक टोरी में
दही एक कटोरी में सधानो। १ कटोरीमे बूरा एक कटोरी
मे मलाई। एक कटोरी मांखन की। एक कटोरी मिश्री की। औ
र बने तो लड्डु बाबाल भोग की सामिग्री। अनसखड़ी नि
त्य बने तो बासी दिन पाछे नवीन करनी। फिर तो सामिग्री
करे कबहूं ठोर। कबहूं तिकुती के लाडू। कबहूं सेव के लाडू
कबहूं गूंदा। कबहूं मठरी। कबहूं सकरपारा कबहूं मगद के

लडुवा याप्रकार मंगलभोग साजियें ॥ एक वस्त्र सो ढांपिये ॥ श्री
ठाकुरजी के जगायबे की भावना ॥ पाछे श्रीठाकुरजी को जगाय प्रथम
मुखारविंद को दर्शन करीये ॥ काहेते जो मुखारविंद रूप श्री
आचार्यजी महाप्रभु आपु हें ॥ तिनको स्मरण करीये ॥ सो तत्काल
होइ मोर जाई सो कि के उठाय सिंघासन पर पधराय समय अ
नुसार उढाईये ॥ युगलस्वरूप होय तो दोउन को सिंघासन पर
संग ही पधराईयें ॥ सो काहेते ॥ जो प्रातःकाल को वियोग दोउ
स्वरूप सो रंच कहू सह्यो न जाय ॥ या प्रकार सो सिंघासन पर
दोउ स्वरूप की भावना करनी ॥ रसोई वारी होय सो वा सम
य के दर्शन करि जाय ॥ और कोई को मंगलाभोग के दरसन न
हो ॥ मंगलाभोग धरिये ॥ तामें वात्सल्य रस में चोकी रोहिणी
जी रूप कलेरी जसोदाजी के हस्त रूप ॥ कुंज संबंधी में चोकी
ललितारूप ॥ कटोरी सो श्रीस्वांमिनीजी के कर रूप ॥ सोने के
पात्र पीतर के पात्र तामें श्रीस्वांमिनीजी को भाव ॥ रूपे के पा
त्र कांसे के पात्र श्रीचंद्रावलीजी के भाव के ॥ और कुमारिका
श्रीस्वांमिनीजी में आई ॥ श्रीयमुनाजी सब में आई ॥ पीतर में
सोने की ॥ और कांसे में रूपे की भावना कटोरा बड़ो श्रीचंद्रा
वलीजी को कर ॥ कटोरी श्रीस्वांमिनीजी को कर ॥ तामें कुमारि
का आय गई ॥ या प्रकार भोग धरिकें प्रार्थना करनी ॥ श्रीआ
चार्यजी श्रीगुसांईजी आपने गुरु तथा अष्टछाप चोरासी
वैष्णवन की दूकांनि करनी ॥ पाछे टेरा दे बाहिर आवे टेरा है
सो मायारूपी हे ॥ सो टेरा की भावना ॥ सो टेरा दोय प्रकार को है
एक विद्यारूप जो भगवत सेवा होय ॥ सामिग्री में टेरा याते जो
सामिग्री स्वरूपात्मक हे ॥ प्रभुन को भोग धरत हे ॥ एकांत वि
ना न होय ॥ ताते मायारूप टेरा आड़ ॥ और भक्तन के मनोरथ

सिद्ध होत हे ॥ सो वात्सल्य में टेरा हे ॥ ताते काहू की दृष्टि न लगे
तथा कुमारिका के भाव तें श्रीस्वांमिनीजी पधारी हे ॥ सो संग
श्रीयशोदाजी बालभाव ते आपने पुत्र को बेठाई मंगलभो
ग धरें ॥ तब टेरा मायारूप आड़े होय रहस्यलीला में गोपन
करत हें ॥ यह प्रभु को मंगलाभोग धरीये ॥ सिज्या मंदिर में जा
इ के सिज्या उठाय बुहारी पोतना करि सिज्या के वस्त्र कसना
खोलि झटकि के बिछाईयें ॥ प्रबोधनी ते कसना बांधिये रा
मनोमी तांई कसना बांधिये प्रबोधनी तांई ॥ ताको कारण य
ह हे प्रबोधनी ते सीत बोहोत हे ॥ रामनोमी ते उस्नकाल
बोहोत हें ॥ ताते सिज्या भक्तरूप हें ॥ विरह प्रगट हे ॥ उस्नकाल
में ॥ ताते वाको ओरते प्रभु को धेरे हें ॥ तेसे हम महा विरह में बं
धन करे ॥ हमतें महा बंधन करि धरे हें ॥ सीतकाल में वि र
ह भीतर ते होई ॥ काहेते अंग लगत हे ॥ ताते सीतकाल प्रभुन
के भक्तन को परम सुखदाई हें ॥ ताते नाना प्रकार की सामि
ग्री नानी कस्तूरी जायफल लोंग आदि भानि आरोगत हे
तामिस ते प्रभु को जतावत हें ॥ तेसे अंग सों अंग गाढो मिलि कें
हमारे ऊपर को विरह दूरि कीये ॥ तेसे ई हृदय के भीतर
पधारि कें भीतर के ताप दूरि करिये यह भाव जनावन कें
अर्थ सामिग्री गर्म सुहाग सोंठ आदि आरोगत हें ॥ सेजा
मुख्य श्रीस्वांमिनीजी रूप हें ॥ दोउ ओर के तकीया भक्तन
के हस्त हें ॥ सिज्या के वस्त्र भक्तन के हृदय हें ॥ तथा सिज्या
चार जूथ पति के भाव ते चारि ही पावा हें ॥ चारि पाटी हें चा
रिन की या प्रभुन के चारयो ओर हें ॥ वांम भाग श्रीस्वांमिनी
जी दक्षिण भाग श्रीचंद्रावलीजी सिरहाने की ओर श्री
यमुनाजी इन कुमारिका यह भाव सिज्या में विचारनो जाके

कपोलकेभावतेहे॥ सोनाकेपासइली चाविछाय॥ सोन हांसवस
षीन कोभावविचारीये॥ सिज्याको चादरिउठायवाहिर आईये
श्रंगारकोसाजजेसोरितुहोय तेसोनिकासियें॥ सीतकालमेरु
ईकेवागाश्रीस्वांमिनीजी केउदरकेभाव परमकोमलतको
याधरीये॥ अन्नरूपचरूपपुष्टिदरसन होतहे॥ सो श्रीस्वांमिनी
हृपायके प्रफुलित पाटकेवागानाकेऊपरपीरोपाटश्रीस्वां
मिनीजीकेभावतेधाररणकरतहे॥ वागाकोघेरश्रीस्वांमि
नीजीकेलहगारूपतजो श्रीस्वांमिनीजीकोचोलीउपरनां
सो श्रीस्वांमिनीजीकीसाडी॥ अवजरीकेवागासोप्रबोधनी
नेकार्तिकसुदी दसमीतांई पाटकेवागासोप्रबोधनीते फा
ल्गुनसुदी॥१४॥ तांई॥ वागाजरीके॥ सो कार्तिकसुदीधारस
पीरीजरीश्रीयमुनाजीकेभावतेहें॥ कार्तिकवदी॥१३॥ हरी
जरीसोल्हेहजारअग्निकुमारिकानकेभावतेहें॥ कार्ति
कवदी॥१४॥ लालजरीश्रीललितानाजीकेभावतेहें॥ याप्रका
रफिरतेश्रंगारधरायीये॥ सीतकालमें सेयाकेऊपरसि
रहांनेकेंतकीयामेंरोऊ ओरछोटीकस्तूरीकीथेलीकरि
केवांधिये॥ काहेतेसीतकालमे सगरेभक्तनकेअंगो
अंगगाढेअवलंबनहें॥ तातेदोऊ ओरकस्तूरीकोमिस
तेश्रीयमुनाजीविराजतहें॥ जहां श्रीयमुनाजीहोईतहें
ईर्षाहुससवकोमिटिजातहें॥ रसरूपस्वभावसवन
कोहोई॥ अक्षयतृतीयाते पागपिछोरा श्रीनवनीत
प्रीयाजीहोइतोपागअष्टमीधाररणकरें॥ काहेतेभक्त
नकेभावप्रगटहें॥ तातेपंखाचंदनअरगजाधाररण
होतहें॥ उनाविरहकोसांतिनांहीहोतहें॥ सीतकालमे
अंगीठीधरिकेतापदिखावतहें॥ याप्रकारसमयहोई

मेंगलाभोगसराईये॥ याप्रकारसमयहोयतवमेंगलामेंयु
सोतव आचमनकीझारी श्रीयमुनाजीरूपतहुतहें॥ लालि
तादिसषीरोरूस्वरूपकेपुषकोप्रसादीजलधाररणकी
यों॥ पुषवस्त्रवीड़ा श्रीस्वांमिनीजीकेंमुखारविंदकोउमा
र आरोगतहे॥ प्रसादीजलकीझारीठलायतईभरें॥ पाछे
मंगलाआरतीकरे॥ अथमेंगलाआरतीकीभावना॥ ग
रमीमे॥४॥ वातीकी सीतकालमेसोल्हेवातीकी॥ अनेकहृद
यमेविरहहतो॥ सोप्रभुपरन्योछावरकीयो॥ वात्सल्यभा
वतेजसोदाजीपुत्रकीरक्षाकरें॥ वारतोकरतहें पाछेदं
डोतकरिप्रसादीहाथधोईये॥ तपांभक्तनकोविरहअग्नि
रूपहें॥ तातेहाथधोयकेहाथसोरेकरिश्रंगारकरीये
सीतकालहोइतोहाथसोंकिश्रंगारकरीये॥ अथश्रंगा
रकीभावना॥ पाटीमेचोकीविछायतापरचारपरतको
वस्त्राविछाईकें॥ उत्सवहोइतोअभ्यंगकेसाजविछध
रियें॥ पाछेसगरोश्रंगारवड़ोकरिये॥ ठाटेस्वरूपहोइतोत
नियापहराय॥ पाछेस्नानकराईये॥ श्रीनवनीतप्रीयाजी
होइतोवस्त्रकछुनरहे॥ तथां श्रीनंदरायजीकेभावतेठाढे
स्वरूपहें न्हांतीवेरवस्त्रनांहीपहरे॥ न्हायवेकीपाटीहेसो
श्रीललितानाजी॥ चोकीश्रीचंद्रावलीजी॥ ऊपरवस्त्रश्रीस्वांमिनी
जीकीउतरीयस्यांमस्वरूपानित्यफुलेललगायन्हांय॥ श्रीनव
नीतप्रीयाजीकेसारिचंदनमेफुलेललगायन्हांय॥ श्रीनवनीत
प्रीयाजी॥ अभ्यंगकेदिनआंमलामिजोयछांनिकेंताकेमें
नरहुरहीरेचकझारनी॥ सकोतुलसीरेचकझारनी॥ फुले
लरेचकझारनों॥ श्रीअंगमेकोमलमर्दनकरनों॥ अपराध
कोभयराखियें॥ आमलाश्रीयमुनाजीकेभावतेहें॥ तुलसी

कुमारिकाकेभावतेहे॥ औरहरहरीअपभंगमेअलौकिकअपूर्व
नेसरवनकाहे॥ श्रीस्वांमिनीजीकेअंगकेवरनहे॥ फुलेलश्री
स्वांमिनीजीकोस्नेहहैं॥ श्रीचंद्रावलीरूपतोजलहे॥ सोश्रीस्वा
मिनीजीकेहृदयमेविरहहैं॥ ताते प्रभुस्नांनकरे॥ सोचंदनश्री
चंद्रावलीजीरूप॥ केसरश्रीस्वांमिनीजीरूप॥ जलसोश्रीयमु
नाजीरूप॥ याप्रकारन्हायकेनवलोनामेथोरोसोजलरहे॥ तब
प्रभुपरवारिकेंथारीमेडारिकेपाछेअवस्यकरिये॥ ताकोभाव
यह॥ जोन्हातीवेरसर्वांगकोदर्शनकरिदृष्टिदोषनिवारणार्थे
जलवारनो॥ अंगवस्त्र पाछेस्पर्शस्वरूपकोचोवासमर्पनोगौ
रस्वरूपकोअतरसमर्पणो॥ चोवाश्रीयमुनाजीकोस्वरूप
अतरश्रीयमुनाजीकेअंगकोश्रमजलताते स्वरूपकोतनी
याधरीनायीये॥ श्रीनवनीतप्रीयाजीहोइतोसीतकालमे
रुईकेवागागदरउष्णकालहोयतोश्रोढनी॥ अलंकारधरत
होयतोधराईयें॥ अंजनमेकाजरघीऊवरासरंचकभावते
श्रीयमुनाजीकेभावतेश्रीस्वांमिनीजीकोस्नेहवरासश्रीचंद्रा
वलीजीवरराशविंदमेंनूपुरसोश्रीस्वांमिनीजीकेहेंरावतहें
सोश्रीस्वांमिनीजीकेभावतेजसोदाजीकेघरकुमारिकाश्रीगा
रकरतहें॥ निकुंजमेश्रीस्वांमिनीजीअपनेश्रीहस्तासोंसिंगा
रकरतहें॥ श्रीस्वांमिनीजीकोश्रृंगारश्रुतिरूपामेसषीहेसो
करतहें॥ इत्यादिकभावविचारनों॥ श्रृंगारमेदोयप्रकारको
भावहें॥ रीतिविपरीतमर्यादामेरीतिकोश्रृंगारपुष्टिमेवि
परीतकोश्रृंगारसिखावतेकरीये॥ तबनाईसुरतनषतेसिष
पर्यंतनांईहोतहें॥ निकुंजमेश्रीस्वांमिनीजीनषतेसिखप
र्यंतकरतहें॥ नूपुरपाछेजेहरिघंघरूकरनधरावतहें
नूपुरश्रीस्वांमिनीजीकेभावतेजेहरश्रीचंद्रावलीजीकेभा

वतेघूंघरून॥ श्रीयमुनाजीकेभावतेघंघरूकुमारिकाकेभावते॥ सोने
श्रीयमुनाजीकेभावते॥ रूपोश्रीचंद्रावलीजीकेभावते॥ रूपो
श्रीचंद्रावलीजीकेभावते॥ मराठीके श्रीयमुनाजीकेभावतेहे
ताकोकुमारिकाकेभावते॥ पाछेकटिकिंकिनीपोतांवरऊप
रधरें॥ जोरासादिकविहारमेरसकीउद्दीपनकरताहे॥ सोश्री
स्वांमिनीजीकीकटिकोप्रसादीहे॥ नवलरकीगूंथअग्रेसजोनो
वेजंतीमालाग्नीवातेकटिपर्यंतअरदेहें॥ सोनवप्रकारकेभक्त
साधनकुमारिकाकें॥ श्रुतिरूपाकेंभावतेजाननो॥ सोताकेऊ
परसोनेकेहूनमनिकावीचबीचमांनिकपरोयो॥ सोनेकोश्री
स्वांमिनीजीकेभावते॥ मांनिककें श्रीयमुनाजीकेभावतेदोऊ
निन्यासिहाकेभावतेजाननो॥ ताकेऊपरगजमुक्तानकीमाल
सोउजलकेवलश्रीचंद्रावलीजीकेभावते॥ सोताकेऊपरसो
नेकेसांकरहृदयपरहें॥ सोश्रीस्वांमिनीजीकेभावतेनेहरूपी
फांसाकरिश्रीठाकुरजीकोवसकीनेहे॥ ताकेवीचमेंहृदयप
रचोकीविराजतहें॥ सोश्रीचंद्रावलीजीकेहृदयरूपीहीराकी
रत्नजटितधुकधुकीहें॥ सोश्रीस्वांमिनीजीश्रीयमुनाजी॥
केभावतेहें॥ तहांऊपरवक्षस्थलकेचिन्हकोभावनाकरिनहां
आदिदैविकलक्ष्मीरूपश्रीस्वांमिनीजीकोहें॥ सोश्रीठाकुर
जीनेअपनेहृदयमेछिपायराखेहे॥ तहांकेठमेकौस्तुभम
णिकीभावनाकरीये॥ तहांकोटिकोटिश्रीस्वांमिनीजीकेहृ
दयकोठिकानोहें॥ तहांकेठमेसोनेकीहसुलीपहरेहे॥ सो
श्रीस्वांमिनीजीकीभुजाकीमरोरनकोभावते॥ अपनेकंठ
मेहसुलीधरिगलबांहीदीरेहें॥ सोहसुलीमेनकौंकसीषि
चचितहें॥ सोश्रीस्वांमिनीजीकेभुजमेंआभूषणविचारनों
हसुलीमिदोऊओरकोनोकपुरीहें॥ सोश्रीस्वांमिनीजीकेनख

कोभाव है॥ नीनलरकी मालापंचलरकीमाला॥ सातलरकी
माला॥ नौलरा तेरहलरा इकीसलरा॥ पोतिनकीमालाधर
तहे॥ नीनलरकी मालाकोभावयहहे॥ नीनमालाभक्तनके
भावके॥ राजसी॥ तामसी॥ सात्वकी॥ पांचप्रकारकेहे पचल
रा॥ श्रीस्वांमिनीजी॥ श्रीचंद्रावलीजी॥ श्रीयमुनाजी॥ कुमारि
काकेभावते॥ और सकल स्वांमिनीजी केभावते॥ सतल
रा राजसी॥ तामसी॥ सात्वकी॥ तीन्योयह चार्योजूथपति
नकोमिलिकेंसातप्रकार॥ नौलरा नौलरीनवप्रकारकीनवधा
भक्तीकेभावते॥ तेरहलरा भक्तनके अंगकेभावते॥ एक
मुख्यश्रीस्वांमिनीजी श्रीयमुनाजीकेभावते॥ इकीसलरा द
सप्रकारकेभक्तश्रुतिरूपामेनवप्रकारकेभक्तकुमारिकामे
नांमसी एक नांहीहें॥ सोगोपिकागीनमेंश्रीसुबोधनीजी
लिखेहें॥ याहीतेउनीसश्लोक गोपिकागीनमेहें॥ एकश्री
स्वांमिनीजी॥ एकश्रीयमुनाजी पोतिन्याति हूमिलिकेरकी
सलरधरतहें॥ तिनसगरीमालाकेउपर वनमाला तुल
सीमालाधाररणकरतहें॥ तथां अनेक वन स्पतीसगरेवृ
न्दावनकी स्वांमिनीजी सषी सहचरी इतीकेभावहें॥ ताते
कंठतेचरणारविंदपर्यंतधाररणकीयोहें॥ तापरभवरगु
पश्रीठाकुरजी अनेक कुसुमधाररणकीयेहे॥ सोवनमाला
पर आइकेसगरेभक्तनकौरसकों अनुभवकरतहे॥ कबहू
अकेलीतुलसीकीमालाधाररणकरतहे॥ ताकरिश्री
स्वांमिनीजीकेअंगकोगंधको अनुभवकरतहें॥ प्रीया
गंधसुरभीतुलसीचरणप्रिया॥ इत्यादिकभावतेकबहूक
मलफूलनकीमालाधारतहें॥ श्रीस्वांमिनीजी केहृदयको
भावयहहे॥ जोहृदयतेहृदयामिलिवनहे॥ कबहू पीतचमे

लीकीमालाधाररणकरतहें॥ सोश्रीस्वांमिनीजीके अंगकेवर
ननहे॥ ताकेभावतेकबहूस्वेतचमेलीकीमालाकरिकेधरत
हे॥ सोश्रीचंद्रावलीजीकेश्रीअंगकेभावते॥ कबहूकुंदकीमा
लाधरतहे॥ सोश्रीचंद्रावलीजीकी दंतावलीकेभावते॥ कब
हूचंपाकेफूलकीमालाधरतहें॥ सोकुमारिकाकेभावते॥ क
बहूगुलाबकीमालाधाररणकरतहें॥ सोश्रीस्वांमिनीजीके
हस्तपतेफूलठरतहे॥ ताभावते॥ इत्यादिकसगरेव्रजकेफू
ल श्रीस्वांमिनीजीकेभावतेहें॥ कोयल अरुश्रीयमुनाजी
पाडर श्रीस्वांमिनीजीकीनासिकाकेभावते॥ तातेतिलके
फूलवोहोततहोतहें॥ कदमकेफूलकुमारिकाकेकुचरूपइ
त्यादिकभाव अपनेहृदयमेंविचारिकेमालाप्रभुनकोधराव
नी॥ दोउभुजमेदस अंगुलीहें॥ तांमेदसोंहीरीरतनजटि
तधाररणकीयेहें॥ ताकोभावयहजोदसप्रकारकेभक्तहस्त
मेलीयेरहतहें॥ अत्यंतसनेहकेवसहोयकेछोडतनांही॥ हस्त
कमलमेभक्तयाते आश्रयकरतहें॥ सो प्रभुमुरलीवजावत
हे॥ अथ मुरलीकोभावनो॥ नवभक्त अंगुरीमेमुद्रीरूपहें॥ सोक
पोलकोस्पर्शकरतहें॥ तातेयुगलजीवगीतमेभक्तकहेहे॥ वां
मबाहुमूलतवांमकपोलो॥ दसो अंगुरीनमेदसो नपहे चंद्रमाहू
पताकारिकेंकुभावरूप॥ अथ्यारोभक्तकेहृदयतेहरिभयो
हृदयसोनलतामई॥ रसपानकरि॥ सोताकेऊपरदोऊहस्तमें
कंकरणहें॥ सोश्रीस्वांमिनीजीकेव्याहकरि अपनेकरकेकंग
नकरणहें॥ सोताकेकरणकेपासजडाऊपोहोचीहें सो
जडाऊपहरारेहें॥ सोताकेकरणकेपासजडाऊपोहोचीहें सो
श्रीयमुनाजीकेभावतेठलमलातहे॥ सोताकेपाससमातीन
कीपोहोंची॥ सोश्रीचंद्रावलीजी अपनेव्याहकेभावतेदोऊ
हस्तमेपहरारेहें॥ सोताकेपाससोनेकेकडाहें॥ सोकुमारिका

व्याहकरिकें श्रीठाकुरजीके श्रीहस्तमे होऊ ॥ अपने भावमे धह
राये हें ॥ सो ता करिके दोऊ रसको भाव प्रगट होत हें ॥ रीतवि
परीत तथा कोई कहूं तामें रस के बंधन हें ॥ सो बाजूबंद जड़ा
ऊ हें ॥ तथा सोने के श्रीस्वामिनीजीके भाव ते ॥ जड़ाऊ श्रीय
मुनाजी श्रीचंद्रावलीजीके भावतें ॥ तथा मीनाके कुमारि
का के भावते ॥ यह बाजूबंद के भावते विचारनों ॥ हस्तमे मु
रलीप्रभु याते राखत हें ॥ श्रीस्वामिनीजीके कंठके सुर सो
गावत हें ॥ ताते कछु मुरलीको सुर मिलत हें ॥ ताते मुरली श्री
ठाकुरजीको परम प्रीय हे ॥ अधर पर धरत हे ॥ सो श्रीस्वा
मिनीजीके भावते हस्तमे राखत हें ॥ श्रीचंद्रावलीजीके भा
वते कटिमे राखत हें ॥ कुमारिका के भावते कबहु मुरलीले
श्रीठाकुरजी आपु बजावत हें ॥ सो श्रीठाकुरजी अपनो अ
धरामृत मुरली द्वारा अनुभव करावत हे ॥ मुरली सप्तरंध्र
न करिके हे ॥ सो तामे ऊपर को मुख्य रंध्र श्रीस्वामिनीजीके
रसपान अर्थ हें ॥ तथा छह रंध्र हें ॥ तामे प्रथम रंध्र श्रीचं
द्रावलीजीके रसपान अर्थ हे ॥ दूसरो सोरह हजार श्रीअग्नि
कुमारिका के रस अर्थ पान हू अर्थ हे ॥ और तीसरो रंध्र गावन
के रस श्रवण अर्थ ॥ चारयो रंध्र श्रीगोवर्द्धन रसपान अ
र्थ हे ॥ पांचमो रंध्र सगरे पशु पक्षी इत्यादिकन के रसपान
अर्थ हे ॥ छठो रंध्र देवतान के रसपान अर्थ हें ॥ मुर्छा करि
सगरे ब्रजकी ललना दस औ सधी सगरे भूमिके रस हान
र्थ हें ॥ वेणु मीतर ते पोलो क्यो हें ॥ संसार की लौकिक वैदि
क वासना सब हृदयते छोड़िके केवल भक्त रसके अर्थ
प्रभु पास आइ ॥ सो तब श्रीठाकुरजीने शुद्ध भाव मुरलीको
देषिकें अपने स्वरूपानंद को भाव अधरामृत दीयो पाछे

वेणु द्वारा सगरे ब्रजमे दीयो ॥ तब भगवदी आपुमीम्यो होइ
तो और कोमिजोवे ॥ सो सगरे ब्रज अधरामृत के संबंध ते
रसरूप होत भये ॥ यह कहियहू जताये ॥ जो पुष्टि मारगमे
श्रीआचार्यजीके चरणारविंद जीव आइ मुरलीकी नाई
अपने मनमे सर्व स्वार्थ देह संबंधी लौकिक वैदिक छोड़िके
भगवद्धर्म लागे हें ॥ तिनको मुरलीकी नाई अधरामृत
के रसकी प्राप्ति होइगी ॥ या प्रकार भावना करि पाछे चि
बुक भूषण श्याम स्वरूप में कस्तुरी के चिबुक पर बिंदुका
करत हें ॥ ताको भाव यह हे ॥ सो श्रीस्वामिनीजी अधराम
तको पान करत हे ॥ तब रसके अधिक्य ते रस बहत हे
श्रीठाकुरजीके मुखते रस बहिकें चिबुक पर आवत हें
तहां चिबुक के मिस करिके भूषण श्रीचंद्रावलीजी विरा
जत हे ॥ सो अधरामृत को पान दोऊ जुगलस्वरूपको प्र
साद ग्रहण करत हें ॥ ताते चिबुक भूषण श्रीचंद्रावलीजीके
भावते जानियें ॥ सो ताके ऊपर वेसरि को मुक्ता धरे हें ॥ सो
श्रीस्वामिनीजीनें अपनी नासिका की वेसरि श्रीठाकुर
जीको पहराई हें ॥ ताको भाव यह हें ॥ अधर श्रीठाकुरजी
के बिंबाफल की नाई हें ॥ ता अधरामृत रसपान करिवे
को ऊपर आइ बेठे हें उज्वल शुद्ध भाव करिकें अधराम
तको पान करि रसमें मग्न होय रमत हें ॥ ताते श्रीस्वामि
नीजीको भाव विचारनो ॥ अपना वेसर रंग कछु नीजड़ी
हें ॥ सो इ मोती लगे हें ॥ और सोना हे ॥ सो श्रीस्वामिनीजी
हे ॥ तहां अधर पर खड़ो मोती लटकत हें ॥ सो श्रीचंद्राव
लीजीके भावते हें ॥ या प्रकार चारयो जूथपतिके भावते
भावना करीये ॥ तिनके ऊपर तिलक हे ॥ ताकी भावना य

नित्य॥ १६॥

हहे॥ अथ तिलक को भाव॥ तिलक जड़ाऊ है। कबहूक कस्तूरी को धारण
करत है। कबहू गोरोचन को धारण करत है॥ सो ताको भाव वरनन
करत है। केसरि को तिलक श्री स्वामिनी जी के भाव ते है॥ प्रसादी
कुंमकुंम को तिलक विरह ताप को निवारन करत है॥ कस्तूरी को
तिलक धारण करत है सो श्री यमुना जी के भाव ते॥ भारी जड़ा
ऊ तिलक धारण करत है॥ सो श्रुतिरूपा के यूथिया श्री चंद्रावली
जी हैं॥ सो तिनके भाव ते धारण करत हैं॥ औ गोरोचन को है
सो सोरह हजार अग्निकुमारिकान के भाव ते धारण करत है
इत्यादिक भाव तिलक को ही करीये॥ तिलक तें श्री स्वामि
नी जी के चरण को आकार॥ परम सोभायमान बिजुरी की नां
ई सो हत है॥ काहे ते श्री स्वामिनी जी ने जान्यो जो श्री ठाकुर जी
रसिक सिरोमणि हैं॥ सो व्रज में कोई गोपी लेजाइगी॥ ताके लीये
श्री स्वामिनी जी अपने चरणारविंद को प्रसादी तथा अपने
चरणारविंद की नांई श्री ठाकुर जी के मस्तक पर छाप करि दी
यो है॥ सो ताकरि यह जनायो॥ सगरे श्री स्वामिनी जी को जो फ
हाभय॥ व्रज में श्री ठाकुर जी के संग विहार कीयो॥ जो श्री ठाकुर
जी हमारे वस है॥ और श्री ठाकुर जी व्रज तायो॥ जो तुम व्रज में
फिरो परंतु हमारे ई कहावोगे॥ ताते तिलक है॥ अथ वा श्री स्वा
मिनी जी ने श्री ठाकुर जी के मुखचंद्र की सोभा अनंत वदी है
थिके अलौकिक सगरी सोभा सिमिटि के आइ रही है॥ सो व्रज
की गोपी अति चंचल हैं॥ सो मति कहूं दृष्टि परि लेइ॥ जो श्री ठाकु
र जी के मुख की सोभा चुराय लेइगी॥ सो ताके अर्थ वंक ल
गाय दीयो॥ अथ वा दोऊ भोंह धनुष सी कहे त हे॥ तहां नैन
वान हे है॥ परंतु नैन वाण पलकन के वस हैं॥ ताते श्री स्वामि
नी जी अपने स्वतंत्र वाण तिनको दर्पसो मादेत भई॥ सो ति

को

न मे काऊ को प्रतिबंध नाही॥ सो नव श्री ठाकुर जी स्वतंत्र वांन पा
य के तिलक रूप अपनो भ्रुकुटी तिन धनुषन करि त्रलोकी को जी
ती॥ सगरे व्रज मंडल को जीति के अपने वस कीये॥ ताते श्री स्वा
मिनी जी की आज्ञा में हैं॥ जो ने जो में इन के प्रताप ते सगरे स्वामिनी
न को जीत न भये॥ या प्रकार तिलक को भावनो करीये॥ अथ कुं
डल को भावनो॥ पाछे दोऊ करणमें कुंडल धारीये॥ कबहूं मक
राकृत कबहू मोराकृत॥ मकराकृत जो मीन सो जल में होत हे ता
ते रसरूप ही मकराकृत कुंडल॥ और जब मोर कला करत है
तब मोरनी को रस को प्राप्ति होत हैं॥ ताते मोराकृत कुंडल ध
राय के॥ यह भाव जतायो॥ जो व्रज भक्तन को रसदान को अनुभ
व होत हैं॥ तथा सांख्य योग को भाव प्रगट करत है॥ अलकाव
ली में मोतीन की लर गुंथी है॥ सो श्री चंद्रावली जी के भाव ते
धारण करत हैं॥ श्री चंद्रावली जो अपने वेदी में मोतीन की ल
र करि के धरावत हे॥ मस्तक पर पाग वो होत धरत है॥ अथ
मुकट को भाव॥ सो श्री यमुना जी के भाव ते मुकट श्री स्वा
मिनी जी के भाव ते॥ सो ताते श्री आचार्य जी नित्य चंद्रका को
मुकट करि के धरावत है॥ मुकट को शृंगार रूप सबो पर है
ताते श्री स्वामिनी जी रूप श्री आचार्य जी है॥ ताते मोरपिछ
को मुकट धरावत हैं॥ अथ कुल्हे को भाव॥ कुल्हे श्री चंद्राव
ली जी के भाव ते धारण करत हैं॥ कुलह उत्सव को है॥ ताते उ
त्सव में धरत हैं॥ उत्सव को शृंगार सगरो श्री गुसांई जी ने प्रग
ट कीयो है॥ वा गाव श्रउत्सव की रीति सो श्री चंद्रावली जी रू
प श्री गुसांई जी हैं॥ ताते कुलह धरावत है॥ अथ सेहरा को भा
व॥ सेहरा कुमारिका के भाव ते धारण करत हैं॥ अग्निकुमारि
का हे सो आगे गोपी हैं॥ ताते वेदमयी दायाउ खेलवो होत प्रि

यहे॥ तातेप्रीतिके अर्थकात्यायनीदेवीको पूजनकीयो॥ तातेयह मं
त्रजपे॥ नंदगोपसुतनदेवपतिमेकुरुतेनमः॥ याप्रकारपतिके
भावतेकुमारिकासेइराधराबतहे॥ अथटोपीकोभाव॥ टोपी
श्रीयसोदाजीकेबालभावतेधारणाकरतहे॥ ग्वालपगग्वालन
केभावतेधारणाकरतहे॥ अथटिपारेकोभाव॥ टिपारोनांम
संभितहें॥ सोमदमांनसोमर्दनकरतहें॥ टिपारोतांमसोभक्तन
केमदमांनकोमर्दनकरतहें॥ दुमालाराजसीभक्तनकेमनोरथ
तेधारणाकरतहें॥ फेटासात्वकीभक्तनकेभावतेधारणाकरत
हे॥ इत्यादिकभावविचारिये॥ बेनीकोभाव॥ वेनीश्रीस्वांमिनी
जीकीप्रसादीश्रीस्वांमिनीजीकेभावतेधारणाकरतहे॥ मीना
केसिरपेचकुमारिकाकेभावते॥ श्रीयमुनाजीसवनकेभीतर
हें॥ सोनेकीकलंगीकुमारिकाकेरूपहें॥ मोरपिछकीकलंगीश्री
स्वांमिनीजीकेभावतेहें॥ जड़ाउकलंगीश्रीचंद्रावलीजीकेभा
वते॥ तुर्राश्रीयमुनाजीकेभावतेहें॥ सोधारणाकरतहें दोऊश्री
रकपुराटिपारेपरधरीये॥ सोवांमअोरश्रीस्वांमिनीजीकी
प्रभुरसाकरतहें॥ श्रीस्वांमिनीजीकेभावतेदक्षणभाग श्री
चंद्रावलीजीकेभावतेश्रीचंद्रावलीजीरसाकरतहे॥ अथचं
द्रकाकोभाव॥ एकचंद्रकाश्रीस्वांमिनीजीकेभावतेधारणाक
रतहें॥ तीनचंद्रकाराजसीतांमसीसात्वकीभक्तनकेभावते
धारणाकरतहें॥ पांचचंद्रकाग्वालयूथपतिश्रीस्वांमिनीजी
केभावतेचारचोअोरराकललितादिकसकलव्रजभक्तनके
भावतेधारणाकरतहें॥ याप्रकारश्रृंगारकरत्यबालकहारवा
गाश्रीस्वांमिनीजीकेभावतेधारणाकरतहे॥ याप्रकारश्रीठा
कुरजीकेश्रृंगारकोवरननकरि॥ अबश्रीस्वांमिनीजीकोश्रृं
गारवरननकरतहे॥ इनकोश्रृंगारबरणारविंदतेकरीयेसी

सिखापर्यंतकरीये॥ सोनषपर्यंतविपरीतहे॥ तातेसिरतेवर
ननकरतहें॥ मांगसवारिपाछेपारिसिंदूरफुलेलतेमांगमेसि
दूरभरतहें॥ सोफुलेलश्रीठाकुरजीकोस्नेह अत्यंतसचिकनता
तेपरमफलरूपहें॥ सोमाधसहितश्रीस्वांमिनीजीअपनेमस्त
कपरधारणाकरतहें॥ अथवारपांके सघनजोमेघकीनांईश्री
ठाकुरजीतिनकेसनेहकरिमस्तकपरधारणाकरतहे॥ तिनको
सनेहलगाइकांकसीअपनेदेतरूपतिनकोंअधरामृतसने
हरूपफुलेलसोधारणाकरतहें॥ सोतहांमांगमेसेंदुरभरत
हें॥ अपनेसोभातरूपसोहोऊअोरकेकेसमध्यपातीश्री
ठाकुरजीकेहृदयमेंआपुश्रीस्वांमिनीजीबिराजतहें॥ जेसेना
रायणकेहृदयमेंलक्ष्मीकोचिन्हहें॥ तेसेश्रीस्वांमिनीजीकेमां
गमेंबीचमेंसिंदूरकोमिसकरिआपुविराजतहें॥ तातेश्रीस्वां
मिनीहृदयमेंआपहें॥ सोतहांघुंघरवारीअलकहोररहीहें
सोछोटेछोटेभवरूप श्रीठाकुरजीअपनेकरूपहोईमुखकम
लकोरसपानकरतहें॥ अोरदोऊअलकवड़ीसोकपोलन
परहोइकेंबनकेऊपरआइसोभादेतहें॥ सोकेसरूपश्रीठा
कुरजीहें॥ सोद्दोऊभुजाऊपरतेनीचेकरिकेंकुचकमलको
अनुभवकरिवेकोंलटकिरहीहें॥ यहभावविचारनें॥ केस
समारिकेसखीननेंसुंदरफूलगुथेहें॥ अलकमेकेसरूपश्री
श्रीठाकुरजीहें॥ सिंदूरमेंश्रीस्वांमिनीजीऐसेयुगलस्वरू
प॥ कोसखीजननेमालापहराईहें॥ तथाफूलरूपश्रीचंद्राव
लीजीयुगलस्वरूपकीसेवाकरतहें॥ तापाछेसखीननेसगरे
केससमारिकें तारासोगूंथिकेजूड़ावांधेहें॥ सोतातकरिकेभा
वविचारनें॥ जोनासेरारूपश्रीस्वांमिनीजीकेयारूप॥ श्रीस्वां
मिनीजीयुगलस्वरूपमिलिकेरतिविपरीतकरतहें॥ ताते

कहूंकेकेसरूपनाराहे॥ कहूंनारापरकेसहे॥ सषीजनफूलरूप
होयहरिनेलीलाकोअवलोकनकरतहे॥ सोताकेनीचेसोनेके
डबाश्यांमरेसमकेंपातकेफोदनालगेहें॥ बेनीमेफूलगुंथेहेंता
कोभावयहहे॥ डबासोनेकेश्रीस्वांमिनीजीरूपहें॥ फोदनाश्यांम
ठाकुर पातकेसो श्रीस्वांमिनीजीरूपहें॥ सोमांनोगरागकेरवंभरूप
सुरंगाहिंडोरेझूलतहें॥ तातेबेनीडबापीठिपरवारंवारचंचल
होतहे॥ बेनीमेचारिडबाहेतिनचारयो डबानमेश्यांमपातके
फोदनाहें॥ सोचारयोजूथपतिश्रीस्वांमिनीजीकेविहारकोश्रा
वलंबनकरतहें॥ तथांबेनीमेफूलगुंथेहें॥ सोफूलसषीनने
समारेहें॥ अथवाफूलरूपव्रजकीसकलस्वांमिनीसषीआदि
यहलीलारसकोअनुभवकरनआईहें॥ सोयहभावनाकरि
यहजनायो जोसबरीस्वांमिनीसषीव्रजजनहें॥ सोसबस्वांमि
नीजीतेप्रगटभईहें॥ यहभावविचारनो॥ श्रीस्वांमिनीजीकेके
शपरवांमदिससीसफूलजडाऊधारणकीएहें॥ औरमांग
मेसिंदूरकेदक्षणदिसचंद्रजडाऊधारणकीएहें॥ सोता
कोअभिप्रायपहहे॥ जोश्रीठाकुरजीकेकर्णफूलदोऊताके
भावतेहे॥ अथवाकेसरूपश्रीठाकुरजीमांगकेसिंदूररूपश्री
स्वांमिनीजीहे॥ फूलरूपश्रीचंद्रावलीजीहे॥ इनकोविहारहोय
तहांअलौकिकचंद्रमासूर्यचहीये सूर्यरूपसीसफूलदिवस
कीलीलासहव्यकरसउदीपनहें॥ औरचंद्रारात्रकीलीलाको
उदीपनहें॥ तथांसीसफूलरूपसूर्यकीभ्रमीश्रीयमुनाजीके
भावतेहें॥ याप्रकारचारयोजूथपतिरसकोभावहोतहें॥ ताके
नीचेदोऊभोंहधनुषकीनांईवांईकीसोभादेतहें॥ सोकांमदे
वकेमदकोहरिकरतहें॥ तासमयश्रीस्वांमिनीजीरंचकहूंरू
षीहोय क्रोधकरिटेढीभोंहकरतहें॥ तासमयश्रीठाकुरजी

अपनेकोभूलिकेअपनेआश्चर्यताकोदीनहोय॥ हाथजोरि
केवीननीकरिप्रसनकरतहें॥ औरजबमांनासिकवरिअपनेन
क्रोधकरिमनुलोटेटीकरतहें॥ तबकहाकहतें॥ सषीकोरूप
धारिचरणकमलपकरिकेमनावतहे॥ अथवावदनमेकोला
नकोहस्वांमिनीहें॥ तिनकेदर्पकेमांनकोहरतहे॥ ताम्रकु
टीकेवीचजडाऊतिलकपरमसोमादेतहें॥ सोताकेपास
कस्तूरीकीश्यांमवेंदीसोहतहें॥ ताकोभावयहहें॥ कस्तूरी
कीबेंदीसोमधुकररूप॥ श्रीठाकुरजीकेमुषकमलकेरसपां
नकरनकोआइरहतहें॥ तबश्रीस्वांमिनीजीनेंजोश्रीठाकु
रजीकेसर्वकेरसकेभोक्तातातेव्रजकीस्वांमिनीहें॥ तिनके
लीएमानिकहेंअनतजाई ताकरिआपसगरी स्वांमिनीके
मूलरूपहें॥ ताहेतिनकेरूपप्रगटकरे॥ तातेजडाऊवेंदीश्रीचं
द्रावलीजीरूपधरे॥ सोतावकोवेंदीकुमारिकाकेभावतेधार
नकरतहे॥ मोतावकोवेंदीश्रीयमुनाजीकेचित्रविचित्ररूपधरे
सोताकरिकेचारिस्वांमिनीकेरसकोअनुभवश्रीठाकुरजी
करतहें॥ औरश्रीस्वांमिनीजीटेटीवेंदीधरतहें॥ तातेदोऊ
वेंदीनकेवीचवेनालटकतहें॥ कवहूजडाऊवेंदीकवहूमो
ताकीवेंदीकवहूसोनेकीकवहूमोतीकी॥ सबवेंतारूपश्री
ठाकुरजीटेटीरूपसकलस्वांमिनीनकेसौंदर्यामृतअवलो
कनतथांकपोलनकेरसकोपांनकरतहें॥ अथवाश्रीकृ
पतथांतिलकेफूलरूपश्रीस्वांमिनीजीकीनासिकाहे॥ तामे
नथपहरेहें॥ सोनथरूपमनअधरामृतकोरसकोउत्तत
होयधूमिरहेहें॥ परस्परदोऊरसपांनकरतहें॥ तथांघाछे
चिबुकसोटीपरश्यांमबिंदुअतिसोभादेतहें॥ ताकोअर्थय
हहें श्रीठाकुरजीछोटेभमरकोरूपधारणकरिचिबुकपर

स्परयातेविराजे॥ श्रीस्वांमिनीजी इध रहीयारसको पांन करे॥ सो
वहिके चिबुकपर आवें॥ ताते श्रीठाकुरजी वा अधरामृत रसके पां
नकरन अर्थ चिबुक पर विराजि रहे हें॥ अब दोऊ भुजान के आभू
षणको भाव कहेत हें॥ बाजूबंद जड़ाऊ पहरे हें॥ सो ताके नीचे बरा
गोलप हरे हें॥ सो श्रीठाकुरजी की रीतविपरीत अनेक रस के बंध
नके भाव को सूचन का करत हें॥ रससराग दिसा के बाजूबरा विपरीत
रसको भाव प्रगट करत हें॥ बांम भुजा के बरा बाचरी तर रस को भा
वजनावत हें॥ सो ताके नीचे कंकन पोहोंची पछेली चूरी धारण
कीये हें॥ जो चूरी सोभा स्वरूप हें॥ कंकन श्रीठाकुरजी ब्याह बेल
करिकें कुंजमें पहराये हे॥ पोहोंची सगरी स्वांमिनी मिलिके श्री
स्वांमिनी जी सो प्रार्थना करत हें॥ जो श्रीपुरुषोत्तम के सर्वांग
रसके अनुभव करनमें एक जुमही पोहोंची हो॥ अब कृपा करि
के हमको पोहोंचावो॥ हम ठ्याररस रस हें॥ तथा श्रीस्वांमिनी
जीने सवनकों उ पुरुषोत्तम के अधरामृतको रसपांन
करायो॥ तब सगरी स्वांमिनी मिलिके पोहोंची धराई॥ अौर
पछेली श्रीचंद्रावलीजी अपने मनोरथको धराई॥ यह भाव
जनायो जो तुम लागे पाछे हमको रस की प्राप्ति हें॥ चूरी सोभा स्वरू
प श्रीयमुनाजी को लहर रूप हें॥ सो तामें श्रीठाकुरजी सदा
बिहार करत हें॥ कंकन रूप चक्र करिकें श्रीठाकुरजी सदा
श्रीहस्तमें राषत हें॥ करके तले हत सांकला को फूल हें॥ दस
अंगुरीमें दस मुंदरी विराजत हें॥ हथसांकला सगरी अंगु
रीनके बीच पोहोंची पर लपटि रह्यो हें॥ सो ताकरिके श्रीठाकु
रजी केक रस को रूप करिकरि बंधन भाव सूचन करत हें
सो ताके पास रस सो दस अंगुरीनमें दस मुंदरी हें॥ सो तब
रसके अलौकिक भाव दिखावत हें॥ ता हूमें दसमो रस अप
नो श्रीठाकुरजी को अउभव कराय यह जनाये जो तुम्हारे

पासन वरस हें॥ सोउ हमारो कह्या हें॥ और दसमो रस हमारे नाही हें
जो तुमको लेनो होय सो लेउ॥ तब श्रीठाकुरजी दसमो रस मेरस
को लोभ करि॥ श्रीस्वांमिनीजी के वस होत भए॥ तोहू दसमे रस
को पार नाही पायो॥ तिनन पोर सा छिन छिन मे पांन करत हें
ताते दस मुंदरी दस रस रूप हें॥ और कंठमे तिमनी याकी ले
पोत की सोभा देत हें॥ तहां काली गांठि होय सो श्रीठाकुरजी सोने
के मनी या रूप श्रीस्वांमिनीजी हें जुगल स्वरूप एक ठोरे हे॥ तीन
मनी पांहे॥ सो त्रिविध भक्त रहांते प्रगट भए हे॥ राजसी तांमसी
सात्वकी॥ सो तिनको श्रीठाकुरजी स्वामिनीजी के संबंध ते प्रभुकाली
गांठि होई॥ अपने रसको पांन करत हें॥ अपवा बीचमे जड़ाऊ पं
दकधरत हें॥ सो श्रीयमुनाजी को उलटत हें॥ कबहु मोती
की वेसरी धरत हें॥ सो श्रीचंद्रावलीजी के भाव ते कबहु सोने की वेसरी
धरत हे॥ सो सोरह हजार कुमारिका के भाव ते॥ तिन सब बेसरी
बीच बेनालटकत हें॥ सो ठाकुरजी के भाव ते रस पांन करि रहे हा
नुसंधान सब भूलि गये॥ सो तिलार पर लटकि रहे हें॥ ता को भा
व यह हे मुख्य रस श्रीस्वांमिनीजी के मुषकमल को अनंत मधु
र रस को पांन करनो हें॥ परंतु बीच बीच का टेत्ति कअमल रस
स्वादिक हें॥ मधुर रस के भाव को वो होत बढावत हें॥ ताते श्रीय
मुनाजी मे अमल रस कुमारिका हे॥ येक ल रस श्रुति रूपामें ति
नभांति भांति सीत का रहे॥ यह हृदयमे भाव कर्तव्य हें॥ बाहिर
प्रगट करन को बांणी की सांमर्थ नही हें॥ दोऊ श्रवनमे कबहू ले
दे हूमका सहित दूरि धरत हे॥ कबहु करणफूल॥ कबहु तरकु
लीधरत हें॥ टेटी वड़ाऊ श्रीयमुनाजी रूप उत्तमला दूरकरत
हें॥ ता अप्रामलारूप रस पांन करि मगन होरि॥ नृत्य करत हें॥ ता
अप्रामलारूप रस पांन करणफूल रूप श्रीचंद्रावलीजी॥ अौर तर

कुली रूप सोरह हजार अग्निकुमारिका हे॥ यह अवस्था मे श्रीस्वांमि
नीजीने छूवी हें॥ दोऊ नेन कमल में अरुनस्वेत श्याम श्रीचंद्रावलीजी
रूप श्यामसुन्दरी॥ श्रीयमुनाजी रूप तांमे श्यांम तारा रूप श्रीस्वांमि
नीजी हें॥ बहुन की अनेक के स्वरूप श्रीठाकुरजी होइ चखचोज प
पनिके रसको अनुभव करत हें॥ नहां दोऊ मेन हें॥ सो दोऊ श्रीस्वा
मिनीजी हे तामे दूसरा रूपी श्रीचंद्रावलीजी वाम नेत्र रूपी श्री
स्वांमिनीजी हे॥ दोऊ करांम करांग फूल हें॥ ताते व्यापि वैकुंठ की
लीला को अनुभव श्रीस्वांमिनीजी श्रीठाकुरजी को करावत हे
मनि कहूं अपार होर जाई॥ ताते श्रीठाकुरजी व्यापि वैकुंठ की ली
ला ब्रज की लीला दोऊ ओर की लीला समग्र ब्रजभक्त के रसको अ
नुभव श्रीस्वांमिनीजी के अंगमे करत हें॥ ताते श्रीठाकुरजी श्री
स्वांमिनीजी के रोम रोम पर अभ्यास के परवस होइ रहे हें उद
र नासिका पर नकवेसरि नथ सुंदर तथा विराजमान हे॥ सो नथ
ना ही हें॥ श्रीठाकुरजी के मन रूप पंछी अत्यंत चंचल हे॥ समग्र
ब्रजभक्तन के रसपान करन में अत्यंत चलायमान हें॥ ता पंछी
के पकरन को कांम रूपी जाल बिछाय राखी हे॥ सो श्रीठाकुरजी
को मन पंछी रूपी अधरबिंब के रसपान करन को आयो॥ सो न
थ रूपी जाल मे मोती चुनी रूप फल को भोग करन लग्यो॥ तब श्री
स्वांमिनीजी ने नथ रूपी जाल को चलायमान करि श्रीठाकुरजी
के मन रूपी पंछी को बांधि लीयो॥ जहां जाको मन बध्यो सो तहां
सगरो देह प्रान धन सब बध्यो॥ ताते श्रीठाकुरजी श्रीस्वांमि
नीजी की भृकुटी की सोभा देखि के तन मन धन अपनो पर ब
स होय गयो॥ नथ या नथ मे मोती चुनी दोन्यो हें॥ मोती रूप वडे
वडे श्रीचंद्रावलीजी श्रुति रूपा गोपभार्या के सुधीया के भाव
ते गोलाकार श्रीयमुनाजी सोने को कुलमला हृदय रूप हें॥ श्रीरासु

नीरूप सोरह हजार कुमारिका के मुखीया हे॥ अलौकिक सुप रूप श्रीठा
कुरजी धारण करि अधरबिंब के रसको अनुभव करत हें॥ बीच को
मनिया श्रीयमुनाजी रूप॥ दसरा द्विसके मनीया श्रीचंद्रावलीजी रू
प॥ बोम भाग के मनियां सोरह हजार कुमारिका के रूप हें॥ ताते प्रभु
कालीगांठि पोत रूप होय मनिया के मिस हृदय पे पैठ रहत हें॥ ता
ते नीचे उरस्थल पर श्यांम कंचुकी कसि रहे हे॥ सो कंचुकी के बंध रू
प श्रीठाकुरजी के भुजा हें॥ सो पीठ पर बंधे हें॥ सो प्रभु अपने ह
थ सो बांधे हें॥ सो बांधि के गांठ अंगन कीए हें॥ अथवा कंचुकी
कीनां ई हें॥ श्रीठाकुरजी श्रीस्वांमिनीजी के हृदय मे विराजत हें
तिनकी कोई हृदय पर आर साड़ी के अंचल ऊपर रहो य श्री अंग
कांति झलकत हें॥ ता कंचुकी के ऊपर चोकी विराजमान हें
सो निकुंज की सिज्या रूप हे ताते श्रीठाकुरजी के ऊपर रहे चोकी
दोऊ पर स्परानि कुंज की बिहार लीला के भाव ते धारण कीये हें॥
सो तहां चोकी के निकट जड़ाऊ धुकधुकी हें॥ सो श्यांम पाट मे परोई
हें॥ सो धुकधुकी को मिस ते श्रीठाकुरजी हृदय मे विराजत हें श्यां
म पाट के ठमे हें॥ सो दोऊ भुजा में श्रीठाकुरजी के ठमें लपटि करि
हृदय सो लागि रहे हें॥ सो यह भाव चोकी को विचारनो॥ मोतीन की
सुंदर माला विराजत हें॥ सो नेक चंपकली हसुली हमेल तिलरी
दुलरी इत्यादि गहना सोने के कंठ मे विराजत हें॥ सो श्यांम कंचुकी
रूप श्रीठाकुरजी को पूजन श्रीस्वांमिनीजी करत हें॥ चंपकली
सो मानो दीपमालिका कीनी ई हें॥ मोतीन की माला सोई सुंद
र फल समर्पन कीये हें॥ हमेल सोई मानो पंच पात्र समर्पन
कीये हे॥ तिलरी सोई मानो अक्षत डारे हें॥ दुलरी सोई मोतीन की
माला जलधारा डारे हें॥ हसुली सोई चंदन को तिलक के टोलना
वत हें॥ सारी को अंचल सोई वस्त्र ढांपे हें॥ या भाव ते प्रभु को हृद

यमेराषिश्रृंगारकीयेहें॥ ताकेनीचे कलिकिंकिनी हें॥ सोश्रीठाकुरजी
कटिमेलपेटिरहेहें॥ सोप्रसंनहोइकेविहारसमयवाजनहें॥ सोश्री
ठाकुरजीगानकरतहे॥ तहगायइरेहें॥ सोश्रीठाकुरजीकेवाममे
घेरहें॥ साड़ीहे सोश्रीठाकुरजीकेश्रीअंगकोनीलांवरहें॥ केसरि
यासाड़ी सोश्रीठाकुरजीकोपीतांवरहें॥ जालसाड़ी सोश्रीठाकुरजी
कोप्रेमहहे॥ हरीसाड़ीमेदोउस्वरूपकीरागक्रमतहे॥ स्वंमश्रीठाकु
रजीपीतश्रीस्वांमिनीजीदोउमिलिकेहस्योभयोहे॥ सोइस्यादि
कभाववि चारिकेंसाड़ीवस्त्रपहराईये॥ चरणमेनूपुरघुंघरू
पगपानअनवटबीछीयाधारण कीयेहें॥ घुंघरूहे सोश्रीठाकु
रजीकेकुरनमेपोहोचीहें॥ नूपुरहे॥ सोश्रीठाकुरजीकीभुजामे
टिकरीदारवाजूहें॥ पगपानहे॥ सोसीतकालमेंश्रृंगारमेंश्रीठा
कुरजीकेमस्तकपरधरतहें॥ अनवटहे॥ सोश्रीठाकुरजीकेह
स्तकोश्रृंगारहें॥ अनवटकेऊपरफूलहे॥ बीछिया श्रीठाकुरजी
कीनासिकाकोभावहें॥ नहीयां श्रीठाकुरजीकेमुकुटकी टोपीको
भावहे॥ श्रीस्वांमिनीजीकेचरणनतेअन्यंगअरूनहें॥ सोश्रीठा
कुरजीकेअधरबिंवकोभावहें॥ यापकारसिरवातेनषपर्यंत श्री
स्वांमिनीजीकेश्रृंगारकीभावनांकरनी॥ यापकारदोउयुगलस्व
रूपकोश्रृंगारधराय॥ पाछे हाटेस्वरूपहेतोवेणुवेत्रधराई
ये॥ अथवेणुवेत्रकोभाव॥ श्रीनवनीतप्रीयाजी होइतोवेणु
पासधराइये वेत्रनही॥ वेणुस्वरूपानंदकोदांनरजमनकेकर
णार्थ हें॥ वेत्रस्वमर्यादाकोरूपमकहें॥ अध्यात्मकरंस्वारि
वनारसरादिइंद्रादिककोरसरूपस्वरूपकोदर्शनहोय॥ ताकेअ
र्थ हाटेस्वरूपमेंवेत्रधरावरूपककसोहें॥ श्रीनवनीतप्रीयान
नियास्वधनधोतीकाछनीसगरीमर्यादावस्त्रकोत्यागकीयो
ताकरिकेकेवलपुष्टिभक्तिकेरसअनुभवकरायलेकेहृदय

सोलगायचांपतहे॥ श्रीरचुंवनकरतहे॥ श्रीबालकृस्नजीकेस्वरूप
केआगेमर्यादाकेमतकहें॥ वेसनदिशिवादिदेवदेअपुहीतेयारस
केयोगवेत्रनांहोधरतहे॥ पाछेदर्पनदिखाईये॥ सोश्रीस्वांमिनीजी
केप्रतिबिंवश्रीश्रृंगारकोहें॥ तातेअद्दशहोयपइनांमकहेतहे॥ सोश्री
स्वांमिनीजीकेंआदर्शमेअपनोसर्वांगश्रीठाकुरजीदेखिकेवोहो
तप्रसंनहोतहें॥ श्रीस्वांमिनीजीअपनेआदर्शमेंदोउस्वरूपको
देषिकें वोहोतप्रसंनहोतहें॥ श्रीस्वांमिनीजीअपनेआदर्शमेदो
उस्वरूपकोदेषिकेंवोहोतप्रसंनहोतहें॥ अथवामस्तककोआभ
रणनासिकाकोश्रृंगारअपनेकोदीसततनहीहें॥ सोदर्पनमेअ
पनोसर्वांगश्रृंगारदेषिकेंप्रसंनहोतहें॥ काहेतेश्रीठाकुरजीश्रृं
गारमेंश्रीस्वांमिनीजीहे॥ श्रीस्वांमिनीजीकेश्रृंगारमेंश्रीठाकुरजी
हें॥ तातेअपनेअपनेभावदेषिकेश्रृंगारदेषिकेंअनेकभावप्रग
टहोतहे॥ याप्रकारदर्पनदिखायश्रृंगारकीयोहोय॥ सोप्रभुनसौंद
र्यकरिचरणस्पर्शकरे॥ याकोभावयहहे॥ चरणारविंदभक्तिरूप
हे॥ चरणकेस्पर्सतेभक्तिबढे॥ मनकेआनंदहोय॥ जेसेपुष्टिमार्ग
मेभगवदीयमेंमुख्यश्रीगिरराजजीहे॥ तातेहरिदासवर्यइनको
नांमहे॥ सोजवश्रीगोवर्द्धनधरकोस्पर्शहोतहे॥ तवआनंदपायह
र्षीभूतहोतहे॥ सोभागवतमेकहेहें॥ हातद्रामकृस्नचरणस्पर्श
प्रमोद इतिवाक्यात॥ धनिधनिहोहरिदासराई॥ सानिधसेवाक
रतसकलअंग तातेवलिमोहनमनभाई॥ १॥ कंदमूलफलफूलते
टधरिसिलासिंघासनरुचिरवनाई॥ कोमलतृनगायनचार
वेकोसीतलसुखदझिरनाजोवहाई॥ २॥ विविधिकेलिक्रीडतनो
मरवनसंगछिनउतरतछिनचढतजोधाई॥ रामकृस्नकेचरण
परसिकेपुलकितनपोहोयितरहतसदाई॥ ३॥ इनकोभागिक
होलगिवरनोकोमलकरलीयोजोउठाई॥ प्रेममुदितनयोकहे

तगोपिका गोविंद दूजनपर वलिवलिजाई ४ याप्रकार चरणपरसते
पुलकित नगिरराजै होत है ॥ तैसेई पुष्टिमारगीय पाछे वैस्नव श्रंगा
र करिकें दर्पन दिखाय कें चरण स्पर्श कर पाछे माला फूल की
बड़ी करनी का है ते ॥ फूल की माला प्रेम रजसं बंधी सगरे भक्तन के
भाव हैं ॥ ताते आगे श्रंगार भोग जाको गोपीवल्लभ कहेत हैं सो मुख्य
श्री स्वांमिनी जी के मनोर्थ की सामिग्री ॥ ताते गोपीवल्लभ नाम है ॥
ताते माला रूप अनेक प्रकार के भक्तन के आगे श्री ठाकुरजी
श्री स्वांमिनी जी के रस को अनुभव मेलजा रस भाव होय ॥ ताके
ल्हीये फूलन की माला बड़ी करनी हैं ॥ गोपीवल्लभ या स्लोक को भा
व जानों ॥ निमेत्र प्रीयो निज हृदय नाथं निरूपमा ॥ इति वचनात
१ इति स्नान व्याजात रनिनि न यातीरम हमति प्रीया उपारोसोधि
त विविधि वस्तु निसुमुखी ॥ या प्रकार श्री गुसांई जी स्वांमिन्याष्टक में कें
स्वामिनी जे त्रमेक हेहे ॥ ताते श्रंगार मे भोग या प्रकार धरनों ॥ श्रंर
श्रंगार होत मे भोग की कटोरी पास धरी रहैं ॥ सो कहे हैं ॥ कटोरी १ मे
मिठाई कटोरी १ मेवा की कटोरी एक मांषन मिश्री की ॥ तथा लडु
वा रहैं ॥ केवल षांड की वस्तु होई नो मिठाई कहेत हे ॥ गुलाब वता
सा मिश्री रा आदि सो श्री स्वांमिनी जी को अधरामृत केवल मिष्ट
जामे कछु मिल्यो नहीं ॥ मेवा की कटोरी मे बादाम किसमिस छुहारा
गिरी मिश्री के टूंक ॥ पिस्ता आदि ताये मिश्री ॥ श्री स्वांमिनी जी को अ
धरामृत ॥ बादाम श्री स्वामिनी जी के दंत ॥ किसमिस कुमारिका के
दंत ॥ पिस्ता अति रूप श्री चंद्रावली जी के दंत ॥ गिरी श्री यमुना जी
को अधररस ॥ सारिक सगरी व्रज की स्वांमिनी तिनको अधरा
मृत ॥ लडुवा श्री स्वांमिनी जी की कुच के भावते ॥ या प्रकार सगरी
स्वांमिनी के रस के भावते ॥ अनुभव करत श्रंगार धरावत हैं श्रं
गार पाछे वल्लभ कुल के गोपी वल्लभ वैस्नव के श्रंगार भोग तामे

अनसखड़ी मे पूरी मेदा की दोय भांति की एक खरखरी एक न
रम ॥ पूरी मैंन की खरखरी यो पड़ी मेदा की नरम श्री स्वांमिनी
जी के मनोर्थ की ॥ चूंन की खरखरी कुमारिका के मनोर्थ की षो
पड़ी यमुना जी के मनोर्थ की कटोरी रहती को १ कटोरी मे औटो
दूध ॥ तथा खीर ॥ दूधखीर ॥ श्री स्वांमिनी जी के मनोर्थ की दही
श्री चंद्रावली जी को मनोर्थ ॥ शरा श्री यमुना जी को मनोर्थ म
धानों कुमारिका को मनोर्थ मे बाल कहे ॥ षिवरूत कहे ॥ वहसो
न काल अनसखड़ी को दोय पत्ता एक साक ॥ यह व्रज की सग
री स्वांमिनी जी के मनोर्थ है ॥ तथा गोपीवल्लभ मे सखड़ी बनिके
वेतो धरे ॥ नित्य न बने नो एकादशी तथा द्वादसी को धरे ॥ एक भात
को ड्वरा ॥ एक दारि को ड्वरा ॥ पापड़ एक दोय सखड़ी एक कटो
री मे घी श्री स्वांमिनी जी को स्नेह ॥ भात श्री चंद्रावली जी को रू
प ॥ दारि श्री यमुना जी को प्रेम ॥ पापड़ कुमारिका को सील का
ल ॥ साक सगरी स्वांमिनी जी व्रज की तिन को प्रेम ड्वरा श्री चंद्रा
वली जी के कर ॥ सोने के श्री स्वांमिनी जी के रूपे के श्री चंद्रावली
जी के ॥ कटोरी श्री स्वांमिनी जी के कर ॥ सोने की श्री चंद्रावली जी
के ॥ रूपे के श्री चंद्रावली जी के ॥ सीसा के सखीजन के ॥ रांग के इत
जन के ॥ पीत की पुष्टिमारगीय वनस्पती हे तिन के ॥ या भाव ते भो
ग सराय आचमन मुखवस्त्र करि बीड़ी आरोगाई ये ॥ बीरी को प
त्र बाहिनी दिस धरीये ॥ दक्षण भाग श्री चंद्रावली जी बिराजत
हैं ॥ दोऊ स्वरूप को बीड़ी आरोगाय ॥ यह भाव विचारनो ॥ या पीछे
कीधोइ ॥ अथ मंदिर वस्त्र की भावना ॥ मंदिर वस्त्र कीजिये सो
सो रह हजार कुमारिका की सेवा है ॥ पाछे यह भाव करिये प्रभु
मात्र चरण की आसा ले द्वार पर खेलन जा नहैं ॥ सो नव श्री यसो
दाजी श्री दामा आदि सिषाम को सोपि दे नहें ॥ तब श्री ठाकुरजी

द्वारपर पधारिकें। अनेक भक्तन को दर्सन देत हें। काहू को बीरी देत हे काहू
हू को फूलन की माला देत हें। काहू को वांरगी सो समाधांन करत हे इत
ने व्रजभक्तन के भाव सो मिल्यो॥ सो ग्वाल आइ के श्री ठाकुरजी सो
प्रार्थना करत हें। अब गोदोहन को समय भयो हे॥ तातें गायन के
खरिक मे पधारिये। और गोदोहन करिये॥ अथ धैया की भावनां॥
तहां धैया करें ये। सो आरोगिये॥ सो ताकरि के सखान के संग मे अत्यु
हू में बल होइगो॥ यह सुनि के व्रजभक्तन कें हृदय को अत्यंत आति
जांनि श्री ठाकुरजी खरिक मे पधारत॥ तहां घर घर ते स्वांमिनी गो
दोहन के मिस दोहनी ले खरिक में आइ रही हें॥ पहिलें ते श्री ठाकुर
जी के पधारिबे की मारग देखत हें॥ सो अब कों देषि राक ही ओरस
गरी गोपी दोहनी ले के ठाढी भई॥ अपने अपने भाव ते श्री स्वां
मिनीजी की प्रार्थना करत हें॥ प्रथम हमको दुहि दीजिये॥ हमको
घर मे वो होत कांम हें॥ या प्रकार भाव साहित सगरी गोपीन के
वचन सुनि कें श्री ठाकुरजी नेत्र की कटाक्ष करि सगरे व्रजभक्त
न कों समाधांन करत हें॥ पाछे अनेक रूप धारण करि सगरी
गायन को दोहन करत हें॥ सगरे व्रजभक्तन को आनंद को दं
न करत भये॥ तब गोपीन ने वी ननी कौरे॥ जो ग्वालभोग लीने
तब उखरा मे ताजो दूध करि बुरा मिलाइ॥ पाछे रूपे की कटोरी
सो दूध सीरो करि जीये॥ पाछे आरोगिवे के ताय कहोय तब दू
ध को सिंघासन पास लाय के पांनी को हाथ दें हलाय करि के आ
रोगाईये॥ सो श्री स्वांमिनीजी को अधरामृत॥ पाछे आचमन अ
नुपांनया ते सगरो श्रम दूरि होई॥ अब बरा श्री स्वांमिनीजी कें
अंचल के भाव ने बीड़ा बीड़ी आरोगाईये॥ यह ग्वालभोग की
भावना करनी॥ प्रसिद्धि ग्वालभोग धरिवे को वैस्नव को अधि
कार नांही हें॥ भावना मन के शुद्ध भरे बिना भावना शुद्ध होय न ही

तहां मन शुद्ध भयो॥ तहां सगरी लीला को अनुभव होई॥ तब स
गरी वस्तु की योग्यतां हें॥ ताते भावना मे जो वानि आवें ताको दोष
कछू न होहे॥ अथ पवा ग्वालभोग धर हू मे आवें॥ सो जसोदाजी वा
त्सल्य रस के भाव सो श्री ठाकुरजी को पुत्र जांनि अत्यंत बल होय
वे के लीये॥ सो रह हजार कुमारिका हें॥ तिन सो कहत हे तहां नंद
राजभोग की सामग्री सिद्धि होई॥ तहां नांई मेरे पुत्र को धैया न क
रि कें आरोगावो॥ तब कुमारिका ताते दूध में बुरा डारि कें मधि
के फेन सोने की कटोरी में करि कें श्री ठाकुरजी को आरोगावत हें सो
जसोदाजी यह जांनत हें॥ जो मेरे पुत्र को धैया आरोगावत हें॥ प
रंतु यहां कुमारिका में श्री स्वांमिनीजी को भाव हें॥ ताते श्री स्वांमि
नीजी के अधरामृत को पांन श्री ठाकुरजी करत हें॥ या प्रकार की
भावना नंदालय की लीला मे बिचारिये॥ पाछे पालना नित्य झूल
त होइ तो पालना झुलाईये॥ पालना को भाव जन्माष्टमी के उत्स
व मे कहे हें॥ तहां उत्सव के दिन विस्तार भारी हें॥ नित्य को साधा
रन प्रकार हें॥ ताते कहत हे पालना झूलत हे॥ तथा जसोदा
जी के घर कुमारिका हे॥ तिन को श्री ठाकुरजी मे पति भाव हें ता
तें कुमारिका पालना के मिस हिंडोरा रचा लवि छावत हे॥ सो ता पर
श्री ठाकुरजी को पधराय कें विहार करत हें॥ तथा श्री स्वांमिनी
जी श्री ठाकुरजी के श्रृंगार धरावन कों जसोदाजी वाल भाव सो आ
वत हें॥ ताते पलना के मिस झूलन को श्री ठाकुरजी ते अनेक ली
ला करत हें॥ या प्रकार सगरी व्रज की स्वांमिनी हें तिन को विरह ताप
दूरि होत हें॥ ताते श्री गुसांईजी पालने को कीर्तन की यो हें तामे
कहे हें॥ प्रेकपर्यंकसयनं चिरविरहतापहरं॥ इति वचनात
या भांति पालनां मे मानादिक लीला मे मांनमोचन हू करत हें॥ ताते
श्री गुसांईजी कहे हे॥ मानिनीमानहरणं॥ पालना पर सुपेदी नी

नतापरचादरिविछायीयतहे॥ नीचेकीसुपेदीश्रीयमुनाजीके
भावतेहें॥ सोताकेऊपरसुपेदीकुमारिकाकेभावते॥ याहीप्रका
रसैयामेहूतीनसुपेदीएकचादरिविछावनी॥ तकीयाधरियेको
रीपासपड़गोपरधरीयें॥ पालनाकेभोगकीसांमग्रीपालनाके
भीतरधरीये॥ गादीसूंकेंर आगेएकवस्त्रसो ढांपिकेवेसनकीथ
पड़ीएककटोरीमे कवहूथपड़ीमेलोनलगाईये॥ कवहूसेववेसन
कीकटोरीमें॥ मांषनकीकटोरी॥१॥ मेवाकीकटोरी॥१॥ इननोभोग
अवस्यधरीये॥ वेसनकीथपड़ीएककटोरामें॥ श्रीस्वांमिनीजी
केकपोलनकेभाव॥ वेसनकेसेव श्रीस्वांमिनीजीकेअधरनके
अपेष्ठ(?)केभावते॥ मांषनमिश्री श्रीस्वांमिनीजीकोअधरामृतमे
वामें चारुचोजरु थपाति श्रीस्वांमिनीजीकेभावतें॥ याप्रकारजहां
ताईराजभोगकीसांमग्रीसिद्धि होय॥ तहांताई श्रीठाकुरजी
पालनामेझूलें॥ खिलोनारूपरजभक्तषिलावे॥ कोयलश्री
स्वांमिनीजीकोगांन॥ फिरकी श्रीचंद्रावलीजीकोनित्यहें॥ पपी
हाकुमारिकाकोगांनहें॥ इनपरभांतिभांतिकेरंगसोभांतिभां
तिसाड़ीजटूभक्तनकेभावते॥ श्रीठाकुरजीहूनृत्यकरतहे॥ चट
कनादेऊभक्तवृंदरीझमतहें॥ चकईभक्तनकोजांनहें॥ तवप्र
भूनेअकोकटाक्षरूपीडोरीसो॥ पकरिभक्तनकोपासखैंचिखैं
चिलेतहें॥ गेंदवड़ीश्रीचंद्रावलीजीकेकुच॥ मडोलीगेंदश्री
स्वांमिनीजीकेकुच॥ हथवेंगीसात्वकीभक्तहैसहाय॥ नृत्यकरि
वीनतीकरतहें॥ डुंडुनादोहरोभक्तनकेकरकोआस्पर्सताको
फोदनाहें॥ केकराआदिएकहरेडुंडुनाहें॥ सोव्रजभक्तनकी
हस्तकीचुटकीहें॥ आभूषणवाजतहे॥ औरखिलोनाकीत
वकड़ी॥२॥ तांमेएकमेहाथीघोड़ाऊंटकुत्ताबाघसिंहहिर
नरोझ इत्यादिकमहाभयानकरूपपुष्टिभक्तिकेसंगप्रभुजी

लाकरे॥ तहांमयीदामकनंदादिकआवे॥ गायजेआयनसकेलीलावि
रोधीकोभयानकहे॥ औरलीलासंबंधीकोरसात्मकस्वरूपहेए
कतवकड़ीमेसुकमेनाकोयलकवूतर वतककुहीआदिपक्षीहे
सोश्रीस्वांमिनीजीकेनिकुंजसंबंधीहें॥ छंदरमधुरवचनसुरत
केकुंजमेसंकेतकोसूचनदोऊस्वरूपकोहोतहे॥ कामोदीप
नसांमिग्रीहें ततइनकेसुंदरसुरहें॥ सोअवरामेपरतहें॥ तत
विहारकीउत्कंठाहोतहें॥ तवएकतवकड़ीमेजलकेजीवहे
मगरमछचकवाचकईकंसतेरंवगलासपारसहंसपनडुवी
इनकेदेखवेतेविहारजलतथांजमुनाकेतीरपुलिनकीविहारली
लाकोरसउदीपनहोतहें॥ याप्रकारखिलोनाजलस्थलकेभां
तिभांतिलीलासंवंधीहे॥ पालनाउत्लावतो सोविहारहें॥ पालनां
केकीर्तनगावतहे॥ सोप्रसिद्धिमात्रचरणवाललीलागावतहें
तथांगूढभावसोश्रुतिरूपाकुमारिकारसरूपलीलाकोगांन
करतहे॥ अथराजभोगकीभावनां॥ पाछेराजभोगकोसमय
जांनिप्रभुनकोसिंघासनपरपधराईये॥ तथारसोईघरमें
प्रभुकोसांगामाध्वीपरपधरायलेजैये॥ ताकोभावयहहेजो
सिंघासनआगेभोगआवे॥ तहांप्रभुकेपतंआवतहें॥ सोत
हांप्रभुआधीनलीलाहें॥ सोतहांभक्तआइकेभगवद्रसको
अनुभवकरतहें॥ रीतिकोरमण यहभावविचारनों जहां
रसोईघरमेप्रभुआपुपधारि राजभोगआरोगतहें॥ तहां
भक्ताधीनलीलाहें॥ सोतहांभक्तनकेरसकोअनुभवकर
तहें॥ सोतहांविपरीतरमणकोभावविचारनों॥ राजभो
गमेप्रथमधूपकरनों॥ अथधूपदीपकोभाव॥ सोताको
भावयहहे॥ जोप्रसिद्धिप्रभुनकेआरोगतमेंकाहूठोरकीदु
र्गंधनआवें॥ सुष्मभावयहहे॥ श्रीस्वांमिनीजीकेमुखारविंद

कोसौरभ दसोदिसा फेलतहे॥ सो ताकरि प्रभुको मन रमरागादिली
लामे आतुर होत हे॥ ताप।छे दीप हे॥ सोऊपर यह भाव हे॥ स्वामि
नीऊपर काऊकी दृष्टि परी होइ तो दृष्टिदोषदीप तें निवर्त होय
सोरह हजार अग्निकुमारिका के हृदयमे विरह हे॥ सोप्रभु के ऊ
परन्योछावरि करत हें॥ अपनो मनोर्थ सिद्ध होनार्थ तुलसी ध
रत हें॥ जो सामिग्रीनको अन्यसंबंध की इच्छा यो होय सो वजार
ते अन्य पादिक स्पर्श अंग्य मारगीयन ते लायो होइ॥ सो अन्यासंबंध
सकल दूरि होय॥ तुलसी हे सो पतिव्रता हे॥ अन्यसंबंध नहीं मे हे
ई॥ मुख्य भाव यह हे॥ प्रियागंध तुलसी सुरभि स्वररागप्रियं॥ श्री
स्वामिनीजी के श्री अंगको गंध हें॥ सो श्री ठाकुरजीको अत्यंत
प्रिय हें॥ स्वामिनीजीको संबंधमय सो सामिग्री भगवद योग्य
हे॥ सो ताते तुलसी अवश्य समर्पिये॥ पाछे संषोदिक करें संष
है॥ सो ताते तुलसी अवश्य समर्पिये पाछे संखोदिक करें संष
जलको आधिदैविक हें॥ ताते संखसो जल छिरके॥ अथ संषो
दिक को भाव॥ सो ताते प्रेमरतमय सामग्री होइ॥ अथवा संष
कीनांई श्री स्वामिनीजीको के हु तीन रेखा संयुक्त हें॥ सो तामे जल
रूप श्री स्वामिनीजीको अधरामृत हें॥ सो तासंबंध ते अत्यंत
प्रीति पूर्वक आरोगे॥ या भावते धूप दीप संखोदिक करनों अ
थवा धूप श्री स्वामिनीजी॥ दीप श्रुतिरूपा श्री चंद्रावलीजी के हृ
दय को विरह न्योछावरि॥ तुलसी सोरह हजार कुमारिका हें
तिनको पति भाव हे॥ ताते प्रबोधनी के दिन तुलसी के व्याह पि
स कुमारिका को व्याह सखीजन ने कीयो हें॥ या भावते संषोदि
क श्री यमुनाजी इत्यादि चास्यो जूथपति तिनके भाव हें॥ श्री
ठाकुरजी को राजभोग धरत हें॥ सामिग्री को भाव उत्सव आ
दि मे कहे हें॥ तासे फेरि यहां नांही कहे॥ राजभोग मे श्री यसो
दाजी के घरकी सामिग्री॥ तथां आठ मार्ड उपनंद आदि हें ति

नह के घरकी सामिग्री श्रुतिरूपा श्री चंद्रावलीजी के मनोर्थकी
सामिग्री हें॥ श्री स्वामिनीजी के मनोर्थकी सामिग्री सोरह हजा
र कुमारिका श्री नंदरायजी के घर हें॥ सगरी सेवा श्री ना कु
रजी करत हें॥ श्री यशोदाजी के मनोर्थकी सामिग्री वागाधरा
वत हें॥ अपने मनोर्थकी सामिग्री न्यारी करि आरोगावत हें
बागा आदि आभूषण सर्व मनोर्थ करत हें॥ श्री यमुनाजी स
वन मे मिलती हें॥ नंदालय मे हू सगरी स्वामिनी मे हें॥ तथा द
घमोन आदि गोपन के घर भोजन करन को पधारत हें त
पांगुमर सके भावते व्रजभक्तन के घर चोरी के मिस आरोग
त हें॥ तथां निकुंज मे श्री ठाकुरजी श्री स्वामिनीजी एक रस वि
राजत हें॥ सो तहां सबीजन राजभोग धरत हें॥ अध यह अनि
र्वचनीय हें॥ अथ छाक की भावना॥ तहां वन मे छाक श्री यसो
दाजी पठावत हे॥ सगरी व्रज की स्वामिनीजी हू पठावति हें त
हां आरोगत हें॥ इत्यादिक भाव राजभोग के हें॥ सो रासिक जन
जे पुष्टिमार्गी हे॥ तिनही के अनुभव योग्य हे॥ राजभोग आवें
रसोई कतीवासन माजे॥ रसोई पोते॥ सिंगारक तीन पपाटक
रें॥ दोय घड़ी के भीतर इतनो समय होय॥ तव भोग सरावेका
हेते॥ जो शास्त्र मे कहे हें॥ दोय घड़ी उपरांत दूसरो महूरत दूस
रो काल होइ हें॥ सो पुष्टिमारग मे बाकनांही हे॥ परंतु अपनो
कार्य के अर्थ अवेर न करे॥ वद्दत्र मकुल केसे श्री ठाकुर तथा
वद्दत्र भकुल के दर्शन में अवेर लगे तो चिंता नाही॥ परंतु तो
हू आर्ति मन मे राखें॥ लौकिक वैदिक के लीये कवहू टील क
रनी नही॥ और उतावल न करनी॥ यह सर्वोपर सेवा हे॥ परं
तु लोक में जीव को अपने कार्य आय परत हें॥ तहां टील नांही
करनी॥ वेगि करने ते चिंता नांही॥ प्रभु केसे वा अर्थ अवेर नहे

इ ॥ फूलमंडली वांधते सांमिग्री करे तोंढील हू होय तो चिंता नी
ही ॥ तो हू मनमें आर्ति करिवेगी कीनों ॥ प्रथम आचमन कराय
मुखवस्त्र करि बीड़ी आरोगाईयें ॥ पाछे चोकी उठाय धोय मे
द्दिरवस्त्र करि चरणारविंद पर तुलसी समर्पिये ॥ माला पह
राईये ॥ पंखा सिज्यामंदिर मे दिवारी तांई सिंघासन पे विजे क
रमी तांई ॥ सिज्या भोग वीड़ा माला साजि धरीये ॥ सिंघासन पे
दोऊ ओर प्रभु के तकीया धरीये ॥ सो भक्तन के दोऊ भुजा रूप हैं
अथवा श्री स्वांमिनीजी के भावते वांम भाग श्री चंद्रावली
जी के भावते हैं ॥ दक्षरा भाग दक्षरादि साके तकीया पर भुप
वस्त्र श्री स्वांमिनीजी को अंचल श्री चंद्रावलीजी हस्त पे ली
ये ठाढी हैं ॥ ठाढे स्वरूप होइ तो श्री हस्त मे वेणु धरीयें वेत्र ल
गाय कर सो ठाढो करीयें ॥ पाछे सिंघासन सों लगाय खंड मां
ड़िये ॥ तांमे सिढी तीन तीन्यो स्वांमिनीन के भावते ॥ श्री चंद्रावली
जी गोप माध्याहै ॥ जो करि पाछे ठाढी हैं ॥ बीच की सिढी कुमारिका
के वालक हैं ॥ प्रभुनिकट सिढी श्री यमुनाजी हैं ॥ तीन्यो खंड पर गा
द्दी रुई की बिछाईयें ॥ सो तीन्यो भक्तन के हृदय रूप हैं ॥ गादी श्री
स्वांमिनीजी के हृदय रूप हैं ॥ खंड पर चारि खिलोनान की तबक
ढ़ी धरीये ॥ दोइ वांम ओर एक दक्षरा ओर वांम ओर श्री स्वां
मिनीजी ओर कुमारिका के भावते ॥ दक्षरा ओर श्री रूपा श्री
चंद्रावलीजी श्री यमुनाजी के भावते ॥ वेणु वेत्र रूप श्री स्वांमिनी
जी वेत्र रूप श्री चंद्रावलीजी है ॥ श्री नवनीत प्रीयाजी के पास वे
त्र नांही ॥ सो ऊपर भाव कहि आये हैं ॥ निरावरण रूप में मर्या
दा को दूरि कीयो ॥ अथ खंड पाट को भाव ॥ पाछे खंड सो लगा
इ पाट बिछाईये ॥ तापर रुई की खोल सो तापर सुपेद वस्त्र
पाट ललिताजि कसखी के भावते हैं ॥ वरसारि त्रुम रंगीन वस्त्र

तापर रुई की खोल श्री स्वांमिनीजी के हृदय को रूप हैं ॥ सो तापर
दोऊ सिसगादी है ॥ वांम ओर श्री स्वांमिनीजी की वेठिवे की दक्षरा
भाग श्री चंद्रावलीजी की वे ठाकुरजी की वेठिवे की ॥ श्री स्वांमि
नीजी वेठे ॥ गादी मे श्री ठाकुरजी के हृदय को भाव हैं ॥ गादी पर श्री
ठाकुरजी वेठे ॥ तांमे श्री स्वांमिनीजी के हृदय को भाव है ॥ सो ताके
नीचो वीच चोपड़ मांड़िये ॥ अथ चोपड़ को भाव ॥ काठ की हाथी
दांत की रूपे की सोने की ॥ तहां सोने की श्री स्वांमिनीजी के भाव
ते ॥ रूपे की श्री चंद्रावलीजी के भावते हाथी दांत की श्री यमुनाजी
के भावते ॥ याही प्रकार काष्ट की अग्निकुमारिकान के भावते ॥
अथ सतरंज नथा वाधवकरी को भाव ॥ याही प्रकार सतरं
ज नथा वाधवकरी मे चास्यो जुथपति को भाव विचारनों ॥ सो तो
मे सोरह गोट है ॥ सो तामे चारि ४ एक एक घर मे राखनी ॥ सो
चास्यो के घर है ॥ सो न्यारे न्यारे निकुंज है ॥ चारि चारि याते राजसी ता
मसी सात्वकी रस उदीपन अर्थ एक एक निकुंज ॥ याभांति चास्यो
जुथपति मे रस रूप रागादि कजोनिये ॥ अलौकिक चास्यो
के न्यारे न्यारे ॥ सो चास्यो के वस्त्र के भाव विचारिये पीरे श्री स्वां
मिनीजी के भावते ॥ स्यांम श्री यमुनाजी के भावते ॥ लाल श्री चं
द्रावलीजी ॥ हरे अग्निकुमारिका के भावते हैं ॥ एक एक घर मे चो
बीस चोबीस कोठा है ॥ सो द्वादस अंग भक्तन के द्वादस अंग प्र
भुन के ॥ तथा चोबीस निकुंज मंदिर रूप सुंदर धरे हैं ॥ याप्रका
र छांनवे कोठा हैं ॥ तांमे चोरासी आसन कांम शास्त्र के हैं ॥ द्वाद
स महीना करि निस्तालीला को सूचन करत है ॥ कवहू ने रह म
हीना होत हैं ॥ सो छांनवे घर चास्यो ओर ॥ ओर बीच मे एक घर
सो अधिक महीना को भाव हैं ॥ याप्रकार सब लीला रमण हैं ॥ स
घवा बीच को घर है ॥ सो नंदालय है ॥ सो तहां श्री नंदरायजी य

सो हांजी विराजत हे श्रीठाकुरजी सहित ताते वीच कोघर वडो हे
चास्चो ओर वृजभक्तन के निकुंज इत्यादि कभावते चोरासी कोस
के चोरासी कोठा हे ॥ सो वृजवास की द्वादस वर्ष तांई की लीला वृजमें
रहस्य विचारिये ॥ ताते सारस्वत सेमे प्रभु समपुरा पधारे ॥ ताते द्वादस
वर्षकी भीतर की स्वरूप की भावना करें ॥ तामे वाल भाव ओर किसोर
सव आयगये ॥ गो वर्द्धन उठायो ता दिन ते किसोर श्रीजी के यहां निकुं
ज लीला हे ॥ सो तो सरूप मे तं दस्तयकी वालक लीला आदि याभावते
चोपड़ के घर गिनावते ॥ तहां पासा तीन हें ॥ सो राजसी तांमसी सात्व
कीभाव दोऊ को लीला करत हें ॥ सो जव प्रभु पासा खेलें तव रीति को
रमण हें ॥ जव भक्त पांसा डारे तव विपरीत रमण हें ॥ ताते कवहूं भ
क्त को तांमस होय ॥ तव प्रभु सात्वकी होय ॥ कवहू प्रभु को लीला
करत मे तांमस होई ॥ तव भक्त सात्वकी भाव को धारण करे ॥ ओ
र जव राजस होई ॥ तव दोऊ स्वरूपन को संग होई ॥ नारिन को भोग
करिवे की इछना भक्त करें ॥ सोई प्रभु करे ॥ सोई भक्त करें ॥ ताते ती
न्यो गुण संयुक्त लीला होई ॥ ताते पासा तीन ही हें ॥ एक एक पांसा
मे चोदह चोदह आंक हें ॥ सो चोदह चोदह विद्यासे पूरण हें सो
चोपक हे ॥ यमुनाजी सव मे हें ॥ दोऊ पासा मे श्रीठाकुरजी श्रीस्वां
मिनीजी युगल स्वरूप हें ॥ तीसरे पासमे वृजकी स्वांमिनीजी आ
इगई ॥ तीन्यो पासान मे आंक ४ रमरो ॥ धीरज विद्या ॥ १४ ॥ अधीरा वि
द्या ॥ १४ ॥ धीराधीरा विद्या ॥ १४ ॥ धर्म ॥ ६ ॥ पांसा ॥ १ ॥ चतुर्थ जप प्रभु
५ ॥ जुगल रूप ॥ २ ॥ दोऊ मिलिकें एक भये ॥ ताको भाव यह हे ॥ सोर
ह कला श्रीठाकुरजी जी ॥ सोरह कला श्रीस्वांमिनीजी द सर्व प्र
कार के भक्त हे ॥ इत्यादि कभावते चोपड़ खेलत हे ॥ तहां प्रभु खिलव
कवहू हारत हे ॥ कवहू भक्त हारे हे ॥ प्रभु हारे तव भक्त विपरीत
रमण करत हें ॥ जव भक्त हारे तव प्रभु रीत को रमण करत हे

या प्रकार चोपड़ को भाव गोप्य वो होत हें ॥ ताते उत्सव मे प्रसंग होय ता
दिन अवस्य चोपड़ विछाईये ॥ आठमो दिन सतरंज तथा वाघ वक
री धरीये ॥ चोपड़ श्रीस्वांमिनीजी के भावते ॥ वाघ वकरी सोरह हं
जार अग्निकुमारिका न के भावते कीये श्रीयमुनाजी तीन्यो भक्तन
के मनोरथ भीतर हें ॥ अव वाघ वकरी को भाव कहत हें ॥ वकरी सोर
ह वाघ होई ॥ तथा एक हे ताको भाव हें ॥ कवहू भक्त वाघ सो विपरी
त रमण करि प्रभु को अपने वस करत हे ॥ कवहू श्रीठाकुरजी वक
री की नांई रीति को रमण करि भक्तन को प्रभु अपने वस करत हे
कवहू श्रीठाकुरजी वकरी की नांई आज्ञा अनुसार चलत हे ॥ कवहू
श्रीठाकुरजी वाघ की नांई रीति को रमण करि भक्तन को प्रभु अ
पने वस करत हे ॥ तव भक्त वकरी की नांई श्रीठाकुरजी कहे तहे
सो सो भक्त करत हें ॥ वकरी सोरह चारि चारि यूथपति के भावते
राजस तांमस सात्व क निर्गुण रूप सो सारि चोपड़ के भाव मे कहि
आये हें ॥ चारो के वाघ दोई के भाव यह हें ॥ एक श्रीठाकुरजी रूप एक
श्रीस्वांमिनीजी के भावते ॥ तथा श्रीचंद्रावलीजी ओर श्रीस्वांमिनी
जी दोऊ वाघ रूप हे ॥ तहां प्रभु वकरी रूप दोऊ श्रीस्वांमिनीजी के व
स भये हें ॥ ताते वां मध्य श्रीस्वांमिनीजी द क्षणभाग श्रीचंद्रावली
जी हें ॥ श्रीठाकुरजी को घेरि वेठे हें ॥ या प्रकार ते दोऊ वाघ दोऊ ओर ध
रत हें ॥ एक वाघ धरे ताको अभिप्राय यह हें ॥ तहां मुख्य श्रीस्वांमि
नीजी को भाव हे ॥ दंपति रस प्रभु वकरी श्रीस्वांमिनीजी वाघ मां
नादिक प्रसंग सो विचारनो ॥ कवहू वकरी वीस हें ॥ तहां चास्चो जू
थपति मे चारि चारि प्रकार की स्वांमिनी हें ॥ तिनमे एक एक स
खी तरंगिनी हें ॥ तामे पांच पांच वकरी इकठी धरत हे ॥ घ स्वो
स ट हे ॥ ताते चोसट कला जो विद्या हे ॥ एक एक स्वांमिनी मे सो रहसो
रह कला संपूर्ण ॥ ताते चोसट विद्या निधान चतुर स्वो सट कला हेत

दपिभोरियापद के अनुसार ते वाधवक रीध रत हैं॥ और सत रंज हे सो
अभिरूपा श्री चंद्रावलीजी के भावते॥ तहां परक्रियाभावते राज
सी भक्त के मनोरथ हैं॥ ताते हाथी चारि घोड़ा ४॥ ऊंट चारि उजीर
दोय हैं॥ पात्साह दोय॥ प्यादे सोरह॥ या प्रकार सगरे बतीस हैं॥ ता
ते भक्त के प्रभु कें सोरह सोरह श्रृंगार हैं॥ सो याते जो राजसी भ
क्त को श्रृंगार वो होत प्रीय हैं॥ ताते आप हू आछो आरोगत हें।
और प्रभु को हू आछो आरोगावत हें॥ और आप हू आछो प
हरे॥ और प्रभु को हू आछो पहरावें॥ ताते यह सतरंज को खे
ल राजान को हे॥ ताते बतीस गोट हे॥ तामे हाथी चारि कारिके गज
वनलीला पंचाध्याई मे कहे हे॥ गंधर्व पत्नि भिरनेइ इन॥ अविस
हू आंतो गजी॥ भिरिमं जारि विभिन्न संयुक्तो भस्पर्श युवतिभि
परिषिच्यमानं प्रेम रोसिन प्रहसती भिरत स्ताेगवै॥ मां
ति के कुशाम व वर्षभि रो स्नाम नो रेमे स्वयं॥ स्वकी रति रभग
जे इंद्रलीलरग॥ या प्रकार के विहार ताते हाथी हें॥ चारि हे॥ सो चा
रि प्रकार के अभिरूपा मे हें॥ राजसी तामसी सात्त्वकी निर्गुना
अथवा चारयो जुथपति श्री स्वांमिनीजी के भावते हें॥ घोड़ा चा
रि हें॥ तामे यह भाव हें॥ भक्तरूप घोड़ा सो पवनते वेगि या प्रकार
श्री ठाकुरजी को ले निकुंज मे जहां गुरुजन गोप कोई जाइ न स
कें॥ ऊंट चारि हे सो ऊंट की पकड़ ऐसी हें॥ जाको पकड़े ताको फेरि न
छोड़े॥ तेसे ई श्री ठाकुरजी के अंग अंग चारि जुथपति श्री स्वांमि
नीजी ने पकरि राखे हे॥ अथवा ऊंट वो हो तबोड़ लेत हें॥ ताते श्रु
ति रूपा हें॥ सो गोप भार्या हें॥ अनेक प्रतिबंध रूप गृह सत हे॥ प
रंतु तन मन धन करि सगरो श्री ठाकुरजी मे लगायो हे॥ यह ध
र्म सर्वोपरि भारी ते भारी लीयो हे॥ और ऊंट वो होत चले॥ सो श्रु
तिरूपा हू प्रभु संबंध के अर्थ हे॥ दधि वेचन के मिस वेनुनाद

सुनत ही॥ अनेक उपाय करि तत्काल श्री ठाकुरजी को आइके
मिलत हें॥ सो पंचाध्याई मे कहे हे॥ पति पुत्र आदि गृह कार्य
छोड़ि कें वेणुनाद सुनत ही दोऊ पात्साह सो जुगलस्वरूप श्री ठा
कुरजी श्री स्वांमिनीजी हे॥ दोऊ उजीर सो दोऊ सखी आज्ञाकारी हें
तथा दोऊ पात्साह सो दोऊ नित्यसिद्धा श्री स्वांमिनीजी श्री यमु
नाजी॥ दोऊ उजीर सो श्री चंद्रावलीजी श्री स्वांमिनीजी सो प्रगटी
हे॥ ताते श्री स्वांमिनीजी को दासभाव करत हें॥ ताते उजीर क
हेत हें कुमारिकाका त्यायनी देवी को मिस करि कें श्री यमुना
जी के रेणु की देवी मिस श्री यमुनाजी को पूजन कीयो॥ तब श्री
यमुनाजी ने श्री ठाकुरजी को मिलाये॥ कुमारिका के मनोरथ
सिद्धि कीये॥ सो यमुनाष्टपदी मे कहे हें॥ श्री गुसांईजी ने कुमारि
का मयूर के॥ ताते यमुनाजी को दासत्व कीयो हें॥ ताते कुमारिका
के उजीर कहे हे॥ अथवा सगरो राज पात्साह के आगे उजीर
ही करत हे॥ ताते पात्साह उजीर मे भेद नांही एक ही हें॥ ते से य
हां श्री आचार्यजी पुष्टिमारग प्रगट कीयो॥ सो मुख्य श्री स्वांमि
नीजी रूप हें॥ पाछे श्री गुसांईजी प्रगट होइ सगरे पुष्टिमारग
की रीति प्रगट कीये॥ मुंख्य परबिस्तार कीये॥ श्री चंद्रावली
जी रूप ताते उजीर कहे हे जेसे हो सगरी कुमारिका सेवा श्री ठा
कुरजी की करत हे॥ श्री स्वांमिनीजी की सेवा करत हें॥ श्री
स्वांमिनीजी की सेवा कीये ते श्री ठाकुरजी कुमारिका के ऊपर
वो होत प्रसंन होई॥ सगरी सेवा मांगि लेत हें॥ ताते श्रुति रू
पा और कुमारिका को उजीर कहे हें॥ परंतु स्वांमिनीजी पा
त्साह रूप दोऊ नित्यसिद्धा प्यादा सोरह हे॥ सो अष्टसखी श्री स्वां
मिनीजी की हे॥ अष्टसखी श्री ठाकुरजी की हें॥ तथा अष्टस
खी श्री चंद्रावलीजी की मांनो॥ अथवा सोरह प्यादे हे सो सोरह

कलारूपहे ॥ सो कांमक रताप्रगट करत हैं ॥ विहार मे ताते आज्ञाका
रीप्यादे रूप हे ॥ सो आदि सगरी व्रजकी स्वांमिनीजीको भावप्या
दे में जानने ॥ ताते सगरे व्रजभक्तन के संग रमनाई हैं ॥ ताते पा
को नांम सतरंज कहेत हैं ॥ सतक कहीये सो कुमतक हीये हजा
र कुसतक हीये ॥ अपार कोटान कोट स्वांमिनीन को रंजन
प्रसंन करत हैं ॥ सो सब सौभन करि ताते सतरंज को भाव
गोप्य हैं ॥ या प्रकार चोपड़ सतरंज बाघबकरी की भावना
करि बिछाईये ॥ अथ खिलोनान की भावना ॥ पाछे सिंघासन के दो
ऊ ओर खिलोनान की नवकड़ी धरीये ॥ हाथीदांत के खिलो
ना वांई ओर ॥ काठ के खिलोना दक्षरा ओर ॥ ताको भाव य
हहे ॥ जो हाथीदांत के खिलोना श्रीस्वांमिनीजी के मनोर्थ
के हैं ॥ श्रीस्वांमिनीजी बनवाइ धरत हैं ॥ सो खिलोना के
मिस गजवत्त विहार लीला के मिस भाव उद्दीपन करत हैं
ओर के खिलोना दक्षरा भाग सो श्रीचंद्रावलीजी के
मनोर्थ लाल धरत हे ॥ लाल रंग अनुराग सुचवत हैं ॥ ताते
लाल खिलोना के मिस श्रीचंद्रावलीजी अपनो अनुरा
ग श्रीठाकुरजी को निवेदन करत हैं ॥ पाटके दो चोबीच
राज्क पालीन षीधरीये ॥ ताते यह भाव विचारिये ॥ जो श्री
ललिताजी के मुखारविंद को भाव हे ॥ दो ऊ जने हाथ धोवे
तथा चर्चित तांबूल देइ याभावते ॥ पाट के ऊपर गेंद दोय
धरियें ॥ कहू जड़ाऊ कहू सोने की ॥ कहू रूपे की कन
हस्तकी ऊपर रेसम कलाबत्तू की जाली ॥ कहू हाथी
दांत की कहू काष्ट की ॥ सोने की गेंद श्रीस्वांमिनीजी के कु
च के भावते ॥ तथा जड़ाऊ गेंद श्रीयमुनाजी के भावते ॥ रूपे
की गेंद श्रीचंद्रावलीजी के ॥ सूतकी गेंद ऊपर रेसम कला

वस्त्रकी जाली सोरह हजार कुमारिकाके कुच के भावते ॥ कुमारि
काभाव सहित अपने हाथसो रचि के बनाई हैं ॥ श्रीयसोदाजी
कोपहरावत हैं ॥ जो मेरे पुत्र के खेलिवे के लीये गेंद बनावत हैं
हाथीदांतकी गेंद व्रजकी सगरी गोपी हैं ॥ सो तिनके कुच के
भावते ॥ अपने कुच के अनुसार करि श्रीठाकुरजी को यह भाव
जनावत हैं ॥ जेसे रास पंचाध्याई मे गजवत लीलाकी ऐसे ते से
ई अब के रिकरो ॥ याभावते हाथीदांत की गेंद हैं ॥ काष्ट कीगे
दहे सो ललितादिक सखी सहचरी तिनके भावते हैं ॥ नाना प्र
कार के रंगकी कहू लाल कहू पीरी कहू हरी कहू ल
हरीयाकी ॥ इत्यादिक वस्त्र पहरे हैं ॥ बीच दोइ गेंद के पास लग
गाय डोरी श्रीठाकुरजीके पास लगाइ धरत हैं ॥ याभावते
डोरू श्रीठाकुरजी हस्त नीचे करि गेंद को पकरत हैं ॥ अथ
वा दो ऊ बचीव्रज भक्तन के भुजाके भावते हैं कहू सोने
की कहू जड़ाऊ कुच रूपे की कहू काष्ट की ॥ सोनेकी श्री
यमुनाजी के दोऊ भुजा काष्ट की बचीकुमारिकाकी दोऊ भु
जा हैं ॥ इत्यादिक भाव विचारिये ॥ दर्पनादि रखाइ सिंघासन पा
स धरीये ॥ अथ दर्पनकी भावना ॥ दर्पन श्रीस्वामिनीजी के
स्वरूप हैं ॥ अथवा श्रीस्वामिनीजीको प्रतिबिंब हैं ॥ तातें
श्रीठाकुरजी अपनपे देखि अत्यंत प्रसंन होत हैं ॥ आपने
हृदयमे श्रीस्वामिनीजीको देखत हैं ॥ श्रीस्वामिनीजीके
हृदयमे अपनेको देखि अत्यंत प्रसंन भरे ॥ और प्रकार
तीकरीये सो व्रजभक्त अपने हृदयको तापर न्योछावरि
करत हैं ॥ पाछे दर्पनादि रखावत हे ॥ सो याते श्रीस्वामिनी
जी अपने हृदयमें धारिकें श्रीठाकुरजी को निकुंज मे पधा
रत हैं ॥ तथा दर्पनादि रखाय अपने निकुंज के संकेत सुच

नित्य. ३०

नकरत हैं। जो फल नीको र मिलेगो। पाछे फूलकी माला बड़ी कर
त है सो याते फूलकी माला रूप सगरी ब्रजकी स्वांमिनी है। सोति
नको आज्ञा प्रभु देत हैं। जो तुम अपने अपने कुंज में पधारो
सगरी स्वांमिन्यो सिद्धि करो। हम आवेंगे। अब यवा श्री स्वांमि
नीजी के कुंज में श्री ठाकुरजी को पधारनो है। ताते सगरी स्वां
मिनी के आगे समासाहित। ताते माला बड़ी करत हैं। पाछे सि
आपाते सिंघासन पर्यंत पेड़ो बिछावत हे ॥ **अथ पेड़ेकी**
भावना ॥ सो ब्रज की सगरी स्वांमिनी प्रभु पधारे जांनि पावड़े
बिछावत हैं। या प्रकार राजभोग पर्यंत भावना करिये। पाछे
मंदिर के किवाड़ लगाईयें। सो दोऊ किवाड़ श्री स्वांमिनीजी के
नेत्रन के पलक हैं। सो तिनके भीतर श्री ठाकुरजी सदा बिरा
जत हैं। पाछे ताला मंगल कीजे। ताला श्री स्वांमिनीजी के हृ
दयकी मुठी है। तैसे मुठी खोले ते रत्न प्रगट होई। ताको दर्शन
होय वंधी मुठी में काहूको दर्शन न होई। तैसे ताला खुले प्र
भु दर्शन देई। ताला याते श्री ठाकुरजी को श्री स्वांमिनीजीने
अपनी मुठी करी वांधि अपने वस करि राखे हैं। और केवस
नाही हैं। ताते जो श्री स्वांमिनीजी को आश्रय करि श्री स्वांमि
नीजी प्रसंन होई। अपनी मुठी खोलि दर्शन करावें। तब और
को होई। ताही ते श्री आचार्यजी महाप्रभु स्वांमिनी रूप हैं। ता
ते श्री ठाकुरजी इनके वस हैं। ताते पुष्टिमारगीको एक
दृढ आश्रय श्री जी आचार्यजी महाप्रभुनको करनो। पाछे
वैस्नव सो मिलि महाप्रसाद लेनो। काहेते। जैसे वल्लभकु
लमें गुरु जांनि दासभाव राखत हैं। तैसेई वैस्नव को दास
भाव राखनो। काहेते जो वैस्नव में यह भाव करे श्री आचार्य
जी श्री गुसांईजी श्री ठाकुरजी सहित सबनके भीतर हैं। ताते

वल्लभकुलमें श्री ठाकुरजी बड़ो जांनें। तैसे वैस्नव जांनि दास है
ई रहै। दासधर्म जब सिद्धि होय। तब इनकी झूंठि न होइ सो लेई
दास होय सो झूंठि न लेई। और पुष्टिमारगमें वल्लभकुल औ
र श्री ठाकुरजी इनकी झूंठि न बिना और झूंठि न लेइ तो अपराध है
इ जाई। और झूंठि न वैस्नव की न लेई तो दास धर्म हृदय में
आवे नाही। ताते श्री गोकुलनाथजी कहत हैं। श्री आचार्यजी
लिखे हे ता सों मिग्नी में प्रथम जाके अर्थ कारिये। पाछे ताही
की झूंठि न भई। ताते प्रभुन की वस्तु में ते काऊ को देनी नाही
ताते महाप्रसाद की पातरि पहले वैस्नव की काढनी। ता पाछे
सगरो महाप्रसाद वचो। सो वैस्नव की झूंठि न भयो। ताते वै
स्नव की पातरि धरि महाप्रसाद लेई तो हृदय में दासधर्म आवें
सर्व पदार्थ मिलें। तहां यह संदेह होय। जो वैस्नव पुष्टिमार
गीय मिले तो आछो। कहूं न मिले तो कैसो करें। महाप्रसाद
लीये बिना सरीर चले नाही। वैस्नव के महाप्रसाद लीये बि
ना महाप्रसाद लेई तो दासधर्म हृदय में आवे नाही वैस्नव क
हूं न मिले तो कैसो करे। तहां कहत हे श्री आचार्यजी महाप्र
भु श्री सुवोधनीजी में लिखे हैं। और श्री गुसांईजी टिप्पनी
में लिखे हैं। पुष्टिमारगीय भक्त ब्रजभक्त हैं। तिनको दूसरो
स्वरूप गाय को है। ताते गाय के लीये यथा शक्ति महाप्रसा
द में ते काढि। तहां सगरे पुष्टिमारगीय भगवदीनकी झूं
ठि न भई। पाछे महाप्रसाद लेइ तो कछु दोष नाही। ताते गा
यको महाप्रसाद काढनो। वैस्नव होइ तो उनसों मिलिके म
हाप्रसाद लेइ। महाप्रसाद में अपने सरीर को भोग न वि
चारें। जो मेले के पुष्टि होऊ यह भाव विचारे। जो महाप्रसाद
लीये ते कछु कछु भगवद सेवा बनेगी। सो मिग्नीमें लिख्यो

सुधस्त्रो होई सोरसोई करनवारी सोकहीये ॥ आगे सुधारिकें रसो
ईकरें ॥ रसोई करत होई ताके ऊपर वो होनही तिरणषिये ॥ यामा
रगमें रसोई परमफलरूप हें ॥ या प्रकार महाप्रसाद ले मुख
हस्तधोयकें पाछे बीड़ी वैस्नवको देके आपलीजे ॥ बीड़ी श्रीठा
कुरजी आरोगे होय ॥ सो सेवा करनवारो लेई ॥ जिनकेमांथे श्री
ठाकुरजी विराजत होई ॥ तिनहीको अधिकर हें ॥ काहे ते जो श्री
ठाकुरजी श्रीस्वांमिनीजी मिलिकें आरोगत हें ॥ पाछे उगार
लालितादि सषीनको देत हें ॥ और को अधिकार नांही हें ॥ औ
र बीड़ा हे ॥ सो श्री ठाकुरजी सब समागोपनको वांटि देत हें ॥ ता
ही ते श्रीगुसांईजी बीड़ा औरको देत हें ॥ बीड़ी नांही देत हे
पाछे व्योपार स्वार्थ जो होइ तो जैयें ॥ आलस होइ तो दोय घ
ड़ी चारि घड़ी पोढियें ॥ जो उत्थापन में अवार न पड़े यह विचा
रि पोढे ॥ पाछे उठिके पोथी बांचनों ॥ आपु को बांचिवे को सां
न न होइ तो काहू वैस्नव सो बचाइके श्रवण करनों ॥ काहे
ते जो श्री आचार्यजी लिखे हें ॥ निवेदनंतु स्मर्तव्यं सर्वथा ता
दृशैर्जनैः ॥ तादृश सो कहा ॥ जो यह पुष्टिमारगकी रीति जा
नत होई ॥ सो ताही के संग स्मरणमें सगरी वात जानेंगे ॥ ताते
तादृश को कहे हें ॥ ता पाछे उत्थापन को समय प्रहर एक दिन
रहें ॥ तब ही तांई तारा रवें ॥ जो मानिक हूं श्री ठाकुरजी को श्र
वे रहोय ॥ सो देहकृत्य करि पाछें न्हाय ॥ अपरस वस्त्र प
हरि चरणामृत लेतिलक करीये ॥ ऊपर देह शुद्ध स्नानकी
रो ने होई ॥ ताते चरणामृत लीये विना भगवत्सेवा की योग्य
ता नांही हें ॥ चरणामृत ते नौतन सरीर होय जाय सेवायो
ग्य नाते चरणामृत लेनो ॥ पाछे उत्थापन की सांमग्री सि
द्धि करीयें ॥ आम को करी खरबूजा पना आरता तीजते रथ

यात्रा तांई ईखत थांई खको रस प्रबोधनी ते डोलतांई छुकी दार रथया
त्रा ते जन्माष्टमी तांई मंगला ते राजभोग तांई पाछे नही ॥ सिखर
रा मंगला तें लेकें राजभोग तांई पाछे नही उत्सव के दिन कटीन
ही ॥ तीन कूदा करीये ॥ उत्थापन के समय में बाफलादिक सिद्धि
करि ॥ पाछे घंटा तीन वार बजाय उत्थापन करीयें, देडोन मंदि
र को करि मीन रजैये ॥ सिंघासन ते सिज्यातांई ॥ पेड़ो विछत्रो हे
इ सो उठाय दर्शनको किमाड़ खोलिरे ॥ काहे ते पेड़ो श्रीस्वांमि
नीजी के उतारिवेको भाव हे ॥ प्रभु के अर्थ निकुंज मारग में बि
छावत हें ॥ ताते उठाय के दर्शन होय ॥ जो गृहमात्र को स्तोन
ता हू कोन होय ॥ पाछे सिज्या पास को डारी माला वेटा बीड़ा
सिरहाने सिंघासन पर डारि माला सब उठाय प्रसादी पा
त्र में ठलाईयें ॥ वासन धोय डारी खगारि फेरि भरनी ॥ डरी
दिन में आठ भरी जाय प्रथम मंगलभोग में मांजिके भ
रें ॥ दूसरी सिंगार होत में ॥ तीसरी सिंगार में ॥ चोथे राजभो
ग में भरें पंचमे राजभोग सरें ॥ पाछे छटे उत्थापन की
सानमे उत्थांपन भोग की ॥ आठमे सेन भोग सरे पाछें सो
ताको आभिप्राय यह हें ॥ जो निन्य अष्ट सषीनथा व्रजकी
अनेक स्वांमिनी के मनोर्थ की सो मिगनी हें ॥ सो श्रीस्वांमि
नीजी धरावत हें उत्सव के दिन श्रीस्वांमिनीजी के मनोर्थ
की हें ॥ सो श्रीस्वांमिनीजी आप धरावत हें ॥ ताते उत्सव के
दिन उत्सवभोग की डारि २ अधिक भरीयें ॥ उत्थापन की
डारि भरि सीतल भोग धरीयें ॥ कंद मूल फलादिक थार
एक में थपड़ी परनो नम रकाईये ॥ पूरी मेदा की तथा चे
नकी ॥ एक कटोरी मलाई की एक कटोरी खोवा की ॥ सा
के लडुवा उष्मकाल होय तो आरता तीज ते रथ यात्रा तांई

मिश्रीकोपनाशीतकालमे प्रबोधनीतेहोलतांईई खवोरसतथांईष
कीगड़ेरीछोजिकें आंमखरबूजामिलेतबहीधरे ॥ किननीका वस्तु
कोप्रमांराकितनीक वस्तुकोप्रमाराणनांही ॥ चनाकीकचीदारि
छोकीदारि चंदन इत्यादिक उश्नकालमें ॥ शीतकालमेईषको
रसतथांगरोरी यह श्रीचंद्रावलीजीको प्रमांरा सगरीवस्तु
श्रीचंद्रावलीजीके भावते ॥ कहेसो श्रुतिरूपाहे ॥ सोश्रुतिरूपाके
प्रमारासो ॥ तातेयहां श्रीगुसांईजी भगवतसेवामे प्रमांरा स
गरीवस्तु रीतिसमयसमयके प्रगटअपनो भावजनायोहे औ
रआंमखरबूजामेवानित्य मिलेयामे प्रमांराणनांहीहें ॥ काहेते
यह श्रीस्वांमिनीजीके मनोर्थकीसांमिग्रीहें ॥ ताहीते श्रीआचा
र्यजीके भावते सेवामेजोजासमयामिलेवनिआवे ॥ सोअंगी
कारकराईये ॥ दंडवतकरि प्रार्थनाकरि वाहेरआईये ॥ समय
भरेभोगसराईये ॥ आचमनमुषवस्त्रकरीये ॥ वीड़ा दक्षरा
हिसधरीये ॥ शीतकाल होयतो भोगकेकिमाड़ खोलिकेपाछें
चोपड़केपीछेअंगीठीधरीये ॥ उश्नकालहोयतोछिरकाव क
रीये ॥ होयवाररानभोगसरेतव दोहरा भोगमेटराटेआरसें
धाभोगवैस्नवकेघरनांही ॥ अथभोगसंध्याकोभावकं ॥ भाव
नाकरिभोगकेकिमाड़ खुले ॥ तवफेरिसिज्यामंदिरमेजायसि
ज्याखोलिकेफेरिकसनाकसीये ॥ ऊपरचादरिउढ़ाईये ॥ सिध्या
सनआगेभोज्या हायदें ॥ औरसंध्याभोगमेसधानेकीकटोरी
धरिप्रार्थनाकरिवाहेरआईये ॥ समयभरेभोगसराईये
आचमनमुषवस्त्रकरीये ॥ वीड़ाधरिसंध्याआरतीकरीये
वैस्नवकेघरसंध्याआरतीनहीं ॥ पाछेशृंगारवड़ोकरीये
वड़ीमालाहारचंद्रकावस्त्रवंदयेवड़ेकीजे ॥ करणफूलवेसर
तिलकचिबुककंठश्रीकटिकिंकिणीपाहोंचीनूपुररत्नना

शृंगाररहें ॥ सोश्रीस्वांमिनीजीकेभावकोहें ॥ तानेरहें ॥ पाछेकारीभ
रिडवराभोगवैस्नवकेघरनांही ॥ पाछेनेसेनभोगआवें ॥ सेनमेस
धाड़ीस्नवस्पकरीचहीऐ ॥ नवनेनोहादसीकेदिनअंवस्पकरीयें
दारिमूंगकीभातमिरचकोरपाकराजभोगकीसांमिग्रीहें तदी
होइतांमेतेथोरीसीधरिराखीयें ॥ सोभोगधरीये ॥ सधानेकीकटो
रीधरिये ॥ सोनकीकटोरीधरीये ॥ एकजलकीकटोरीभरिकेधरी
यें ॥ एककटोरीदूधकीभरिकेधरीयें ॥ एककटोरीदूधभातको
भारोधरिराखीयें ॥ पाछेदंडोतकरिटेरादेवाहेरतिकसियें ॥ जव
आधोसमयहोयचुकें ॥ तवदूसरोभोगधरीयें ॥ गादोआटेनो
दूधमांमेचमचासोनेको ॥ तथारूपेकोतथांपीतरकों ॥ ताथांको
सेकीजारीयें ॥ एककटोरामेदूधभातएककटोरामेकेवलदूध
ही ॥ सषड़ीनहोयतेनोसेनमेदूधअवस्पधरीयें ॥ काहेतेदूधसे
नभोगमेहोईतोसगरेदिनकीसांमिग्रीसोप्रभूनकोदूधकीतो
ईसुषहोय ॥ तातेदूधहे ॥ सोसेनभोगमेश्रीस्वांमिनीजीकोअ
धरामृतहें ॥ अत्यंतमीठोहें ॥ यहभावनाकरिभोगधरीयें पाछे
दंडवतकरिप्रार्थनाकरिवाहेरआईये ॥ समयहोयचुकेहोई
तवझारीलेआचमनकराईये ॥ मुखवस्त्रकरायवीड़ीआरोगा
ईये ॥ वीड़ादाहिनीओरधरीये ॥ सेनकेदर्शनसेवासेंवंधीवारेक
रेओरकोनांहीकराईये ॥ पाछेवागावड़ोकरिपागलेपीसदारहें
सिज्यापासपधराईयें ॥ सेनकीआरतीवैस्नवकेघरआवस्पक
नांहीहें ॥ सिज्यापासहोयझारीधरीयें ॥ दोइनवनेनोएकतोध
रीये ॥ वीड़ाकीतवकड़ीधरीयें ॥ सिज्याभोगकोवंटाधरीयेक
टोरी ॥१॥ सधानेकीधरीये ॥ कटोरी ॥१॥ सधानाकी ॥ कटोरी ॥१॥ मोंप
नकीकटोरी ॥१॥ मिश्रीकीधरीये ॥ आछीभांतिढांकिकेपाछेरित
अनुसारप्रभुकोउढ़ाईये ॥ पाछेसिंघासनवस्त्रउलटिकेढांकि

धारीये॥ श्रीस्वांमिनीजी होइ तो श्रीठाकुरजीके वांम भाग पोढाईये
प्रसिद्धि न होय तो भावनां करीये॥ सो तांमे दोय प्रकार के भाव है श्री
ठाकुरजी जसोदाजी के घर पोढत है॥ तहां रात्र की सेवा मे कुमारि
का तत्पर है॥ कवहु सषीजन श्रीस्वांमिनीजी कों श्रंगार करिकें
श्रीठाकुरजी के पास धराय लावत है॥ कवहु श्रीठाकुरजी ललि
ताविसाषा सषी के संग वन मे पधारत हैं॥ उत्तवरसाने ते ललि
तादि सषी के संग श्रीस्वांमिनीजी आवत हैं॥ सो श्रीठाकुर
जी दोउ स्वरूप धरिकें परस्पर मिलिकें निकुंज मे विहरे लीला
करत हैं॥ सो वहां श्रीठाकुरजी को हृदय कोटि कोटि दर्पन ते अधि
क सोभा देत है॥ तिनमे श्रीस्वांमिनीजी आपनो स्वरूप देषिकें म
नमे यह जांनत है॥ जो श्रीठाकुरजी के मनमे हृदयमे इस रीताय
का विराजत हैं॥ यह जांनि के मनमे क्रोध मांन होत हैं॥ कवहु श्री
चंद्रावलीजी को हृदयमे देषि मांन करत हैं॥ कुमारिका को हृद
यमे देषि श्रीस्वांमिनीजी मांन करत हैं॥ तव प्रभु आपने हृदय
में सव को भाव जांनि मांन मनावत हैं॥ कवहु श्रीयमुनाजी
और कुमारिका और व्रज की सगरी स्वांमिनीजी मिलिकें श्री
स्वांमिनीजी सो प्रार्थना करत हैं॥ हमको दासत्व आपनो देउ
हम तुम्हारे समांन नांही हैं॥ तुम्हारी दासी हैं॥ तातें तुम्हारे आ
गे हम प्रभु सो कैसे मिले॥ परि हम तुम्हारी हैं॥ या प्रकार दीनता
के वचन सुनि कें श्रीस्वांमिनीजी कहेत हैं॥ चतुर चोरासी क
ला प्रवीन तत्पर भोरी॥ ऐसे चतुर सिरोमनि तो हमारी हैं॥ ता
ते सगरे व्रज की स्वांमिनी की दैन्यता देषि कें श्रीस्वांमिनीजी प्र
संन हे अपने अलनभई॥ तुम्हारे नांम व्रजरत्ना हैं॥ काहेते व्रजमे र
त्नरूप ही हो॥ सो याते जो श्रीठाकुरजी मे अपनो पतिभाव कीयो हे
या समांन और उत्तम भाव नांही हैं॥ तातें तुम उत्तम हो॥ उत्तम हे॥

तातें हमारे तें तुम मे उत्तम भाव को होत हैं॥ एक तो सदां पवित्र रहे
त हो कोई गोपको संबंध तुम तें नांही हैं॥ इत्यादिक रूप पतित्व हलो
क मे लौकिक कोटि रहाय वेको है॥ परंतु तुम सो संवंध नांही हैं॥ इस
रे नित्य रूपाधिक हो॥ तुम्हारे विहार के अर्थ सहाय क हो॥ उपाध
ईर्षा तुम्हारे नांही हैं॥ तीसरे प्रेम भाव नाम क हें॥ रासादि लीला
मे विसन हैं॥ हृदय मे वो होत प्यारी हैं॥ हमारे जुगल स्वरूप सो
निरंतर रागकर सप्रेम हैं॥ चोथे केवल दास भाव हैं॥ युगल रूप
मे दास भाव करि प्रीति सों वहलल करत हैं॥ तातें हम तुम परस
संत हैं॥ पांच मे तन मन धन तें निष्कांम हों॥ तन मन धन एक
प्रभु के अर्थ हैं॥ तुम सगरी एक मन की हो॥ आपुस मे कलेश लो
कि क बुद्धि नांही हैं॥ सगरी मिलिके रहेत हो॥ एक की एक रषो ही
रवरी कहेत नांही हो॥ इत्यादिक तुम मे गुन अपार हें हमारे तो
एक स्वांमिनी भाव प्रसिद्ध हे रह्यो हैं॥ तातें तुम व्रजरत्ना समे
त ही श्रीठाकुरजी के संग विहार करो॥ हमको ई र्षा विषाद नाही
हे या प्रकार श्रीस्वांमिनीजी के निष्कपट वचन सुनिकें निष्कप
ट सगरी व्रज की स्वांमिनी प्रसंन भई॥ तहां श्रीठाकुरजी को
स्वरूप के सो सुंदर श्यांम घन रूप हैं॥ तथा श्रीस्वांमिनीजी के
स्वरूप हैं॥ जे सो न त्याग वरनि हें॥ ऐसे
मा बते श्रीठाकुरजी गोर स्वरूप हैं॥ तहां अंग अंग मे हीरा मानिकन के आभू
षन धारे हैं॥ मोतीन की माला पे॥ तेसे ही निकुंज भवन मांहि
कवहु सोने की कवहु रूपे की कुंज कवहु हीरा
रत्न जटित भये हैं॥
के कुंज कवहु मोतीन की कुंज॥ कवहु मानिकन की कुंज कवहु
पंना की कुंज॥ कवहु मूंगा की कुंज॥ इत्यादिक अपार कुंज प्रग
ट भई॥ तातें श्रीस्वांमिनीजी के सुष अर्थ सगरे स्थल प्रगट भ
ये हैं॥ सो निकुंज वैन अचल पांय मांन हैं॥ जहां युगल स्वरूप

कीइछ्या होइ तहां तहां आपुहि पधारत हैं॥ जहां जहां इछ्या अनु
सारउ हनिकुंज संग चलें॥ श्रीस्वांमिनीजी पदिक पहरे हैं॥ तथा चो
की पहरे है॥ सो निकुंज मंदिर में अनेक रविर की जाली प्रगट होत
भई॥ श्री स्वांमिनीजी श्रीठाकुरजी मोतीन की माला फूलन की मा
ला तथा वनमाला पहरे हैं॥ सो निकुंज मंदिर में अनेक प्रकार
के द्वार के ऊपर ठोर ठोर वंदनवार सोभा देत हैं॥ अनेक स्वांमिनी
अंचल कि नारी झालर युक्त सो वघारि ते उलमला तछहरात हैं
सो निज मंदिर मे ध्वजा पताका ठोर ठोर सोभा देत हे श्रीस्वांमिनी
जी श्रीठाकुरजी की नाई खिसरो वारि हैं॥ ताते निकुंज मे नाना प्रकार
के कुंड प्रगट भए॥ श्रीस्वांमिनीजी के श्रीठाकुरजी के नासिका ते
वयारि चलत हैं॥ ताही ते निकुंज मंदिर मे सीतल मंद सुगंध वया
रि चलत हे॥ फूलन के आभूषण युगलस्वरूप॥ श्रीस्वांमिनीजी श्री
ठाकुरजी पहरे हैं॥ तिनते नाना प्रकार के फूलन को निकुंज प्रग
ट भये हैं॥ शुक आदि पक्षी नासिका ते प्रगट भये हैं॥ हंसादिक
पक्षी श्रीस्वांमिनीजी के चरण ते प्रगट भए हैं॥ या प्रकार निकुं
ज मे पशु पक्षी सब युगलस्वरूप के अंगन ते प्रगट भए हैं॥ सिंघादि
श्री स्वांमिनीजी के कटि ते प्रगट भए हैं॥ भवर मीन खंजन मृगादि
दि श्री स्वांमिनीजी के नेत्रन ते प्रगट भये हैं॥ सो तब श्री स्वांमिनी
जी को प्रगट जो निजुगलस्वरूप सो कहें हैं बिना सगरी स्वांमिनी कुं
ज मे जात भई॥ सो निकुंज मंदिर मे भांति भांति को दर्शन पायो
परंतु निकुंज मंदिर को द्वार काहू को मिल्यो नांही॥ तब सगरी
स्वांमिनी द्वार को ढूंढि निसि हारि को फिरि आये॥ युगलस्वरूप रत
न जटित सिंघासन पर विराजे॥ सो तहां आय के श्रीस्वांमिनीजी
के चरणकमल को नमस्कार करि पाछे श्रीठाकुरजी के चरण
कमल को नमस्कार करत हैं॥ पाछे वीनती करी हम तुम्हारे है

तिहारी आज्ञा बिना श्रीनिकुंज की रचना देखन आई॥ सो बोहोत दूं
ढ्यो परंतु निकुंज को द्वार पायो नांही॥ ताते अब सगरी तुम्हारी सर
ण आई हैं॥ तब श्रीस्वांमिनीजी श्रीठाकुरजी सो प्रसन्न होय के
कहें॥ ये तुम्हारी प्यारी हैं॥ ताते मो को हू अत्यंत प्रीय हैं॥ ताते इन
को न्यारो न्यारो निकुंज दीयो चहीये॥ तब तुम सो विहार होय तब
श्रीठाकुरजी कहे वे सगरी प्यारी हैं॥ सो निहारे अंगन ते प्रगट भई
हैं॥ ताते तुम्हारे संबंध ते हमको वो होत प्रीय हैं॥ ताते यह वात तु
म को उचित हैं॥ जो आप कहो हो॥ सो ताको निकुंज दीयो चहीये
तब श्रीस्वांमिनीजी श्रीठाकुरजी ठाडे भए॥ सो परस्पर गलबा
ही दीये हैं॥ प्रेम सो मत्त होय दोऊ न के नेत्र कमल घूंमि रहे हैं
मंद मंद गजराज की चाल करि निकुंज के द्वार आवत भए त
हां पुलिंदी आदि उन को दर्शन देने न सुफल करि राषे तहां वन
में गिरिराज के आस पास॥ सो पुलिंदी सो श्रीठाकुरजी के अंग
अंग की सोभा देखि के कांमदेव लाजित होत हैं॥ असे सा क्षात म
न्मथ रूप हैं॥ अलौकिक कांमदेव उन्मत होत भयो॥ तब युग
लस्वरूप के चरणकमल के कुंमकुंम तिनमे इव में ठोर ठोर
देखि के॥ सो रस रूप कुल के पुलिंदी अपने मुख में अपने कुच
सो लगावत भए॥ सो ताकरि के सगरे तन के ताप दूरि भए श्रीठा
कुरजी के मिलन को सुख होत भयो॥ तहां यह संदेह होय जो भी
लनी को यह सुख भयो॥ तहां कहत हे॥ घना रे को जल गंगाजी
मे जाय मिले तो गंगाजल होय जाय॥ तेसे गिरराज के संग
पुलिंदी हम गवदी भई॥ ताते या मार्ग को संग नित्य कर्तव्य हैं
गिरिराज पुष्टिमार्ग में भक्ति राज मुख्य हैं॥ तिनको कीयो सर्व
पदार्थ अंगीकार करत हैं॥ तन फल फूल उरना को जल तासि
ला पर वेठत है॥ कंदरा मे पेठत हे॥ सिज्या रूप घर रूप जहां जेसो

कार्यहोइ॥ सोतहांतेसोरूपधारराकरिसेवाकरतहें॥ सोताहीमरि
खचित्रद्वारपरयुगलस्वरूपठाढेहोइसकलस्वांमिनीकोस्वरूपानं
दकोअनुभवकराय॥ पाछेयुगलस्वरूपसगरीस्वांमिनीपरकृपा
करिसंगलेकेंद्वारकेभीतरश्रीवृंदावनमेपधारे॥ सोतहांअनेक
मार्गअनेकनिकुंजहें॥ अनेकरतनकेअनेकधौंतिकेंअनेककुस
मकेंअनेककावनकेंनिकुंजहें॥ तिनमेजास्वांमिनीकेअंगमेंजाकु
शमकीसुगंधहती॥ तिनकोतहांनिकुंजमेरहनकीआज्ञादीनी
जिनकेअंगमेंचंपेकीसुगंधहेतीनकोचंपाकेफूलनकीनिकुंज
चंपाकोवेन॥ तहांसगरेचंपाकेफूलकीसोभाहें॥ तिनस्वांमिनीको
चंपकलानांमहें॥ याहीप्रकारसगरेकुशमकेनांमस्वांमिनीकेहें
तेसेहीकुशमकीसुगंधनिकुंजमेवासदीयोहें॥ सोतहांताईभाव
कीस्वांमिनीहें॥ सोताहीभावकेश्रीठाकुरजीपधरायेहें॥ याप्रका
रकुशमसंबंधीस्वांमिनीकोंतानकोटहें॥ सोतिनसबनको
निकुंजबतायेहें॥ आगेधातुकेनिकुंजहे॥ लोहेपत्थरकासी॥ फू
लमरतरांगसीसाजसत्र इत्यादिककेनांमसनिकुंजहेंफूलन
केसात्वकीनिकुंजहहते॥ धातुकेनांमसीनिकुंजमें॥ तामसीस्वांमि
नीकोतानकोटस्वांमिनीहें॥ तिनकेनेसेसुभावतेसेईनिकुंजदी
येहें॥ सोतहांतास्वांमिनीकेभावतेश्रीठाकुरजीपधरायतिन
केमनोरथपूरणकीयेहें॥ याप्रकारधातुकेसंबंधीमनोरथपूरण
कीयेहें॥ पाछेराजसीनिकुंजमनिमुक्ताकाचादिककेअपारहें
सोतहांराजसीभक्तकोतानकोटहें॥ तिनकोतहांतेसोभावरा
जसीनिकुंजकेमुखियाकीयेहें॥ जहांजेसोवनतहांतेसेभावरू
पश्रीठाकुरजीपधरायेहें॥ याप्रकारसगरेभक्तराजसीतांम
सीसात्वकीभक्तकोराखिकेपाछेंश्रीचंद्रावलीजीश्रीयमुनाजी
श्रीकुमारिकाजीयेतीन्योयूथपतिकोसंगलेकेंश्रीस्वांमिनीजी

श्रीठाकुरजीसहितभीतरपधारतभये॥ तहांप्रथमश्रीयमुनाजी
कोंनिकुंजदीनें॥ काहेतेजोचार्योयूथपतिकेनिकुंजमेंश्रीयमु
नाजीकीकृपाहोइतबजाइ॥ सोतहांश्रीस्वांमिनीजीकेभावतें
श्रीठाकुरजीपधरायेहें॥ ऊपरराजसीतांमसीसात्वकीकेनि
कुंजहें॥ अबयेचार्योयूथपतिकेनिकुंजनिर्गुणहें॥ चार्यो
यूथपतिस्वांमिनीनिर्गुणहें॥ तातेइनचार्योकेनिकुंजमेरतन
नोअधिकोभावहें॥ जोजवरइच्छाकुशमकीहोयतबकुशमकेनि
कुंजहोय॥ औरजबधातुकीरछनाहोय॥ तबसोनारूपेको
सीपीतरइत्यादिककेनिकुंजहोइ॥ जबमनिमोतीकीइछाहो
इ॥ तबमाणिकमोतीहीरामरगजकाचआदिकीभांतिभांतिकी
रचनाहोय सोऔरस्वांमिनीकीनिकुंजमेनहोय॥ याप्रकारश्री
यमुनाजीकेनिकुंजकेआगेअग्निकुमारिकाकेनिकुंजदीये
सोतहांकुमारिकाकेभावतेंश्रीठाकुरजीपधराये॥ सोतिनके
आगेचालिकेंश्रीस्वांमिनीजीनेप्रसंनहोयअपनेद्वारपरश्री
चंद्रावलीजीकोनिकुंजदीयो॥ तहांश्रीचंद्रावलीजीकेभावकेश्री
ठाकुरजीपधराये॥ औरश्रुतिरूपास्वांमिनीकोतानकोटहेंति
नकेनिकुंजराजसीतांमसीसात्वकीकेनिकुंजमेसबआयगई
अकेलीश्रीचंद्रावलीजीकेभावकोनिकुंजभीतरहें॥ सोतेसेई
सोरहहजारअग्निकुमारिकाहेंतिनकेनिकुंजराजसतांमस
सात्वककेनिकुंजमेसबआयगई॥ अकेलीश्रीचंद्रावलीजीको
भावनिकुंजभीतरहें॥ सोतेसेश्रीयमुनाजीकेअनेकस्वरूप
हें॥ तिनकोनिकुंजसात्वकीराजसीतामसीतिनकोनिजस्व
रूपश्रीयमुनाजीतिनकोनिकुंजभीतरहें॥ तहांयहअसेका
होइजोभीतरश्रीचंद्रावलीजीश्रीयमुनाजीअग्निकुमारिकाको
न्यारोनिकुंजहें॥ तहांअकेलीरहतहोइगी॥ यहआसंकाहोयतो

हांक हेत हे ॥ तहां श्रीचंद्रावलीजीके भावकी श्रीचंद्रावलीजीके सु
भावअनुसार कोटान कोटसखी हैं ॥ सगरी श्रीस्वामिनी
जीकी सेवा करत हैं ॥ तेसेही कुमारिकाके भाव सुभाव अनुसार
अनेक दासी हैं ॥ अनेक सखी हैं ॥ सो अपनी स्वामिनीजीके कें
जांनि सेवा करत हैं ॥ याप्रकार तो अपने पति स्वामिनीजीके नि
कुंज होय हैं ॥ याहे मुख्य श्रीस्वामिनीजी और श्रीगोवर्द्धनधर श्री
जे पधारे ॥ सो तहां अनिर्वचनीय निकुंज हैं ॥ तहां पुरुषोत्तम भा
वनाही हैं ॥ पशुपक्षी सगरे स्त्रीरूप हैं ॥ तहां कोनिकुंज मनवा
णीके अगोचर है केकहो न हीजाय ॥ तहां आपुने अंगते अप
ने भाव सुभावके अनुसार ते सखी प्रगट कीये हैं ॥ तिनहू को नाम
ललिता विसाखा आदि हैं ॥ जगत मे ललिता विसाखा प्रसिद्ध
हैं ॥ सो गोपन की बेटी हैं ॥ तिन को निकुंज नामसो राजसी सात्व
को आदि मे हैं ॥ तहां राकनिकुंज वृषभांन सुता जो राधा हैं ॥ ति
नहू को राजसी नामसो सात्वकी सो निकुंज हैं ॥ सो तिन को स
गरो जगत भजन करत हैं ॥ अब भीतर सबके जो स्वामिनी
हैं ॥ और श्रीगोवर्द्धनधर कहे हे ॥ स्वरूप मनवाणीके अगो
चर हें ॥ अनिर्वचनीय हैं ॥ तहां श्रीस्वामिनीजी अपने अंगते
कोटान कोटि सखी प्रगट कीए हे ॥ सो तिन को नाम ललिता
विसाखा आदि हैं ॥ विहार मे अपने अंगते जु ललिता रूप हैं ता
ते नाम ललिता है हे ॥ सखी जाकी रीति विपरीति में अभास न
मे परम चतुर हे ॥ तातें विसाखा यह नाम कहे हैं ॥ यह भीतर
को स्वरूप जब सारस्वत कल्प आवें ॥ तब पूर्ण श्रीगोवर्द्धनधर
पूर्ण श्रीनंदरायजीके घर प्रगट होय ॥ ताही समय भीतर
के निकुंजके श्रीस्वामिनीजी पूर्ण सो पूर्ण श्रीवृषभांनजीके
घर प्रगट होइ ॥ ताही समय सगरी लीला पुरुषोत्तम की भीतर

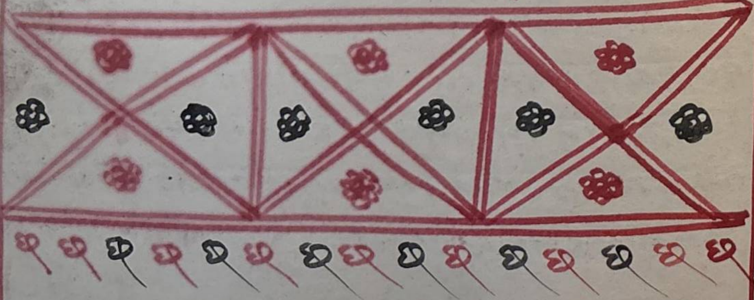
के निकुंज की प्रगट होई ॥ तब पूर्ण श्रीचंद्रावलीजी पूर्ण श्रीयमु
नाजी पूर्ण कुमारिका पूर्ण ललिता विसाखा आदि सगरी बाहिर
के निकुंज की श्रीयमुनाजी ॥ तहां श्रीचंद्रावलीजी कान्तिरूपा
तेसे ही बाहिर के निकुंज की अग्नि कुमारिका जो सगरी निरूप जग
त मे गावत हैं ॥ प्रसिद्धि नाम हे ॥ इनके प्रमाण सहित लीला जब
जब ह्यापुर होई ॥ तब तब प्रगट होइ पूर्ण के अंश कलारूप
लीला करत हैं ॥ सो सारस्वत कल्प मे पूर्ण पुरुषोत्तम की अप्रमा
ण लीला ॥ अंश कला के अवतार मे लीला हैं ॥ तहां ब्रह्मादिक
सिवादिक इंद्रादिक फूल बर्षावत हैं ॥ लीला को दर्शन कर
त हैं ॥ पूर्ण पुरुषोत्तम की लीला में ब्रह्मादिक इंद्रादिक शिवा
दिक को ज्ञान होय नांही ॥ उनहू के मनवाणी के अगोचर रस
हां पूर्ण पुरुषोत्तम के आगे ते रसरूप आधिदैविक हैं ॥ ब्रह्मा
दिक इंद्रादिक शिवादिक प्रगट होइ ॥ अंश की स्तुति करि अव
लोकिक फूलन की बर्षा करत हैं ॥ तिन की लीला मन वाणी
मे आवे नांही ॥ तातें अंश कला के अवतार की लीला तिन ही
को पूर्ण जांनि भाव सहित भजन स्मरण करें तो पूर्ण पुरुषो
त्तम की लीला प्राप्ति होय ॥ तेसे श्रीयमुनाजी विराजत हैं गिररा
ज विराजत हैं ॥ इनही मे सारस्वत कल्प के पूर्ण पुरुषोत्तम के
भाव करि इन को पूर्ण जांनि स्मरण करें ॥ सेवा करे तो इनही
की कृपा ते इनही पूर्ण पुरुषोत्तम की लीला प्राप्त होय ॥ ऐसे
ही वृषभांन कुमारि नंदनंदन को भजन स्मरण सेवा सार
स्वत कल्प के जांनि पूर्ण करें ॥ तो पूर्ण पुरुषोत्तम की लीला में
प्राप्ति होइ ॥ याप्रकार श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी को निकुंज
श्रीगुसांईजी को निकुंज सगरे निकुंज के भीतर रहें ॥ याते श्री
आचार्यजी महाप्रभु प्रभुदास सो कहेत हैं ॥ सो रक्षे व सेवे

नित्य.
३७

रगुधारीपत्रेपत्रेवनु भुंज ॥ पत्रे वृंदावनस्त चल ख्यानस कथां कुल १
अपारनिकुंज हैं ॥ तहां अपार श्री ठाकुरजी हैं ॥ तहां अपार भ
क्त है तोरदोर अपार लीला है ॥ एक न वनिकुंज के भीतर एक वन
निकुंज हैं ॥ तातें वनानिकुंज को पार नांही हैं ॥ ताहीतें वृंदावन है तो
मे वृंदा जो अपार वन हैं अपार कुंज हैं ॥ तहां सगरे निकुंजन में प्रभु
प्यारे प्यारे भक्तन के संग ॥ दोन लीला विहार लीला रासलीला बाल
लीला को पार नांही ॥ गिरराजजी में आठ द्वार हैं ॥ तहां अष्टसखा
लीला को पार नांही ॥ गिरराजजी मे आठ द्वार हैं ॥ तहां अष्ट सखा
अष्टसखी दोऊ एक ही रूप लीला के सहाय क हैं ॥ सो अष्ट मह
अष्ट सखी दोऊ एक ही रूप लीला के सहायक हैं ॥ सो अष्ट मह
रहे हैं ॥ तातें अष्ट छाप पुष्टिमार्ग में गवईये मुख्य भये ॥ सो सग
रे लीला सारस्वत कल्प के पुरुषोत्तम के अनुभव करि के गा
न कीयो है ॥ चास्वोज पपानि मुख्य श्री स्वामिनीजी श्री यमुनाजी
श्री चंद्रावलीजी श्री राधासहचरी ॥ इनके भाव लीला बुद्धि अ
नुसार वर्णन कीये हैं ॥ अब श्रुति रूपा कुमारिका में साधन के
रिसि हि भई ॥ सो कहेत हे ॥ काहेतें ॥ तीनरहो यरि षी वुगे तातें स
षी भई ॥ एक समय वेद में श्रुती दोय प्रकार की हैं ॥ एक पुष्टि श्रु
ति एक मर्यादा श्रुति ॥ सो तिन दोऊ श्रुतीन में आपस में वाद भ
यो ॥ पुष्टि श्रुती कहे ॥ अक्षर ब्रह्म के भीतर कछु भारी पदार्थ
है ॥ तब मर्यादा श्रुती ने कही ॥ जो सब ने परे अक्षर ब्रह्म हैं ॥ सो
ताके आगे नेति नेति हम को ज्ञान नांही हैं ॥ तातें और कछु न
हो यगो ॥ या प्रकार दोऊ श्रुतीन आपुस में वाद करि तीन र को
रूप धारि उड़त भई ॥ सो अनेक काल लो उड़ी परन्तु कछु देख्यो नां
ही ॥ तब मर्यादा श्रुती को अधिकार नांही पुरुषोत्तम लीला में
तातें हारमांनि के पाछें फिरि आई ॥ और पुष्टि श्रुती उड़त भई
सो तब आकाश सहस्त्र वांराणि पुरर परुषोत्तम बोलत भये जो
तुम इतनो श्रम करि क्यों उड़त हो ॥ तब पुष्टि श्रुतीने कही जो म

हाराज हम अक्षर ब्रह्म के भीतर जो पदार्थ है ॥ सो तिनको दर्सन चा
हत हैं ॥ सो तब दयाकरि पुरुषोत्तम नें अपनो दर्शन दी
यों ॥ और कहे ॥ जो यह व्यापि वैकुंठ है ॥ तहां तुम विराजमान होय र
वे हो ॥ यहां हमारी लीला को दर्सन होइ गयो ॥ तब पुष्टि श्रुति
विरजा नदी श्री यमुनाजी हैं ॥ सो तिनको किनारे बेठत भई
इतने ही में व्रज भक्त घर घर तें सिंगार करि कोऊ सोने की गगरि
कोऊ मट्टा कोऊ गागरि ले जल भरन को मिस विरजा नदी पे आई सो
वड़ी भीर भई ॥ सो ता समय श्री ठाकुरजी आये ॥ सो काऊ की गा
गरि फोरी काऊ की ईंडुरी नदी में डारि दीनी ॥ काहू को आलिं
गन कीनो ॥ या प्रकार अनेक लीला करी ॥ पाछें व्रज भक्तन
कों अंतरध्यान करि श्री ठाकुरजी पुष्टि श्रुतीन को कहे
आव न भये ॥ और कहे ॥ जो तुमने मेरे भक्तन की लीला दे
खी मेरे घर देखे ॥ या समान और कछु नांही हैं ॥ तातें मैं तु
म पर प्रसंन हों ॥ कछु वर मांगो ॥ यह श्री ठाकुरजी के वच
न सुनि के पुष्टि श्रुति रोम रोम प्रफुल्लित होय कें तब भई ॥ तब र
बोलत भई हे महाराज हम तुम्हारे भक्तन के संग लीला
देखी कें ॥ हम को कामिनी भाव होत भयो ॥ तातें हे प्रभो जो
हमारे ऊपर प्रसंन हो तो इह वर दीजे ॥ जेसे व्रज भक्तन के
संग लीला विस्तार उनको सुख दीनो ॥ जेसे तुम इह को मिलि
कें स्मरण करोइ इह वर मांगत हों यह सुनि के श्री ठाकुरजी
ने कही ॥ तुम को अबही लीला की योग्यता नांही हैं ॥ काहेतें तु
म व्रज भक्तन के समान सुख मांगो तातें उनकी बरावरी मे
तुम नांही हों ॥ तुम समान के से इह अंतराय भयो ॥ सो व्रज भक्त
न के चरण की दासी होइ मांगते तो अबही लीला में प्राप्ति हो
ती तातें में प्रसंन हों ॥ तुम यह उपाय करो ॥ सारस्वत कल्प में

अपने भक्तन सहित प्रगट होई। हमको सुख देऊंगे॥ इतनो कहि अंतर
ध्यान भए॥ और दंडकारण्य में सोरह हजार ऋषी तप करें॥ तब
श्री रामचंद्रजी श्री जानकीजी सहित दर्शन दीये॥ और प्रसंन्न हे
इके कहे। जो वर मांगि लेऊ॥ तब ऋषी बोले जो महाराज आपके
अंग की सोभा सुंदरता देखि के हमको कामिनी भाव होत भयो
ताते हम स्त्री होंइ॥ और तुम हमारे पति होऊ॥ रमण करो तब
आप आज्ञा करी॥ जो यह देह मारी अवतार मर्याद को है। ताते
एक पत्नीव्रत है॥ सो जब सारस्वत कल्प होयगो॥ सो तब तुम
गोड देस में कंन्या होइ प्रगट होउगी॥ तब श्री नंदरायजी के घर
आप मनोरथ पूरण होयगो॥ या प्रकार श्री रामचंद्रजी के वच
न सुनि ऋषी फेरि तप करन लागे॥ सो सारस्वत कल्प में गो
उ देस में कंन्या होत भए॥ सो श्री नंदरायजी के सके देन अप
र्प मोल ले आए॥ सो तब प्रभुन के अर्थ कात्यायनी देवी के
मिस करि श्री यमुनाजी को पूजन कीयो॥ सो तब प्रभु चीर
हरन लीला करि वरदान दीयो॥ जो तुम सबन को अंगीका
र करेंगे॥ या प्रकार अग्निकुमारिका को अंगीकार भयो
यह पुष्टिमार्गीय अंतरंग भक्तन के अर्थ सेवा को प्र
कार प्रातःकाल सों संध्यालों वरनन कीये है॥ इति श्री
गोकुलनाथजी कृत नित्यसेवा शृंगार की भावना संपू
र्णम्॥ समाप्तं॥ शुभं॥ भूयात्॥ श्रीरस्तु॥



श्रीकृष्णाय नमः॥ श्रीगोपीजनवल्लभाय नमः॥ अथ
उत्सवन की भावना लिख्यते॥ प्रथम भाद्रपद वदी ८॥
ता दिन पाग पिछोरा कसूमल धरीये॥ याते जो अनुराग सू
चन हैं। जन्म के पहले ही॥ ता पाछे समस्ती को अंगरखा ऊपर
के मंगल लागोई रहें॥ सो कसूमल सुभ को सूचन हैं॥ सगरे
व्रजभक्तन को अनुराग रूप॥ राजभोग में कछू सामग्री
विसेस का हे ते॥ श्री यसोदाजी की कूखि में प्रभु हैं॥ ता समै
को आठ मासा हुतो॥ ताके लीये आठ मासा की सामग्री क
रीहुती॥ पूरी सीरा फीके खाजा सोठ की बुकनी लोनसेली
साक सधानो बूरा दूध॥ सो सगरे गोप ले आये हते जेवन
के लीये॥ सो प्रथम जसोदाजी द्वारा प्रभु अंगीकार करी है
काहे ते व्रजभक्तन के भावरूप सामग्री॥ सो मुख्य श्री स्वामि
नीजी दूध श्रीयमुनाजी फीके खाजा श्री चंद्रावलीजी सोठ
की बुकनी साक सधानो हैं॥ तामे बुकनी सधानो कुमारिका
को सीतकार॥ साग में सगरे व्रज की स्वामिनी॥ पूरी में नंद
रायजी के घर की वृद्ध गोपी गुरुजनन के भाव ते॥ या प्रकार
जसोदाजी द्वारा आरोगे॥ ता पाछे सगरे गोपी आठ मासा की
ज्योनार करी है॥ सो भाव ऊपर गोपी राखे छठी की पूरी कहे
सो याते जो प्रभु छह दिन के भए॥ तब पूतना आई॥ ताते
छठी रहि गई॥ सो बरसा दिन पाछे जन्मदिन आयो सो
जन्मदिन के भीतर छठी पूजनी॥ ताते जन्माष्टमी को राति
छठी पूजनी॥ ताते छठी की सामग्री ऊपर लोगन सो कहे
भीतर आठ मासा को भाव हैं॥ ताते वरस के वरस श्री नंद
रायजी के यहां समस्ती को वधाई गावाई॥ सीरा पूरी बुकनी है
त हैं॥ वस्त्र विलोना सब न ऐके करत है॥ ऐं श्रुति रूपा कोसां

तहे॥ ताते पवित्रा एकादसी श्रीचंद्रावलीजीको दिन हे॥ इहां नली लाके
मुखीया॥ ताते पवित्रा एकादसी ने वधाई गावत हे॥ कुलह्रध रत
हें॥ खिलोना खिलावत हे॥ आभूषण वस्त्र जन्माष्टमीको उत्सव
को आगम करत हें॥ पवित्रा एकादसीको पुष्टिमारग प्रगट भयो
ताते वधाई हे॥ जन्माष्टमीको अवतार साक्षात पुष्टिमारग प्रगट
भयो॥ और रुपोतम कहे॥ तहांको ईकहे॥ जो दक्षायन सूर्य
वर्षारितु भाद्रो महीना कृष्ण पक्ष ग्रुरुवार रोहिणी नक्षत्र इत्यादि
सिद्धिनमे क्यो तहां कहे तहें॥ श्रीकृष्ण विरुद्ध धर्माश्रय हे॥ प्रगट
होइ निसेधको उत्तिम ते उत्तिम कीये॥ काल परत्व भय हेतुरु
षोत्तमकी प्रतिज्ञा हे॥ जो निःसाधन जीव सर्वप्रकार हीन तिनको
अंगीकार करनो हे॥ ऐसो दिन प्रगट होइ उत्तिम ते उत्तिम काल
कीयो जन्माष्टमीको मंगलाभोग धरें॥ पाछे मंगला आरती करि
पाछे पंचामृत स्नानकी त्यारी करत हे॥ मंदिरकी तिवारीमें अ
ष्टदल कमल कोरी हरदीको रज कमलाकार हें॥ ताते प्रभु ला
लदस्याईको पीतांवर नारंगी रंगके वस्त्र श्रीस्वामिनीजीके
अंगरूप हें॥ सो तहां श्रीनंदरायजीको मणिन रचित चोक
सो जन्मदिवस जानि व्रजके गोपीगोप सब दर्शनको आई हे
नाना प्रकारके वाजे वाजत हें॥ उद्धवासिन गान करत हे नंदाल
यमहा अलौकिक हें॥ अन्योन्य मर होत हे॥ सो अन्योन्य चोक बडे
होत हें॥ प्रभु सन्मुख आवनके सन्मुख दृष्टि करिकें मंदहास्य सो
सबको मन मोहत हें॥ सोनेकी जडाऊ चोकी पर बैठे हें॥ सो वार
वार उठत हें॥ सो तब मात्र चरण अनेक प्रार्थना करि वैठाव
त हें॥ सो तब श्रीठाकुरजी श्रीस्वामिनीजीको हठ करि वालभा
व सो निकट वैठावत हें॥ या भाव ते श्रीस्वामिनीजी हू पंचामृत
सो स्नान करत हें॥ अनेक गोपी घंघ इत्यादिके पंचामृतकोसा

जलो ऐठाटी हें॥ सिंघासन आगे चोकसो व्रजभक्त सबको हृदयतल
पर परात सो श्रीचंद्रावलीजीको हृदय तापर चोकी लाल हस्या
ई श्रीस्वामिनीजीके हृदयको अनुरागरूप॥ चोकी पर हू कमल
सो कुचरूप॥ पूर्वमुख याते जो श्रीगिरराज ते रावल श्रीगोकुल
पूर्वमुख॥ ताते श्रीस्वामिनीजी सन्मुख तहां तिलक श्रीचंद्राव
लीजी करत हें॥ काहेते यह आगतत्व श्रुतिरूपा कुमारिका अर्थ
हें॥ नित्यलीलाती श्रीस्वामिनीजी श्रीयमुनाजी संग सदा हे र
ताते कुमारिका सब देखत हें॥ श्रीचंद्रावलीजी॥ समर्पन हे र
कुंमकुंम उदीपन भाव अक्षत लगायवे रेसो श्रीस्वामिनी
जी सो सगाईको टीको यह संबंध करत हें॥ तुलसी चररासवि
दपर धरत हें॥ सो श्रीस्वामिनीजीके श्रीअंगको गंध॥ प्रियांग
धवसुरभी तुलसी चरणप्रियां॥ समर्पयामि महादेह हरे
देहमलौकिके॥ तथा श्रुतिरूपाको समर्पन याहे समयासि
द्धिमयो पंचामृतमें तुलसी डारत हें॥ श्रीस्वामिनीजीके संबं
धते रसरूप होय॥ वीडा दोय दोय अधर॥ और देहके अधर
रसके भावसो॥ पाछे हाथमें जल अक्षत लें संकल्प करत हें
भगवतः श्रीपुरुषोत्तमस्य कृष्णावतार प्रादुर्भावोत्सवं कर्तुं
तदंगत्वेन पंचामृतस्नानं करिष्ये॥ या प्रकार श्रुतिरूपा वेदकी
रिचा हें॥ ताते वेदमंत्र सो लौकिक संबंध करत हें॥ संख श्रीय
मुनाजी हे॥ संख पाछे सो सोने सो भरत हें॥ सो श्रीस्वामिनीजी हे
मुखरूप स्नान समय यह श्लोक पढत हे॥ स्वरूपहा ताधर
स-तापनं तरभावत॥ प्रियागसंगनीरे तुरा॥ स्वामिनी शिरनोम
वप्रभो॥ प्रथम दूध सो श्रीस्वामिनीजीके श्रीअंगको भाव॥ पा
छे दही सो श्रीचंद्रावलीजीको भाव॥ दूरामिष दूध कुमारिका
केभाव मधु श्रीयमुनाजीके भाव॥ सम स्वरूप जवृंदावनकी वन

स्वनीरूपसमस्तव्रजभक्त सोमिस्त्रोभावहें॥ घनसवनकोध्येरह
पहें॥ पाछेफेरि दूधसोस्नांनकरावतहें॥ सोश्रीस्वांमिनीजीके
भावमेमग्नहें॥ पाछेसोनतजलसोनापतिवतेकरतहें॥ पाछेके
सरिश्रीस्वांमिनीजीरूप चंदनकुमारिकाकठ्रउरधरतहे॥ सोश्री
चंद्रावलीजीजलमहारानीजी फेरिरंचककसीनतजलसोहृदा
यहृदयसीतलकरतहें॥ पाछेभोईसरकावनहे॥ वेरादेश्रभ्यं
गस्नांनउवटनामेश्रामलाहरदीरेचक केसरिकीकटोरीश्रीस्वां
मिनीजीरूप॥ तेलकुमारिकाकेभावरूप॥ तुलसीकीपुककी
श्रांमला श्रीमहारानीजीहलदीच्याहकेमंगलचारचंदनश्री
चंद्रावलीजीजलनानोश्रीचंद्रावलीजीश्रादिव्रजभक्तनको
विरहरूप॥ याप्रकारश्रभ्यंगस्नांनकरावतहें॥ प्रभुश्रीस्वांमि
नीजीकोपहजनावतहें॥ जोयहमेरोश्रागरनएकहुलाहरेईलीये
हें॥ तातेसगरेउत्सवमेश्रीस्वांमिनीजीश्रीचंद्रावलीजीश्रीम
हारानीजीकुमारिकामिलिके श्रभ्यंगस्नांनकरावतहें॥ ताते
यहश्रीस्वांमिनीजीकीकीपाहे॥ तातेउत्सवकेदिनरीकायत
कोश्रृंगार॥ श्रृंगवस्त्रकोछेडारंगेलेतहें॥ श्रीस्वांमिनीजीके
श्रेचलरूपहें॥ केसरीयाकुलहश्रीस्वांमिनीजीरूप॥ किना
रीहरीसोश्रीयमुनाजीरूप॥ तापर चंद्रका॥ श्रुकटश्राका
रश्रीश्राचार्यजीचंद्रकाकोसादामुकटधरायोहें॥ कुलह
मेर्ईटुरीश्रीचंद्रावलीजीकोहृदयकुलहपरगोटीकुमारि
काकोकुच॥ दोयतुर्रासोश्रीयमुनाजीकेदोउतटहस्तरूप
चंद्रका॥ तेचारयोजथपति॥ एकमेसमस्तश्रीस्वांमिनीलालि
तादिसखीरूपचाकदार केसरीयावागा श्रीस्वांमिनीजीकी
साडीरूप॥ व्रजवासिनसाडीमेंमाथेंयेपर दूसरोटूंकलग
गावतहे॥ सोयहांचाकहे॥ सथलाल श्रीस्वांमिनीजीकेजइ

गानयांव्रजभक्तनकीचोलीरूप॥ ननियांलालव्रजभक्तनके
निजश्रंगभावननियामेंकोयनामेंलहगाकरिपुकुरीपडुका
लालसोश्रीस्वांमिनीजीश्रादिसमस्तव्रजभक्तनकेंश्रनुरा
गसोप्रभुवांधेहें॥ परकामेवागामेकुलहमेंकिनारीमेंसोश्रीय
मुनाजीहें॥ नरंगरूपदलडलाहद॥ श्रीस्वांमिनीजीकोश्रंग
रश्रुनिरूपावारीसखीकरतहें॥ केसरीयासाडीश्रापनेरंगरू
पचोलीश्रपांमश्रफूहृदयस्थितलहगाश्रामरतालालश्रनुरा
गरूपकाजरमिंदूरटीकीश्रादिपाछेदोउस्वरूपकोकमलम
नदक्सरामाथाविराजतहेंईतोतिनहूकोकमलपत्रसवीजन
व्याहकोश्रनुभवकरतहें॥ वेरावादरोपकुमारिकादेतहें॥ तेतो
रागरूपश्रीचंद्रावलीजीवेरामेश्रधरामृतरसहें॥ सोश्रीश्राचार्य
जीश्रीस्वांमिनीजीवेरामेईमिकालटकतहें॥ सोभक्तनकेश्रभ्यु
दयहें॥ वेरामेसातछिद्रसातवालकवेरामेश्रनेकतानश्रने
कस्वांमिनीरूपसगरेवालकतारंगीरंगकोपीतांवरउढाईये
सोदोउस्वरूपकोइकटोरकरिगांठिजोरिकवहवसंतपेलत
हें॥ केसरिश्रीस्वांमिनीजीचंगुलालकुमारिका॥ श्रवीरश्रीचंद्रा
वलीजीचोवाश्रीयमुनाजी॥ सिंघासनश्रीचंद्रावलीजीकोगोद
गादीश्रीस्वांमिनीजीकोहृदय॥ तकीयादोउदिसतेदोउहस्त
पाछेकोतकीयाहृदयसोश्रीचंद्रावलीजीदोउस्वरूपकोलगा
येहे॥ तकीयामेफोदनाश्राभूषणपहरेहें॥ गोरस्वरूपमेकम
लपत्रकस्तूरीकीरवाकोरूपांमपरकुंमकुंमकोगेंजासगरेश्रा
भूषणकोश्रधिदेविकलालस्वांमिनीकुमारिकादोउरूपांमश्री
यमुनाजी॥ स्वेतश्रीचंद्रावलीजीकेभाव॥ पाछेथारमेतिलक
कोसाजासिद्धकरतहें॥ वंदनवारद्वारद्वारपरभक्तप्रभुकोंजी
रोठावेहें॥ श्रारसीश्रीस्वांमिनीजीकेनयचंद्रमेतथाश्रीस्वांमि

नीजीके हृदयरूपमें प्रभुआपने कोदेषिप्रसंनहोतहें॥ फूलनकी
मालासमस्तस्वांमिनीरूपहें॥ वंदनवार आभूषण मोतीमांनि
क सोनेकीकपडाकीजरीकी फूलपताकी॥ मोतीमांणिकसोना
श्रीस्वांमिनीजी कपडा श्रीचंद्रावलीजी जरीश्रीयमुनाजी फूल
पताकुमारिका आदिसकलव्रजकीस्वांमिनी था पेधरद्वारसां
थियेचोक ठोरठोरपूरेहें॥ भक्तरूपचंदनकीआरतीमोनीके
वीचवारमेधरि पाछे नारीयलको कुंमकुंम लगाई ओरवा
रलगाई दोईबार अक्षतलगाईये॥ दोऊस्वरूपकेभावतेयाही
प्रकारश्रीस्वांमिनीजीकोवेदीलगाय अक्षतलगाईयें दोऊ
प्रकारहोय नारीयलहोयमुद्रातथादोयपावली॥ अर्ध्दमेंरत
करीये नारीयल श्रीचंद्रावलीजीकेकुचरूपकुंमकुंमप्रभु
कोश्रृंगारागसमर्पे॥ आपिवैकुंठतेप्रभुपधारेहें॥ सोव्रजभक्त
आपनोसौंमाग्यसुफलमांनि मेटधरतहें॥ तथांघरघरते
टीकालावतहें॥ बीड़ादोऊदिसदोयधरि आरतीकरिहृदय
तापन्योछावरकरतहें॥ पाछेमुद्रातथांपावलीहाथमेंलेज
लले केसंकल्पकराईयें॥ भगवतः श्रीपुरुषोत्तमस्य आ
त्मप्रीत्यर्थं आरोग्यार्थ॥ इंगोदानाख्यंक्रियामहंदिस्ये
यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहं उत्सृजे॥ याप्रकार
करिपुरोहितब्राह्मणकोदीजें॥ गोदानरुपैयापाछें पीतांबर
उढायमालापहरायातिलकआरतीकरतहें॥ कवहूगोदा
नपहलेतिलककरतहें॥ कवहूपीछेकरतहे॥ भेटनोमीके
दिनसंध्याआरतीतांईरहें॥ भेटआरतीहे॥ सोमार्कंडेपूजा
वत्याहीनेभृंगारबंतेंपाछेभोगमांतिलक॥ ओटनोदूध
गुडकेदूकमार्कंडेपूजामेंशुभहें॥ वमचानपाकडारीमेंधरि
भोगधरे॥ सातितंगुडमिश्रमज अर्घश्रंतनपयाः मार्कंडेयम

हाथाहो पिवाम्ययामां केडेंप्यापु॥ समुद्रहृये॥१॥ इतिश्रीजन्माष्टमीको
भाव॥ यहनंदालयकोभावजन्मादिनकोफेरिनित्यकीरीतिपाछे
गोपीवल्लभभोगबेसवकेघरश्रृंगारभोग॥ पीरीकेनीश्रीस्वांमि
नीजीस्वेतफेनीश्रीचंद्रावलीजी॥ सकरपाराश्रीस्वांमिनीजी
केनेत्रवृंदीकेलडुवाश्रीस्वांमिनीजीकेकुचसेवकेलडुवाश्री
चंद्रावलीजीकेभावछूटीवृंदीकुमारिकाकेकुच॥ जलेवीश्री
चंद्रावलीजीकेअधरसेवश्रीस्वांमिनीजीकेअधरामृतंद्
राश्रीयमुनाजीघृतव्रजभक्तनकोस्नेह॥ आभूमनश्रीचं
द्रावलीजीकोअधरामृत॥ शुभवस्त्रप्रेंचलतांकुलचार्येत
धैया ग्वालभोगकेमिसश्रीस्वांमिनीजीकोअधरामृतपाछे
राजभोगमेघृतपदीपखीरवड़ाछाछकेतीनकूंडाधरीसाक
दही॥ मांषनपापरदहीभातसिखरनभातवृंदीकेलाडूसेव
केलाडूमेवाबाटीगहूमठरीकचरीया॥ पनोसाक॥२१॥ कांजी
जलमोसंषोरिकपाछेआभूमनमुखवस्त्रबीड़ीबीड़ाआर
तीभोनीकीपाछेंनित्यकीरीति॥ संध्यासमयसेंनआरतीप्रह
र॥२॥ रात्रगरे॥ जन्माष्टमीकोदिनउत्थापनमरोपाछेसिज्याउ
ठायराखें॥ सोनोमीकोराजभोगसमोविछें॥ काहेतेव्रजवासीभ
केघरहोइरात्रजागेहें॥ राकतोजन्मदिनकोएकदेवकोजप्र
बोधनीको॥ सोजन्मदिनकेरात्रजगेमेवालकहूकोजगायबेको
यहरीतिहे॥ तातेंसिज्यानविछें॥ औरदेवकाजमेंजाते प्रबोध
नीमेंनंदजसोदाससगरोपरिवारजागेसिज्याविछीरहें॥ श्रीठा
कुरजीमनआवे श्रीनंदरायजीकेपास॥ मनआवेसेजपर
जाइवेठे यहरीति॥ काहूमंदिरमेंऐसेहें॥ जोसिज्यामंदिरते
सिंघासनतांईपेड़ीबिछायजागरनमैंकोकिवाड़खुले॥ सिज्या
पासश्रीस्वांमिनीजीकेवस्त्र आभूषणमृदापरधरीयेवां

मादिसअनेकसामिग्रीधरीये॥ वीड़ामालापेरवाअर गजाऊसेमो
ता। श्रीचंद्रावलीजी के कपोल लाडू श्रीठाकुरजी के कुच मां पन
मिश्री अधरामृत इत्यादि॥ पाछेवधाईमहात्म के जआरसाके
गाईये॥ महात्म के श्रुतिरूपा के भाव कें॥ वसुदेवदेव की संबंधी
कुमारिका के नंदरायजी के घर कें॥ श्रीस्वांमिनीजी के भाव के या
प्रकार जन्म अष्टमी रात्रमे सेपयय़ा वाकीर हे॥ महानिसा नववे
इपाहउठायकें हे रादे पंचामृतकी तैयारी करें॥ सगरे वुपर
हे॥ नवजन्मसमयके आदे आठश्लोक पदनहें॥ प्रथमसर्व
गुराणेपेतकालपरमसोम्मन॥ इत्यादि पष्टिके घंटा रकवार
वजाइदेरारवोलनें॥ यहश्लोकश्रुतिरूपा रूपपढतहें॥ पाछे
व्रजभयेोमहरिके पुत्रजवयहवातसुनी॥ यहवधाईगाईयेमिं
घासनआगेमंदिरवस्त्रकरिकोरीहरदी कोचोकपूरिका
परपरातधरि॥ तांमेचोकीधरिलालपीतांवरा विछायपंचा
मृतमेतुलसीडारिप्रभुनको हेडुवतकरिसंकल्पकरीये हा
थमेजललै॥ भगवतश्रीपुरुषोत्तमस्य॥ प्रादुर्भावोत्सवेकर्तुपं
चामृतस्नानकरिष्ये॥ १॥ यहपाटिजलछोड़िभावेसालिगरां
मतथांश्रीगिरराजजीको पधराय॥ पंचामृतस्नानकरयंयें
तिलककरि सालिगरांमजीकोपंचामृतमें तथां चररापर
महामंत्रसेतुलसी समर्पिन्हवाईये॥ ताको काररायहहें सा
लिगरामविष्णुरूपहें॥ विष्णुको पालनधर्म हें॥ ताते सालिग
रामजीकेमिसदेवा विष्णुरूपिराया विष्णु सर्वगुगुहाइाय
अविरासीत॥ असेपुररायपोतमजो विष्णुजनको सेवन
करि॥ यहनिश्चे श्रुतिरूपाकीयो॥ जोहमारोपालनयेईकरेंगे
याभावतेपंचामृतस्नानकरायहां तास्यादिवाजनवाजते॥ प्रथ
महधपाछेदही घृतवूरापाछेमधु॥ तापाछेएकसंपदृयसो

पाछेराकसेरवसीनतनलसों पाछेकेसरिचंदनसोहाथमेलेस्ना
नकराईये॥ पोछिकेप्रभुपासवेठाईयें॥ पाछेप्रभुनकोसालिगरां
मजीको लालदरचाईको वस्त्रउदायतिलकअक्षतदोऊठोरक
रिमालापहराय दोऊठोरवसंनाषिलाईयें॥ केसरिचोवागुलाल
अवीरदंडोतकरिभीड़सरकायटेरादेंपनाभिश्रीको भोगधरि
ये॥ तांमेकपूरामिश्चडारीयें॥ मिश्री स्वांमिनीजी कपूर श्रीचंद्राव
लीजीजल श्रीयमुनाजी मिरच कुमारिका या प्रकार प्रभुन केजन्म
होतही॥ व्रजभक्तनको अपने अधरामृत केरसको स्वाद वताायो
यालालचनेसदांयहां रहेगे॥ स्थिरविराजेगे पाभोतिमहाभोगमें
प्रभिअंगअंगको अनुभवकरावतहें॥ सोतास मयश्रीठाकुर
जीकेमुखकमल अत्यंतसोभादेतहें प्रफुलित होत हें वेरन
वारवांधतहे॥ सोभगवत्आगटत होतमात्र लक्ष्मी घरघरप्रति
वंदनवार वांधतहे॥ व्रजमेस्थिर हेकेरहीये॥ पाछेपनाभोगसरा
इ आचमनमुखकराय वीड़ाधरि॥ पाछेनईवंदनवारवांधिपाछें
मंदिरवस्त्रदेकेंमहाभोगसरे॥ काहूमंदिरमेधूपदीप उत्नसीर
संरवोदि कहेक हूं नहीं॥ सुगंधकेजी रेधूपराक पात्रमे करनों॥ उर
जलमातश्रीचंद्रावलीजीके हास्यरूपसाठेचामरव्रजकोहे॥ ताते
पूर्ववारी कुमारिकाईके भावते हे॥ ठाटेसंग श्रीचंद्रावलीजीकेभा
वतेहें॥ वरीउर्दकी मंगकीश्रीयमुनाजीकेभावते हें॥ पापरमेंग
लरूप॥ श्रीयमुनाजीके पुलिनकोमंडलरूपमिरचवड़ी तांमसी
तिलवड़ीराजसीत्तीनकूदामेचारचो चनाश्री स्वांमिनीजीवड़ी
जेसे श्रीयमुनाजीमिरचश्रीचंद्रावलीजी॥ अष्टिकुमारिकामी
ठोरपाक॥ निजभक्तनके भावसाठेचामरकी खीरकुमारिका
केभावते॥ सेवकीखीरश्रुतिरूपा मेवाकी खीरश्रीयमुनाजी
मानिकाकी खीरश्रीस्वांमिनीजी॥ रईदहीमानश्रीचंद्रावली

जीमीठेभात श्रीयमुनाजी॥ सिखरनभात श्रीयमुनाजी धाटोमा
नकुमारिका पीरोभात समग्रीव्रजकी स्वांमिनीजीवड़ीभातसह
गोपीजनकेभावते॥ रायताशाकविलसारूप्रग्रंथिकेवडानिजभ
क्तद्रवीभूत श्रीयमुनाजी॥ कांजी श्रीचंद्रावलीजीकेभावते॥ कपोल
खंडन॥ आहाकचरीनींबुतांमसोकोमीनकारा॥ श्रीवेसनकीतां
मेहीं गजीराकारे॥ प्रस्तावमेमुख्यहैं॥ सोठकीखुकनी॥ साकघास्योके
भावते॥ मीठाझोलकोसाक॥ध॥ घास्योकेभावते॥ मुजेना॥ध॥ लोरगमि
रचकेसाकघास्योकेभावते॥ पापकार॥१६॥ भरे॥ सोमेगल्ताकारम
से॥ सोडसगोपिकानामध्येहैं अष्टकन्यामवंती॥ मठादहीसि
खरणवासौदी॥ वडीमेआंवलाडारतहे॥ श्रीयमुनाजीकुमारि
कद्रवीभूतपाक आंवकोकरोदाकोगुलावकेफूलकोमाधुरी
केघास्योकेभावते॥ जभीराकोगविजोराकोछुहाराकोपेठापाक
येघास्योकेभावते॥ पनामिश्रीकोखांडकोंदोऊकेभावतेपनामि
श्रीकोपजीरीजसोदाजीकेभावते॥ चामर श्रीयमुनाजीधूरा
डारिछोंटदकोदापनहे॥ दसनषंडनकेभावते॥ घेवर श्रीयमु
नाजीकेकपोलकेसरीस्वेत श्रीचंद्रावलीजीसषीरीअठमांसे
केभावते॥ रसभरेहैं॥ पीरीफेनी श्रीस्वांमिनीजीस्वेतफेनी कुंमा
रिकाश्रुतिरूपा॥ बूंदीकेलाडू मोठाजीकेकुचकूटीबूंदीमोत्यी
केदंत॥ सकरपारानेत्रसेवके॥ लाडूश्रुतिरूपाकेकुचजलेवीश्रु
तिरूपाके अधररस श्रीस्वांमिनीजी श्रीयमुनाजीमेंहकुमारि
काश्रोतलोद्वधमोठाजीकोअधरामृत॥ सिखरनवडी श्रीयमुना
जी इदरसाकेऊपरखसखसकेदाना सोदंतनषक्षतकप्र
रनारीमोठाजीकोहृदय॥ लोणरुपांमखोलीचारवेदमलाईमो
ठाजीको अधरामृतमिश्रीकीखुकनी॥ श्रीयमुनाजीको अधर
खंडन॥ याप्रकारजितनेपकवांनवनि आवें॥ आलोमेवातको

मेवादसरागदिसलोनकेपकवांन श्रुतिरूपाकेभावते॥ सधानासोन
कालपहधरि श्लोकपद नों॥ निजास्यनबलास्येस्मित स्वड्भोज्यं
मदर्पिनं॥ मस्व श्रीगोकुलाधीशास्वाधिकारानिकारय॥ १॥ आच
मनविहारपाछे उपांन आचमनअचवनबीड़ीमोदाजीवीड़ी
श्रुतिरूपादांकिकेपतौवापरगुलावजललगायवांधतहैं॥ सो
ऊपरवस्त्रपहरावतहैं॥ सीकचेलीकोननीवीड़ाचर्विततांबु
लरस अधरामृतपान अधरहोय॥ सोभीतरटांकिकेरसरा
षेहैं॥ आरतीमोतीकीकवहूपालनांपरपधरायकेहोयासिं
घासनपरकहूंपोछेंहोय पाछेपालनापरविराजे॥ महाभोग
धरिपाछे॥ अथछठीपूजनकीविधि॥ प्रथमगोवरथांनिके
छठीलीपतहे॥ उहव्रजहेतामेतुसनाहीरसरूपहेतामेतो
रईपेठाकोरसछांनिकेलीपतहे॥ यहभावमभूपधारे
सगरोव्रजहस्योभयोहे॥ हरदीकोगांठीमेजोरपीलका
हरिकरितामेचामरभीजेपीसतहे॥ सोनासोअंगपनकहे
नहें॥ हरदीस्वांमिनीजीचामरकुमारिकामिल्योभावहे॥ श्र
वतेआईहे तातेछठीकेभीतरस्वेतपकाकरतहे॥ सोमा
त्रचररगकोकठलावनावतहें॥ श्रीजीप्रगटेहेतबरानीस्म्
स्कुक्ष्म आभूषणधरेहें॥ चोकीकंठश्रीचूंनरीकंकणनक
बेसरिबेदीकरिकिंकिणीनुपुरदेहीतातेछठीके आसपास
मंडलाकारकरतहें॥ सोनिजभक्तनिस्पसिद्धामंडलाकारहो
हीहें॥ पोतश्रीस्वांमिनीजीश्यांमश्रीयमुनाजीलालकुमारि
कास्वेतश्रीचंद्रावलीजी॥ हरीभूमिश्रीमहारानीजीकी
पुलिन॥ छठीकेदक्षरगदिसदाधिमथनीवनावतहैंचट
कोवाऋडुउनाफिरकीभोरावंगोचकई॥ सोमात्रचरगके
भावसोश्रीजीकोस्वरूपजसोदाजीमांषनदेतहें॥ रईदही

कोमांटपालनाकेवांमाहिसवेनुहस्तरावेत्र॥पातनांःप्रायेगोपीग्वाल
निन्यलीलाके भक्तवांमादिसश्रुतिरूपाकुमारिकाद्सरादिसमंड
जीनीनिकरनहे॥एकनिन्यसिद्धाश्रीस्वांमिनीजीश्रीयमुनाजीःश्री
दिदूसरोश्रुतिरूपाकुमारिकाव्रजकीगोपी॥तासोसमस्तव्रज
गोपीऊपरवेलिचास्योहिसालिरवनहे॥सोश्रीस्वांमिनीजीके
मेंडलाकारसकलरसकोघेरिरहीहें॥यातेयहरसव्रजमेंई
रहें॥याहीतेश्रीयमुनाजीहूनीभुनहे॥रसरूपपुष्टिप्रगिरहनही
छटीकेऊपरःप्रोढनीलिषनहें॥सोश्रीयमुनाजीकेमंडलऊ
परागिरराजछायाकरिरहेहें॥ऊपरकलसाहे सोसिखरहें
वेलिमेंखांचोहेसोकंदराहे॥नीचेचोखटवेलःपौरेंचास्योसो
रचनावनहे॥सोसगरोव्रजचोखटोहें॥सोताकेऊपरयंछीव
नावतहे॥वेलिवनस्पतीतापरयंछीवेठेहे॥ःपष्टदलकमल
भक्तनकोमंडलहे॥ताकेनीचेहाथीहें॥छटीकेश्रासपासहू
थोहे॥सोनिन्यलीलाबारेभक्तनिन्यलीलाकोस्थापनकीये
हे॥छटीकोश्रंगारवीचमेसिंदूरकाजरःनालपीरेरंगकाछटी
खड़ीलगावनहे॥पीरेमुख्यश्रीस्वांमिनीजीस्तेनश्रीचंद्राव
लीजीलालकुमारिकास्यांमश्रीयमुनाजी॥सिंदूरसकलव्र
जभक्तनकोसौभाग्यरूपहें॥यहश्रंगारसमस्तव्रजरूपप्रभु
प्रगटभयेहें॥सोसमस्तव्रजःनुरागसंयुक्तफूल्योहे॥फूल
केडूमिकावांधनहें॥सोभक्तनकोःनुभूषणकोडूमिकाहे॥
मात्रचरणश्रीनंदरायजीःप्रादिसमस्तव्रजभक्तफूलेहें
लालरेसमीवस्त्रधरेहे॥सोभक्तपहरेहें॥ःनुरागहृदय
तेप्रगटभयोहें॥वेरगुलालधरनहे॥वेरगुहाराःनुराग
सर्वकसकलभक्तनकोउलावनहें॥नरवारधरनहें॥सोनी
चेमुठीयाउपरनासोसस्त्रवंधगोपश्रीनंदरायजीकेहां

मुख्यहे॥गायनकेसंगजांनहेडरमयेमेसबकेयहांहोनहें॥नं
दालयकीरखवारीकरनहे॥सोउनगोपनकेमनमेवोहोनहे
नीजोएकपुत्रश्रीनंदरायजीकेयहांहोई॥सोपुत्रकोजन्म
सुननहीदोरिकेःप्राएहें॥शस्त्रसहितनथांदुष्टदोषनिवार
रणार्थखड़ेहें॥चनाकीदारचामरमिलीखीचरीकोछैंटेरोछ
टीःप्रागेकरीये॥सोतांमेश्रीस्वांमिनीजीःप्रोरकुमारिकाकोभा
वामिल्योहें॥सोतापरहरदीकीगांठिचंनकेफल॥धडारनहें
सोवेसवद्धहोनःप्रर्थशुद्धहें॥एककटोरीमेघीताइ॥केधर
नों॥छटीःप्रागेकहूंकोरोहरदीकोचोकाकहेंचंनकोचोकसो
हरदीमुख्यहें॥चंनश्रुतिरूपाकेभावते॥सोतापरदीवादीय
धरनहें॥पीटापरकुंमकुंमकेसाथियाकरतहें॥सोतापर
रसाड़ीपीरीश्रीनंदरायजीकेभावते॥सोतापरश्रीयसोदा
जीपुत्रकोलेश्रीनंदरायजीकेपासवेठीहें॥छटीपूजनकोपी
रीसाड़ीशुभहें॥प्रीतवढतहें॥ठारीनथालनोटमेतरकी तांमे
कुंमकुंमलगायजलभरिकेधरनहें॥सोतापरकटोरा१चां
मरकोलेतापरगुड़केटूंकधरनहें॥सोवेश्रुतिरूपाकुमारि
कासगरोःनुकरीकरनहें वेश्रुतिहेवेरिषिहे॥सर्वरीतिनि
कोजानहें॥दीवाघृतकोतांमेवातीध॥लगावनहें॥चास्योके
भावतेभावउदीपनभयोहे॥कहदोयघड़ीकेदीवाहेविरह
रूपीःप्रंधकारभयो॥खीचरीपरदीवारहे॥प्रोहिनस्वास्तिवा
चनसोजलःलेपुजावनहें॥संकल्पःप्राचमनकरिजलःप्र
क्षतहाथमेंलेविष्णुविष्णुरात्रावर्तमांनस्याभिनवजातस्य
कुमारस्यःप्रस्युदयार्थे॥षष्टिकादेव्यापूजनप्रतिष्ठाकरि
ष्ये॥यहकहिजलःप्रक्षतछोड़नों॥छटीपरकुंमकुंमःप्रक्षत
डारियें॥घृतकीकटोरीहाथमेलेछटीकेनीचेबीचमेतीनधा

राघवकोकीजे॥ तीनतेचारि हुजांयतोएकओरकीजें॥ एेहरूपभावव
हे वल्यो॥ छटीकेऊपरएककलोहे कीकीलगाडि सोतापरवस्त्रपी
रोधरीये॥ वांसकोखप्पचनीन्योकोनेमें फूलवांधिकीलमेखोसिये
पाछेहाथजोरिकेयहपटियें॥ गौरीपुत्रयथास्कंधसि शुराराणित
स्तेया॥ तथासमस्तं यवालोरक्षतान्यृषिकेनमः॥ ३॥ आछे भंडार
कविसागायेसपरिवार॥ वारिमेबास्योजुषपाति एकमेसगरेयेनम
यहपटिप्रार्थनाकरनी॥ पाछेछटीपासरईहे॥ ताकीपूजा॥ अक्षत
कुंमकुमरईपरडारि॥ यहपटिये॥ मथानत्वाहिगोलोकेदेवदेवन
त्रिमिति पूजितस्वविधानेनि स्वतरक्षांकुरुस्वमें॥ २॥ पाछेछटी
पासखड्गकोपूजा॥ खड्गपरकुंमकुंमअक्षतडारियहपटिये अ
सिविसेसनखड्गस्लाद्याधारोदुंसद॥ छत्रश्च वियश्चेवधर्मपा
लनमोस्तुते॥ १॥ पाछेछटीपासमुरलीहे ताकीपूजा॥ मुरलीपर
कुंमकुंमअक्षतडारियहपटिये॥ सर्वमंगलमांगल्यं गोविंदकर
रस्थितं॥ वंसवर्द्धनमेवंशालदांनंदनमोस्तुते॥ ९॥ याप्रकारछ
टीपूजिये॥ कहुंमहाभोगधारि छटीपूजिये॥ अथपालनाकीवि
धि॥ पाछेपलनामंदिरकोतिबारीकेवीचोवीचसिंहिकरीये
श्रुतिरूपाकुमारिकापवित्रातोखिलावतहें॥ पालनांगाव
तहे॥ प्रथमपपीहासोखिलावतहें बालकभयोहे सोप्रथ
मपपोहाकीनांई रोवतहें॥ श्रुतिरूपाकोभावजनावतहे॥ त्र
फिरकीफिरईयेतवपपीहानवजाईयें॥ फिरकीलालरूपेकीया
रीतथांकांसेकीथारीमोफिराईये॥ तबवालकरोवतनेरहें
फिरकीरूपसोभकेलालरंगसोवस्त्रपहरेहें॥ सोभक्तनत्सक
रनलागे॥ भक्तकेलीएप्रभूरोवनहतेसोभक्तआपे थारीरूप
हृदयलालरंग हृदयतेअनुराग वाहिरप्रगटयो हें॥ एकचट
कोवाव जावजहें॥ सोमात्रचररताकेहृदयमेन थांरोहराजी

केहृदयमें चोकीहारधुकधुकी हुलतहें॥ सोबाजतहे॥ अथवाश्रु
तिरूपाकुमारिकाप्रसन्नहोई॥ फुदडीमूमतहे॥ पाछेहथवेंगीफि
रावतहे॥ सोलालहे॥ तथांदसराभागदोऊनकेभावतेहें॥ वाघ
सिंहहिरनरोडसावरहाथीघोडाऊंटकुतान्स्यादिलीलागवि
रोधीपशुइहांतआपसकेंतोनथांलीलामें प्रतिबंधरूपगोप
कोईसवाहीइनकोनाछीनेइहांतआपसकों॥ जोलीलासंबंधीभ
कहें॥ सोईआवेइनकोसुषहोय॥ ओरकोऊभयानकहें॥ इसरीत
वकडीमेकोयलमेनापोपट॥ सारसचकवावतककबुतरकुही
इत्यादिकपक्षीपहपक्षीहारायभक्तआपनेआपनेरूपकोस
मस्पाकरतहें॥ तहांप्रभुजहांकुंजमेपधारे॥ तेहांपक्षीखेमिले
केभक्तनकोखुलायलेई॥ तथांप्रभुकोपक्षीखुलायकेसंकेतसि
क्षिकरतहें॥ तातेप्रभुकोओरभक्तनकोपक्षीअसंतप्रीयलग
तहें॥ ओरजबविहारहोयसतवडपहोयलीलाकोदर्शनकरे
गायभक्तरूपतववकडीमेरहें॥ सोतिनकीओरप्रभुदेखतहें
वछगवालदुहावनहारी॥ भक्तनकेभावकाहूकेहाथमेदोह
नीओरकाहूकीगोदमेवालककाहूकेसीसपरमटुकीका
हूकेहाथमेगाय॥ कोऊप्रभुकोपकरेहे॥ वृक्षनीचेयाप्रकारस्व
नेकलीलारूपतवकडीमेंप्रभुकोसंकेतकरावतहें॥ मच्छक
छवामगरचकई॥ चकवामुरगावगुलासारसहंसपनड
वीइत्यादिकयमुनाजीकेतीरजें लीलाजलविहारस्थलवि
हारकोप्रार्थनाकरतहें॥ वस्त्रापिछवाईनईवांधतहे॥ नंदरा
यजीकेधरलक्ष्मीनारायणराजीकोपूजाहें॥ सोबास्योनंदरा
नीवेदरीतिनसोंएवृतआपदिसोचलेआरहे॥ सोकहेतहें
पुत्रकोहूजन्मअष्टमीकोभयो॥ सोताकेलीएपुत्रकोजन्मग
ठिहूकरतहें॥ पाछेसप्तमीकेदिनसोरपूरी अष्टमासाकेदि

नालिवारेहे ॥ अष्टमीकोव्रतजो निरात्रकोसगरी सांमिग्रीकरि
जन्मगांठिकीज्योनारि तोमीकोसवेरेहीकरनीहे ॥ अष्टमीकोवद
रीतसोउत्सव ॥ अवधूतदोऊमांनतहें ॥ तातेरात्रकोरोय प्रकार
आयमिले ॥ जन्मगांठि कीसांमिग्रीउत्सवकी सांमिग्रीतातेमहा
भोगकहे ॥ सषड़ीमेमीठोभात खाटोभात खीरभात दहीभात
सिखरनभात षीरिचांमरकीमानिकाकी तीनकूंटाछाछकेवड़ा
असेईमुराकोसेवपजीरीपकवांनमिठाईमेवा नरमेवा अैसो
दूधमुरवा मर्यादागोपमहीना ॥ ४ ॥ चत्रमांसमेभोगनांहीकरत
अैरजयंतीव्रतहे ॥ तातेसवेरेलेतहें ॥ जोनोमीकोवड़े हेंकसाक
केसुजे लोनके चरपरे तांमसीभक्तनकेभावसो रसोजेसाक
राजसीकेभावसोमीठेरपाकसात्वकीकेभावसो सिखरनवड़ीसि
खरनभात श्रीयमुनाजीकेभावते ॥ पीरोभाततामेश्रीकोपनाश्री
स्वांमिनीजीकेभावते दहीभात श्रीचंद्रावलीजीकेभावतेमी
ठोभातकुमारिकाकेभावते ॥ खाटोभात गोपभार्या पतिपुत्रा
दिहूसमस्तगोपीनकेभावते ॥ खीरचांमरकी श्रीस्वांमिनीजी
सेवकी श्रीचंद्रावलीजी ॥ मनिकाकी कुमारिकाम्बेवाकी श्री
यमुनाजी इत्यादि महाभोगमेआरोगे ॥ पलनानंदजसोदा
वहूगोपीजनके भावतें ॥ भीतर गोपभावहें कोरीहरदीके
चोकपूरिये ॥ सोतापर पालनांविछाईये ॥ विनावस्त्रभूमिप
रकहूं हरदीकेचोकपर चनाकी दारिचांमरमिलीपीचरी
सेरदोइधरें ॥ तामेहरदीकीगांठिडारे ॥ तापर दुलीचाविछा
यपालनापधराईये ॥ पालनां भक्तरूपहें ॥ कुंमिका वांधनहें
सोभक्तनके आभूषणरूप पलनाकोहिरावनजोसिद्धिकरत
हे ॥ सोवृजभक्तनकीसहायकरोहेरानीजीहे ॥ लटकनल
टकतहें ॥ सोभक्तनके कुचरूप पलनाकेदोईउपायसेघो

रिपाहें ॥ सोवरराग रूपचारवोकेआठपासे चकरिपलनाकेचा
रिझूलतहें ॥ तामिज्याके ऊपरकीघोरियाहे ॥ सोभक्तहाथसोझु
यजोरेहें ॥ कलसाऊपरसोंसीसफूलकुंपिरहें ॥ सोप्रभूके सन्मु
खकरतहें ॥ तथांह्रदयके आभूषणहे ॥ लटकनझुझघंटिकातु
पहें ॥ पालनाकीसांकलाहें ॥ सोभक्तनकोरहें ॥ पलनापर दुलाई
उढ़ाईये ॥ सोभक्तनकेवस्त्रहे पलनांपर दुलाईउढ़ाईये ॥ सोभक्तन
केमैंकैहैं वस्त्रहें ॥ फूलकीमाला पालनेपर वांधनहें ॥ सोभक्तमाला
पहरेहे ॥ फूलनसोवेनीगुंथीहें ॥ फूलनकोवंदनवारहे डालरहें फू
लनकीनथांजरीकीसो लताकुंजहें ॥ गिरराजपरलनाफूलीहेर
श्रीयमुनाजीकीपुलिनमेलतनाफूलीहें ॥ तासैहीतेपलनाश्रीगोसां
ईजीरसरूपवर्णनकीयोहें ॥ प्रेकपर्यंकसयनेगिरराजकीकेदरा
मेंकुंजहें ॥ तहांविराजेहें ॥ ताते पालनाकेनीचेविछोनाहेकहूनांहे
हें ॥ अनेकस्वांमिनीकेमनोरथपूरणार्थकहूनांहीहें ॥ अनेकयाही
प्रकार जन्मसमयकेखिलोनाहूदोऊकेभावहे ॥ चटापटीपि
रकीखुसनीघघरा हथवंगी आदि पालनामेंसूवावांधत
हे ॥ तापरसोरहसोलीला संबंधीनिकुंजहें ॥ तातलीलाके
भावसोमात्रचरणनंदरायजीजानतहे ॥ गायवछरासहित
रोहनवारीवछराचोखतहें ॥ ग्वालकेहाथमेलकुटगोपके
हाथमेंसेलीकित्तनेवेठेहें ॥ कितनेठाढेहें ॥ वंदराहिररगारोड
सावरचीताहाथीवकरीमेढ़मेढासिंहासियारमोरमेना
घोपटवुलवुलवगुलालालदृनीयाचकोरपपीहावतके
सारसकलंगगोताबाजीकपोतचकईलटूकोरलमधुरीम
गरमेडकमुरगागेदवोगांनगोलीयसवेरेरहतहे ॥ नित्य
सिद्धाकेभावते पलनांमेप्रभूकोतिलकपधारतकेदोतरि
यलमुद्रापासरारखे ॥ पालनेमेमांषनमिश्रीकीकटोरीधरी

येपत्तासो टांकिये॥ पकवांन डारी खिलोना वांमांहि सध रीये॥ बीड़ा
कपूरकी बंटी दक्ष रमादि सधरीयें॥ पाछे पीतांबर सगरी उदाय
यथासक्ति भेंट करे कपरा आवे॥ सो उठाय लीजे॥ भेंट आवे सो
खिलोनाकी तवकड़ी मे बंटी मेधरीयें॥ नंदरायजी के सगे संबंधी
लेआगे डगा टोपी अर्थवस्त्र हाथपाव के चूड़ा के लीरे॥ एक
अपनो असे सो सौभाग श्रीमहाप्रभु श्रीगुसांईजी दीरे हे
याभावने सेवा करे॥ मेवधरायवे की भावनां नंदजसोदा
गोपचारि नंदरायजी के जन्म घरमे हें॥ ताते प्रथम ग्वालको
प्रसादलिवाईयें॥ पाछे नंदरायजी आरोगे॥ पाछे जसोदाजी
भीतर अंतःपुरमे आरोगे॥ पजीरी खंडदीपोरी केनी प्राछे बीर
हे दे डोन करि चारि पधराईये॥ प्रथम यसोदाजी को पधरा
य॥ प्रभु पास गादी पर विराजे॥ पाछे नंदरायजी को आरो
गायदे डोन करि पधराईये॥ चारि भक्त हे तिनको रोहीनी
जी अंतःपुर मे आरोगावत हें॥ जिनकी साड़ी स्वेत रहेत
हें॥ रंगीन लाल कोर हे॥ जिनको स्वेत पेनी खंडी पजीरी आ
रोगाईये॥ तिनकी साड़ी लाल हे॥ तिनको पीरी पेनी खंडी पजी
री आरोगाईयें॥ ग्वाल चारयो को पजीरी लाडू मांट खंडी आ
रोगावत हे॥ याभांति आरोगायवी डासे वकन कोरे के प्रथ
मजसोदाजी को पधराय पालनां की डोरी हाथमे देत हे
नंदरायजी को पधराय यह गाईयें॥ आज नंदरायके आं
नंद नंदको पकरिने चाईयें॥ ऊपर दही डारि जसोदाजी को
पाछे खंभ लगाई एक गादी पर बेठाईये॥ पाछे चारि गो
पी को पधराईये॥ चारयो के हाथमे थारी तांमे कुंमकुंम
अक्षत श्रीफल भेंट वस्त्र होई॥ सो प्रभु को भेंट करि वस्त्र
उदाय॥ पाछे गोपी कुंमकुंम के थापे देत हे॥ सुपारी हरदी

की गांठि द्रव थारी मे रहे॥ नंदरायजी को कुंमकुंम की वे ती क
रि पाछे नंदरायजी के मांथे तिलक करि अक्षत लगाय द्रव मां
थे पर धरत हें॥ खंभ मे या पाहे लीला रहस्य नंदालय के भी
तर द्रस्थापन कीये॥ तिलक करि नंदरायजी में आप नेअ
गुरग थावे॥ नवभक्तन के भाव सो नंदयसोदा आदि सबको
प्रभु अंगीकार कीये॥ अछिन प्रीति सो प्रभु वधो॥ द्रव हरे सो ह
री साड़ी वारे धरे॥ तामे कहे॥ तुम सदां याभांवें रस मे हरे भरे
रहो॥ पाछे चारि ग्वाल दूध दही की कावरि लेइन को पधरा
ईहें ऐ॥ नंदराय गोपी ग्वाल नाच के दूध डारत हें॥ सो दू
सी सहें॥ दूध न न्हावो पूत न फलो॥ पाछे दही डारत हें॥ सो
गोरस सदा घरमे भरे रहो॥ पाछे मांखन उछालत हे सुध
मो लपटात हे॥ सो हृदयामे ते प्रेमरस उछलित भयो॥ सो
सगरे व्रजमे तथां अंग अंगमे फेल्यो॥ पाछे बीच मे चारयो
भक्तन को करिने दालय की तें नी या सवानि तें करत हे हा
थजोरि मंडलाकार करि नाचत हें॥ पीरो दधि छांटत हे आगुनं
दरायके आनंद भयो॥ यह दंडकार सपवारे के भावते गावत हे
हमारे राय घर ढोटा जायो॥ यह गाय पाछे पालना गाईये॥ गो
पवधिके कीने नीया के मां ये वस्त्र आभूषण वधावत हे॥ महा
भोग की आरती करि पालना पधारे पाछें पालने पर होय क
हू सिंघासन पे होय॥ पाछे पालने मे पधारे॥ अथ पालना के भाव
दधि कादो रसरूप हृदय श्रीस्वांमिनीजी दधि श्रीचंद्रावलीजी
जी हरदी कुमगरिका मांखन श्रीयमुनाजी॥ केसर रंग अत
हे॥ सो सगरे गोपन के भाव ते॥ या प्रकार रस की कीच मचाई॥
इहजनावत हे॥ आज नंद व्रज मे रस के बाढ़ पनारे सदां वहे
प्रथम गोप विदा होय गाय दुहावन अर्थ॥ पाछे गोपीजन को

दंडोतकरिविदाकरीये॥ दहीमेतेलचंनोडारतहें॥ हरदीडारतहेह
रदीसुष्यदहीश्रुतिरूपातेल श्रीमहाराणीजी रुनोकुमारिकापीरो
अनुरागतेलस्नेहहे॥ राधिकादोकरिनंदरायजीहाथमेजलले
कछुरोकलेसंकल्पकरतहें॥ अस्याकुमारस्यमात्रापित्रोरि
शोष्वदीर्घायुस्पनाथं गोदानब्राह्मणायदास्येमहसमुत्स्रजेत
ब्राह्मणप्रोहितकोदीजे॥ तारीयलभेटवस्त्रआभूषणसबनो
मीकोसंध्याआरतीपाछेबाहिरनिकसियें॥ मंगलाआरतीपा
कहूंपालनापरसोतीकोहोय॥ कहुसिंघासनपरपधरायके
होय॥ तेसेईमंगलभोगपालनेपरआवें॥ मांषनमिश्रीश्री
स्वांमिनीजीकेकुच॥ स्वीभावमेकुचपरमफलरूपप्रभुपरस
करतहें॥ सोकोमलमांषनप्रभुकोलगतहें॥ मिश्रीकीबुक
नीअधरखंडनमलाई॥ श्रीस्वांमिनीजीकोअधरामृत॥ तामे
देवीभूत श्रीयमुनाजी॥ मिश्रीकोकरकराटहे॥ सोकपोलषं
डनहें॥ प्रभुकेकपोलनरवतथांदंततलगेहें॥ दहीहेसो श्रीचंद्रा
वलीजीकेकपोलउपदयहें॥ रसरूपआरोगतमेमसईको
होतहें॥ सोकपोलमर्दनखंडनमेंसीतकारहोतहें॥ ओटनो
दूधहे॥ सोश्रीस्वांमिनीजीकोअधरामृतहें॥ लालरंगबलका
रीअनुरागसाहितहे॥ तोजोमटीमोटाजीहें॥ तिनमेकपूरश्री
चंद्रावलीजीकेश्रीअंगकोसुगंधहें॥ ठोरठोरकोभावकुंनश्री
चंद्रावलीजी॥ वेसरराश्रीस्वांमिनीजी॥ दूराचासनीश्रीयमु
नाजी धृतस्नेहरूपकुमारिका॥ सोयाप्रकारचास्वोकेभावने
हें॥ कपोलरूपवूंदीकेलाडू श्रीस्वांमिनीजीकेकुच॥ श्रीचंद्राव
लीजीकेकपोल॥ मारी श्रीस्वांमिनीजी श्रीयमुनाजीदोउरा
त्रकेमहाभोगकेसांमिग्रीसिद्धिकीरहें॥ सोमंगलामेअरु
पांनहेभोगकीरेपाछेफेरप्रभुकांमआतुरविरहहोतहेंसो

झारीरूपश्रीस्वांमिनीजीदेवीभूत श्रीयमुनाजीफेरिअधरामृ
तपानकरायशीतलकरतहें॥ तातेप्रत्येकभोगमेप्रथमझारीभ
रतहे॥ जबश्रीस्वांमिनीजीसोरमणहोतहें॥ तबश्रीयमुनाजी
अंतरभूतहें॥ याप्रकारसगरेभक्तनकेअंतरभूतश्रीस्वांमि
नीजीहें॥ तातेश्रीजीरमणकरतहें॥ तांबूलश्रीस्वांमिनीजी
कोचर्वित श्रीचंद्रावलीजीकोअधरामृतपानमुषवस्त्रश्री
स्वांमिनीजीकोअंचलरूपआरतीकरतहें॥ सोअपनपेवार
तहें॥ तामेभेदसदारूपकीतथामरनेकीआरतीहोय॥ ऊपर
खंडमेश्रीस्वांमिनीजीनीचेकेखंडमेश्रीयमुनाजीचंद्रावलीजी
कुमारिकाघंटाआदिबाजेहें॥ सोभक्तनकेआभरणबाजेहेंतल
यकंकणसुद्रघंटिकानूपुरआदिबाजतहें॥ सोमंडलाकारभ
क्तनृत्यकरतहें॥ ऊपरकेखंडमेदीवादोई॥ नीचेकेखंडमेदीवा
४॥ तीसरेखंडमेदीवा॥ ८॥ चोथेखंडमेदीवा॥ १६॥ सोनेकीथारी
कीआरतीश्रीस्वांमिनीजीकोमंडल॥ रूपेकीथारीश्रीचंद्राव
लीजीकोमंडल॥ मोतीधरतहेरंगभरतहें॥ सोआभूषणअंग
राग॥ पंचमणिकपिरोजालालसुनियामूंगापुषराजहीरामो
तीनगजटितहारपोहोचीपदिकबोकीवातीहें॥ सोभक्तन
केहृदयमेभावअंकुरितविरहरूपीजोअग्निवरतहें॥ घृतस्ने
हहे रंगअनुरागहें॥ याप्रकारजनमदिनमेमोतीकीआरती
उतारतहे॥ चंदनकेदीवडाभक्तनकेश्रीचंद्रावलीजीकेहृदय
रूपहरदीश्रीस्वांमिनीजीकेअंगरूप॥ दीवडाकोकुंमकुंम
लगावतहें॥ सोअनुराग सोअनुरागरूपदीवडा॥ धरतहें
अष्टसषीरूपललिता॥१॥ विसाखा॥२॥ चंद्रभगा॥३॥ संध्याव
ली॥४॥ तुंगभद्रा॥५॥ श्यामा॥६॥ भामा॥७॥ जलसीमंडलाकार
होतितमेबातीदोयहोयश्रीजीभक्तनकेहृदयमेहोईतथाश्री

स्वांमिनीजीश्रीचंद्रावलीजी मुठीयाई दुरी पीडुरी वारवारनहे॥ सोवा
सल्यप्रीति केली ऐदस दोसवारनहें॥ मुठीया॥ध॥ वास्योजु पयति
केभावने॥ पाछे न्योछावरकरनहें॥ कछ्रोकक छवस्त्र॥ पाछेश्र
सीसगाईयेतिहारोधरस्वबसवस्त्रो यह गावत मंदिरमेनोनेक
सिये॥ स्नांन करि पालनापासको साजउठाईये॥ डारीभरिसिंघा
सनपासधरीये॥ प्रभुको गादीमुहुं सिघासन परपधराईये
मंगलभोगधरीये॥ जो मंगलाभोगपालनेमें आरोगेहोइ नोमं
गला आरतीकीजे॥ पलनाउठायसिंघासनपर श्रारसीदिखा
यश्रृंगारउहीरहें॥ श्रोरनंदालयमे प्रागटननोमीकोहें॥ सोना
नेदसमीको ऊरगही श्रृंगाररहें॥ श्राभुषरगकोनेमनहीवस्त्र
कोनेमहें॥ पाछेगोपीवल्लभभोगवैसववकेयहां श्रृंगारभोग॥ पा
छेराजभोगमे श्रीनंदरायजी केघर प्रागटजांनि उत्सवमाने
पे॥ पुरुषोतममलुनंदस्तहेजात इत्यादिवाक्यहें॥ नातेराजभो
गमे सेवश्राछिकेवडा मोठेरपाक तीन कुंदामनोहरकेलडुवा
सीरापाछेनोमीकेदिंनासिन्या भोगहुनो धरीये॥ श्रष्टमीकीरा
त्रको पाछवस्त्र भकुलकीमेट कादिये॥ नैसववसोंमिलिमहा
प्रसादलीजे॥ निस्पवलनांनहीहुलेतो पंद्रहदिनहसतेऊत्सव
नांईश्रवस्यहुले॥ दसमीको एहीश्रृंगार एकादसीको श्रोर
श्रृंगारबदले॥ पालनेलीलाकेकीर्तनगाईये॥ नोमीकोसेनसे
ध्यावेगीहोई॥ भोगसंध्याकोसमय एकहोई॥ दसमीकोमंग
लाश्रवेरीहोय॥ इतिश्रीजन्माष्टमीकीविधिसंपूर्णम्॥ श्र
थश्रीराधाष्टमीभादवेसुदीश्रष्टमीकोश्रष्टकलाचंद्रहे॥ श्र
ष्टसखीनके मुखिया नातेश्रष्टकोश्रुतिरूपाको नातेश्रष्टंगहोत
हे॥ सोईश्रष्टकोललितनाको॥ पंचमीको विसाखाजीको॥ सप्तमी
कोचंद्रभागाको॥ द्वादसीरविवारको श्रीयमुनाजीको॥ याप्रकार

सगरीसखी श्रीस्वांमिनीजीके श्रासपास प्रगटीहें॥ श्रष्टमी
कोश्रष्टंगप्रभुके श्रीस्वांमिनीजी प्रगटहविराजतहें॥ इनोइष्टसो
स्नांन॥ काहेतेइनको प्रागटन पुरुषोतमसोरमरागकररासिहीव
स्वरुपहें॥ येदोऊ श्रानंदमात्रकरपादमुखखोवरादि॥ श्रहर्निस
लीलामेमग्नहें॥ श्रीठाकुरजीके दोयवरसपहले प्रगटभई सो
प्रभुबिनानेत्र खोलेनही॥ नातेवृषभांनजी उत्सवमांनेनोही
तवजन्माष्टमीश्राई॥ तवश्रीठाकुरजीविराजे॥ तवश्रीनंदरा
यजीनेजनमकोउत्सवमांने॥ वृषभांनजीश्रादिसबनको
बुलाये॥ तववृषभांनजीश्रादिसगरेपरिकरलेकेनंदालय
मेश्राये॥ सोतवकीरत्निहुवेटोकोलेकेंश्राईतव श्रीस्वांमि
नीजीनेत्रखोलिकें प्रभुको दर्शनकीयो॥ सोतव वृषभांन
जीकीरत्निजीप्रसंनहोयकेंकहे॥ जोयहकन्याउत्तारेउनकोइ
मविवाहेगो॥ श्रवश्राजतेपंद्रहदिनपाछेकन्याकोजन्मउत्स
वश्रावेगो॥ सोतवहमउत्सवमानेगे॥ तुमपुत्रकोलेकेतिहा
रेपधाराबलिहे॥ तहांश्रीकीरत्निजीकोमोहररहें॥ सोतहांउत्स
वकरेंगे॥ तादिनतेश्रीनंदरायजीको कोनिश्रीवृषभांनजी
वो होतेकरतहें॥ वरसानेकेपासनंदरायजीकोगाम दोहें
याप्रकारनंदरायजीकेयहां जन्माष्टमीकोउत्सवकरिकें या
छेरावलिमेवृषभांनजीकोउसरागलेहें॥ तहांश्रीस्वांमिनीजी
प्रगटहुती॥ सोतहां सगरेउत्सवकोप्रकारसिद्धभयो॥ सो
नवराधाष्टमीको नंदरायजीकोश्रादिदेकें सगरेगोपीनकोउ
लारेहें॥ सोतव श्रीयसोदाजी श्रीठाकुरजीकेजन्मदिनको
गारधराये॥ श्रृंगारकरता श्रीचंद्रावलीजी श्रोरकुमारिका
हें॥ सोइनकोस्नांनहें॥ वेश्रुतिरूपाहे वेरिषिहें॥ नानेयहजोन
नहें॥ जोप्रभुकोप्रागटनसुधाकोहें॥ श्रीस्वांमिनीजीकोप्रागटन